भाजपा ने नीतीश को हाईजैक किया, राजग जीती तो नहीं बनेंगे मुख्यमंत्री : तेजस्वी
- 12

ब्रिटेन और जर्मनी को छूट तो भारत पर निशाना क्यों
- 12

अमेरिकी दावा, भारत ने रूस से तेल का आयात कम करना शुरू किया
- 13

रविंद्र जडेजा की मौजूदगी से मध्य प्रदेश के खिलाफ सौराष्ट्र मजबूत स्थिति में
- 14

आज का मौसम

28.0° अधिकतम तापमान

14.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.20

सूर्यास्त 05.32

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

हल्द्वानी

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी 03:48 उपरांत पंचमी विक्रम संवत 2082

शनिवार, 25 अक्टूबर 2025, वर्ष 5, अंक 244, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

बुकर फाउंडेशन ने चिल्ड्रन पुरस्कार की शुरूआत की

लंदन, एजेंसी

- बुकर फाउंडेशन ने नए चिल्ड्रन बुकर पुरस्कार की शुरूआत की

बुकर प्राइज फाउंडेशन ने शुक्रवार को काल्पनिक कहानियों के लिए एक नया 'चिल्ड्रन बुकर पुरस्कार' शुरू करने की घोषणा की जिसका चयन बाल और वयस्क निर्णायकों द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

यह प्रतिष्ठित वार्षिक पुरस्कार प्रदान करने वाले बुकर प्राइज फाउंडेशन ने कहा कि इस पुरस्कार के पहले संस्करण के नामांकन की शुरूआत 2026 में होगी और 2027 से यह प्रतिवर्ष प्रदान किया जाएगा। इसके तहत विजेता को 50,000 पाउंड (करीब 59 लाख रुपये) दिया जाएगा। फाउंडेशन ने कहा कि यह पुरस्कार आठ से 12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ समकालीन कथा साहित्य के क्षेत्र में ऐसी रचना को दिया जाएगा, जो अंग्रेजी में लिखी गई या अनुवादित हो तथा ब्रिटेन और/या आयरलैंड में प्रकाशित हुई हो। बुकर प्राइज फाउंडेशन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी गैबी वुड ने कहा कि बाल बुकर पुरस्कार 20 वर्षों में हमारा सबसे महत्वाकांक्षी प्रयास है और हमें उम्मीद है कि इसका प्रभाव आने वाले दशकों तक बना रहेगा।

धूल की बड़ी परत से ढकी हुई है हमारी आकाशगंगा

संवाददाता, नैनीताल

- एरीज के वैज्ञानिकों की खोज, उजागर किया आकाशगंगा की धूल का राज
- तारों का निर्माण और उनके आकार प्रकार में व्यवधान डालती है धूल

अमृत विचार : एरीज के वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड में हमारी अपनी आकाशगंगा मिल्की वे को समझने और तारों की स्थिति की वास्तविकता का पता लगाने महत्वपूर्ण खोज की है। यह खोज 6 हजार से अधिक तारा समूह के डाटा के जरिए की गई। आकाशगंगा को घेरे धूल की यह परत सूर्य से लगभग 50 प्रकाश वर्ष दूर है। यह धूल के कारण तारों का निर्माण और उनके आकार प्रकार में व्यवधान डालती है ।

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान एरीज के वैज्ञानिक डॉ. योगेश चंद्र जोशी के नेतृत्व में यह शोध किया गया है। नए अध्ययन से पता चलता है कि हमारी अपनी आकाशगंगा बाहरी धूल और गैस के विशाल बादलों से भरी हुई है, जो तारों से आने वाले प्रकाश को हम तक पहुंचने से अवरुद्ध या मंद कर देती है। भारी मात्रा में फैली धूल के कारण तारों की वास्तविकता का पता नहीं चल पाता है। जिस कारण भ्रमवश माना जाता है कि तारे विलुप्त हो रहे हैं, जबकि इस खोज से कुछ और ही सच्चाई समाने आई है। यह खोज आकाशगंगा में फैली धूल और नए तारों के निर्माण पर प्रकाश डालती है। एरीज के वैज्ञानिकों ने धूल से ढकी आकाशगंगा का चार्ट तैयार किया। जिसमे छह हजार से अधिक तारा समूहों का डाटा एकत्र किया। यह तारा समूह आकाशगंगा के पार तक फैली हुई हैं। धूल से आकाशगंगा में चल रही गतिविधियों का पता नहीं चल पाता है। मगर इस खोज से जानकारी मिली कि धूल के कारण तारों के निर्माण का पता नहीं चल पता है। एरीज के वैज्ञानिकों ने आकाशगंगा के धूल भरे पर्दे का मानचित्र बनाया है। इससे जानकारी भी मिली है कि धूल के कारण तारों का रंग लाल नजर आता है, जबकि तारों की उम्र का पता, उनके रंग से चलता है। यह खोज आकाशगंगा की संरचना के बारे में अधिक जानने में मदद कर सकती है। डॉ. योगेश चंद्र जोशी के नेतृत्व में हुआ अध्ययन बताता है कि यह धूल समान रूप से नहीं फैली है बल्कि यह एक पतली, लहरदार परत बनाती है जो आकाशगंगा के केंद्रीय तल के साथ पूरी तरह से संरेखित नहीं होती है और आकाशगंगा के नीचे की ओर स्थित है।

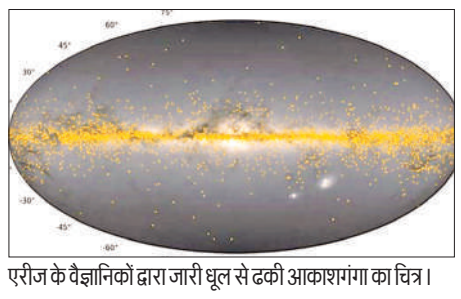

एरीज के वैज्ञानिकों द्वारा जारी धूल से ढकी आकाशगंगा का चित्र।

आकाशगंगा को समझने के लिए महत्वपूर्ण है यह खोज

नैनीताल। आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान एरीज के निदेशक डॉ. मनीष नाजा के अनुसार हमारी आकाशगंगा को समझने में यह खोज बेहद महत्वपूर्ण है। तारों के निर्माण, तारों के व्यवहार और अध्ययन में धूल से उत्पन्न होने वाले व्यवधानों का पता चलता है। यह शोध एरीज ही नहीं बल्कि समस्त खगोल वैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण है। हमारी आकाशगंगा के आगामी अध्ययन के लिए यह खोज बेहद मददगार साबित होगी। इस खोज के बाद उम्मीद की जा सकती है कि निकट भविष्य में आकाशगंगा के कई अन्य रहस्य उजागर होंगे। एरीज का हालिया यह अध्ययन एरीज के लिए बढ़ी उपलब्धि है।

ब्रीफ न्यूज

बैंकों को अधिग्रहण फंड देने के लिए मसौदा मानदंड जारी

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने शुक्रवार को बैंकों को भारतीय कंपनियों द्वारा अधिग्रहण के लिए फंड देने और आईपीओ तथा एफपीओ के माध्यम से शेयर खरीदने के लिए व्यक्तियों को दिए जाने वाले ऋण की राशि बढ़ाने की अनुमति देने के लिए मसौदा मानदंड जारी किए। रिजर्व बैंक ने एक अप्रैल, 2026 से तर्कसंगत मानदंडों को लागू करने का प्रस्ताव दिया है। यह एक ऐसा कदम है, जो कंपनियों के लिए अधिक वित्त पोषण के रास्ते खोलेगा। केंद्रीय बैंक ने इस पर 21 नवंबर, 2025 तक अंशधारकों से टिप्पणियां आमंत्रित की हैं।

दिल्ली: चार स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली। दिल्ली के चार स्कूलों को शुक्रवार सुबह बम की धमकी भरे ईमेल मिले, जिसके बाद अधिकारियों को पूरी जांच के लिए परिसरों को तुरंत खाली कराना पड़ा। दिल्ली अग्निशमन सेवा के एक अधिकारी ने बताया कि चार स्कूलों को मिले बम की धमकी वाले ईमेल जांच के बाद फर्जी निकले। विभाग के अनुसार, द्वारका के सेक्टर 16 स्थित सीआरपीएफ स्कूल में बम रखे होने की धमकी के संबंध में फोन पर पहली सूचना सुबह 8.15 बजे मिली। नांगलोई के संत दर्शन पब्लिक स्कूल से सुबह 8.20 बजे फोन पर इसी तरह की सूचना मिली।

आंध्र प्रदेश के कुरनूल में चलती बस में लगी आग, 20 लोग जिंदा जले

बाइक टकराकर बस के फ्यूल टैंक में फंसने से लगी आग, 40 यात्री थे सवार

- राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री ने हादसे में लोगों की मौत पर जताया दुख, अनुग्रह राशि की घोषणा की

कुरनूल (आंध्र प्रदेश), एजेंसी

हैदराबाद से बेंगलुरू जा रही एक निजी बस में शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के कुरनूल में एक दोपहिया वाहन से टक्कर के बाद आग लग गई, जिससे 20 लोगों की मौत हो गई। अधिकतर मृतकों के शव इतने जल चुके थे कि उनकी पहचान नहीं की जा सकती।

पुलिस ने बताया कि मृतकों में वह बाइक सवार भी शामिल है जिसकी मोटरसाइकिल ट्रक से टकराई थी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने घटना पर दुख व्यक्त किया। कुछ शव इतने जल चुके थे कि उनकी पहचान नहीं हो पा रही थी, जिसके कारण अधिकारियों को मृतकों के डीएनए नमूने एकत्र करने के लिए फोरेंसिक टीम को बुलाना पड़ा।

एक अधिकारी ने बताया कि कई यात्री इस दुर्घटना में बच नहीं पाए क्योंकि हादसा रात में हुआ और तब यात्री सो रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी ने पीड़ितों के लिए अनुग्रह राशि की घोषणा भी की। मोटरसाइकिल कुरनूल में चिन्नातेकुर के पास बस से टकरा कर उसके नीचे आ गई और उसकी ईंधन टंकी का ढक्कन खुल गया। कुरनूल रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक (डीआईजी) कोया प्रवीण ने बताया, अब तक जली हुई बस से शव निकाले जा चुके हैं। बाइक सवार का शव मुर्दाघर में है। उन्होंने कहा कि हताहतों और जीवित बचे लोगों की पूरी स्थिति, पूरी जांच और दुर्घटना में शामिल सभी लोगों की पहचान के बाद ही सामने आएगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस घटना में जनहानि पर दुख जताया। मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में दुर्घटना के कारण हुई जनहानि से अत्यंत दुःखी हूं। इस कठिन समय में मेरी संवेदनाएं प्रभावित लोगों और उनके परिवारों के साथ हैं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

हादसे के बाद जली बस।

शॉर्ट सर्किट से बस का दरवाजा हो गया था जाम

पुलिस ने बताया कि शॉर्ट सर्किट के कारण बस का दरवाजा जाम हो गया और देखते ही देखते बस पूरी तरह जल गई। पुलिस ने बताया कि अधिकतर जीवित बचे लोगों की उम्र 25 से 35 साल के बीच है। जिला कलेक्टर ए. सिरी ने बताया कि बस में 41 लोग सवार थे, जिनमें चालक भी शामिल था। बस में सवार 41 लोगों में से 21 का पता लगा लिया गया है। उन्होंने बताया कि दुर्घटना में बच गए लोगों की हालत स्थिर है और वे खतरे से बाहर हैं। उन्होंने बताया कि कई यात्री इस हादसे के बाद बस से बाहर नहीं निकल पाये क्योंकि यह हादसा रात में हुआ जब वे सो रहे थे। उन्होंने बताया कि बस का दरवाजा तुरंत नहीं खुला क्योंकि कुछ तार कट गए थे, जिससे हादसे की गंभीरता और बढ़ गई। सिरी ने बताया कि अधिकतर यात्री हैदराबाद के थे। अधिकारियों ने शुरू में कहा था कि बस पड़ोसी राज्य तेलंगाना के हैदराबाद जा रही थी।

रोजगार मेले में 51 हजार जॉब लेटर बांटे

युवाओं को सशक्त बनाना प्राथमिकता

नई दिल्ली, एजेंसी

- प्रधानमंत्री ने कहा- यह केवल सरकारी नौकरी नहीं, राष्ट्र सेवा में सक्रिय योगदान देने का मौका

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि भाजपा नीत राजग सरकार युवाओं को सशक्त बनाने के लिए काम कर रही है और सरकारी नौकरी पाने से वंचित उम्मीदवारों को निजी क्षेत्र के संभावित नियोक्ताओं से जोड़ने के लिए रास्ते बनाए गए हैं। 17वें रोजगार मेले में मोदी का एक संदेश चलाया गया जिसमें उन्होंने कहा कि देश की विदेश नीति भी युवाओं के हितों को ध्यान में रखकर बनाई जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि यह केवल सरकारी नौकरी नहीं है, बल्कि आपको राष्ट्र सेवा में सक्रिय योगदान देने का मौका बड़ा मौका है। देश भर में आयोजित रोजगार मेलों में 51,000 से अधिक उम्मीदवारों को सरकारी नौकरियों के नियुक्ति पत्र सौंपे गए। अपने संदेश में मोदी ने कहा कि देशभर में रोजगार मेलों के जरिए अब तक 11 लाख से अधिक नियुक्ति पत्र जारी किए जा चुके हैं। कहा कि सरकार ने एक नई पहल ''प्रतिभा सेतु पोर्टल'' शुरू की है जो उन अभ्यर्थियों को अवसर प्रदान करती है जो संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की परीक्षा के परिणाम की अंतिम सूची में तो पहुंच गए थे, लेकिन चयनित नहीं हुए। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, उनके प्रयास व्यर्थ नहीं जाएंगे, क्योंकि निजी और सार्वजनिक दोनों संस्थान अब पोर्टल के माध्यम से इन प्रतिभाशाली लोगों से जुड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवा प्रतिभाओं का ऐसा इष्टतम उपयोग दुनिया को भारत की क्षमता का प्रदर्शन कराएगा।

शर्मनाक... मदरसे में पढ़ाना है तो बेटी का 'वर्जिनिटी सर्टिफिकेट' लेकर आओ

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: मुरादाबाद के लोधीपुर स्थित जामिया असानुल बनात गर्ल्स मदरसा में पढ़ने वाली कक्षा 7 की छात्रा के 8वीं में आने के बाद आगे पढ़ाई जारी रखने के नाम पर मदरसा प्रबंधन द्वारा अभिभावक से उसका वर्जिनिटी सर्टिफिकेट मांगा गया। अभिभावक ने आपत्ति जताई तो उनके साथ अभद्रता की गई। जिसके बाद पीड़ित परिवार ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से शिकायत करते हुए कार्रवाई की मांग की। जानकारी पर अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के अधिकारी भी हरकत में आए और शनिवार को टीम मदरसे में जाएगी। पुलिस ने एडमिशन सेल के इंचार्ज शाहजहां को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया है।

चंडीगढ़ निवासी एक व्यक्ति ने बेटी का दाखिला 2024 में कक्षा 7 में पाकबड़ा थाना क्षेत्र के लोधीपुर राजपूत सीएनजी पंप के सामने जामिया असानुल बनात गर्ल्स मदरसे में कराया था। पिता ने एसएसपी सतपाल अंतिल को दिए शिकायती पत्र में बताया कि वह छुट्टियों के बाद जब दोबारा बेटी को कक्षा 8वीं की पढ़ाई के लिए मदरसा में छोड़ने आया तो एडमिशन सेल इंचार्ज शाहजहां व प्रधानाचार्या रहनुमा ने नाबालिग बेटी के दोबारा प्रवेश के नाम पर वर्जिनिटी सर्टिफिकेट मांग लिया। सर्टिफिकेट नहीं देने पर बेटी की टीसी ले जाने का दबाव बनाना। इस पर एसएसपी ने पाकबड़ा प्रभारी निरीक्षक को जांच कर आरोपियों के खिलाफ अभियोग पंजीकृत कर गिरफ्तारी के निर्देश दिए थे। शुक्रवार को पाकबड़ा पुलिस ने मदरसे पहुंच कर जांच की।

तानाशाही भरा फरमान

आरोपी एडमिशन सेल इंचार्ज शाहजहां को कोर्ट ले जाते पुलिसकर्मी।

- मुरादाबाद के मदरसे में नाबालिग छात्रा से सर्टिफिकेट मांगने का शर्मनाक मामला
- एसएसपी से शिकायत के बाद पाकबड़ा पुलिस ने केस दर्ज कर एक आरोपी को भेजा जेल

मदरसे प्रबंधन द्वारा नाबालिग छात्रा का वर्जिनिटी सर्टिफिकेट की मांग को लेकर छात्रा के पिता ने एसएसपी को शिकायती पत्र दिया था। पाकबड़ा पुलिस को दोषियों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए थे। पुलिस ने एडमिशन सेल के इंचार्ज शाहजहां को जेल भेज दिया है।
- कुमार रणविजय सिंह, एसपी सिटी मुरादाबाद

आईएसआईएस के दो आतंकवादी गिरफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी

- दिल्ली स्थित घर से विस्फोटक सामग्री और आईईडी टाइमर बरामद, राजधानी को दहलाने की थी साजिश

दिल्ली और मध्य प्रदेश से आईएसआईएस के दो संदिग्ध आतंकवादियों को गिरफ्तार कर पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी स्थित एक घर से प्लास्टिक बम, पेट्रोल बम, टाइमर उपकरण और आतंकी संगठन के झंडे समेत विस्फोटक बनाने की सामग्री जब्त की है। आतंकी राष्ट्रीय राजधानी को दहलाने की साजिश रच रहे थे।

आरोपियों की पहचान दिल्ली निवासी मोहम्मद अदनान खान उर्फ अबू मुहरिब (19) और मध्य प्रदेश के भोपाल निवासी अदनान खान उर्फ अबू मोहम्मद (20) के रूप में हुई है। दोनों ही दक्षिण दिल्ली के एक मॉल और एक सार्वजनिक पार्क सहित शहर के भीड़भाड़ वाले इलाके में आतंकवादी हमला करने की साजिश रच रहे थे। उसके घर से एक पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क, आईएसआईएस का एक झंडा-वफादारी की शपथ के दौरान इस्तेमाल किया गया कपड़ा- तथा आईईडी में इस्तेमाल होने वाली एक टाइमर घड़ी भी बरामद की गई है। दोनों त्योहारी सीजन के दौरान दिल्ली के भीड़भाड़ वाले इलाकों में आतंकी हमले करने की तैयारी में थे। दूसरे आरोपी अदनान खान को भोपाल एटीएस के सहयोग से गिरफ्तार किया गया। दोनों आईएसआईएस का प्रचार करने और संपादित जिहादी वीडियो प्रसारित करके युवाओं की भर्ती करने के लिए सोशल मीडिया पर एक नेटवर्क चला रहे थे।

'अबकी बार, मोदी सरकार' स्लोगन लिखने वाले एड गुरु पीयूष नहीं रहे

मुंबई, एजेंसी

- 70 की उम्र में ली अंतिम सांस, 2016 में पद्मश्री और 2024 में लंदन में लेजेंड अवॉर्ड से किए गए थे सम्मानित

भारतीय विज्ञापन जगत में देसी फ्लेवर डालने वाले एड गुरु पीयूष पांडे का शुक्रवार को मुंबई में निधन हो गया। देश के 2014 के संसदीय चुनावों का लोकप्रिय स्लोगन 'अबकी बार, मोदी सरकार' पीयूष पांडे ने ही लिखा था।

पांडे ने भारतीय हास्य बोध और देसी अंदाज से हिंदी को मुख्यधारा में लाकर विज्ञापन जगत को नए तेवर दिए और अंग्रेजी-प्रधान विज्ञापनों को पीछे धकेल दिया। उनके लोकप्रिय विज्ञापन लोगों की यादों का हिस्सा बन चुके हैं जिनमें कैडबरी के 'कुछ खास है' व 'असली स्वाद जिंदगी का', एशियन पेंट्स का 'हर खुशी में रंग लाए' विज्ञापन शामिल हैं। पांडे को 2016 में पद्मश्री और 2024 में 'लंदन इंटरनेशनल अवार्ड्स' के लेजेंड अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

सुखद अहसास मुख्य सचिव एसपी गोयल ने एयरपोर्ट की तस्वीरें और वीडियो साझा कर लिखा– इको फ्रेंडली और फ्यूचर ...रेडी है देश का अत्याधुनिक हवाई अड्डा

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट उड़ान को तैयार, भव्य तस्वीरें आईं सामने

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है। इसकी सामने आईं भव्य तस्वीरें मन को गदगद करने वाली हैं। आधुनिक यात्री व्यवस्थाओं का दर्शन कराने वाली वीडियो, तस्वीरें मुख्य सचिव एसपी गोयल ने साझा की हैं। मुख्य सचिव ने लिंक्डइन पर नोएडा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के निर्माण कार्य की मौजूदा स्थिति का वीडियो भी शेयर किया।

वीडियो में दिखाया गया है कि टर्मिनल बिल्डिंग का अधिकांश काम पूरा हो चुका है। फिनिशिंग का कार्य अंतिम चरण में है। इसमें यात्रियों के आगमन-प्रस्थान, चेक इन काउंटर्स, वाशरूम, एक्सीलेटर, सिक्योरिटी लाउंज समेत अन्य व्यवस्थाओं की अद्भुत तस्वीरें शामिल हैं। वीडियो में कार्यों को अंतिम रूप देते इंजीनियर्स भी नजर आ रहे हैं। इस एयरपोर्ट को बनाने में लगभग 29,650 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। यह 5,845 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला है। एयरपोर्ट इतना बड़ा है कि इसमें एक साथ 178 विमान खड़े हो सकते हैं। यहां छह रनवे बनाए जा रहे हैं, जो इसे एशिया का सबसे बड़ा एयरपोर्ट बनाता है। इस एयरपोर्ट के रनवे की लंबाई 2900 मीटर और चौड़ाई 60 मीटर के करीब है। एयरपोर्ट की डिजाइन पूरी तरह से इको-फ्रेंडली और फ्यूचर-रेडी है। जिसमें सौर ऊर्जा का उपयोग और वर्षा जल संचयन जैसी तकनीक शामिल हैं। माना जा रहा है कि एयरपोर्ट इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बढ़ते दबाव को कम करेगा। अब दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को लंबी दूरी तय करने की आवश्यकता नहीं होगी।

नोएडा, ग्रेटर नोएडा, फरीदाबाद, गाजियाबाद, आगरा, अलीगढ़ और मुरादाबाद जैसे शहरों के लोगों के लिए यह एयरपोर्ट हवाई सफर को बेहद आसान बना देगा। पहले चरण में जेवर एयरपोर्ट से 10 शहरों के लिए उड़ानें शुरू की जाएंगी। इसमें लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चंडीगढ़ और अहमदाबाद प्रमुख शहर होंगे। आने वाले वर्षों में यह नेटवर्क अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विस्तार पाएगा। सिंगापुर, दुबई, दोहा और लंदन जैसे शहरों के लिए उड़ानें शुरू करने की योजना पहले से है।

मोदी-योगी करेंगे शुभारंभ, फिर 45 दिन बाद शुरू होंगी उड़ानें

लखनऊ। पूर्व में 30 अक्टूबर को नोएडा एयरपोर्ट के शुभारंभ और इसके 45 दिन के अंदर उड़ानें शुरू करने की घोषणा की थी। इसके बाद अधिकारी भी अपनी तैयारी को पूरा करने में जुट गए थे। हालांकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उक्त तारीख को अभी कार्यक्रम सामने नहीं आया है। इस बीच सूत्रों के अनुसार 30 अक्टूबर तक एयरपोर्ट का निर्माण कार्य पूरा करने पर जोर तो है, लेकिन कार्य पूरा होने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी पहले एयरपोर्ट का निरीक्षण कर सकते हैं। इसके बाद ही शुभारंभ की नई संभावित तिथि नवंबर के दूसरे सप्ताह तक घोषित होने का अनुमान है।

अमृत विचार

हल्द्वानी , शनिवार,25 अक्टूबर 2025

स्टेट ब्रीफ

ट्रैक्टर-ट्रॉली सीज चालक भी पकड़ा

हरिद्वार : पुलिस ने तीर्थ नगरी में अवैध खनन में ट्रैक्टर ट्रॉली को सीज किया है। एसएसपी के निर्देशानुसार, कोतवाली रानीपुर के इंचार्ज शांति कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने शुक्रवार को सलेमपुर क्षेत्र में छापेमारी कर मिट्टी-रेत से भरी एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को पकड़ा। जब टीम ने उपखनिज के दस्तावेज मांगें तो चालक आनाकानी करने लगा और बाद में अवैध खनन की बात कबूल की। इस पर टीम ने एमवी एक्ट में वाहन को सीज कर दिया और चालक आजम का भी चालान काटा।

दो दरोगा सहित चार पुलिसकर्मियों पर केस

देहरादून : राजधानी पुलिस ने अगस्त माह में मसूरी डायवर्जन के समीप एक कार चालक की पिटाई के प्रकरण में पुलिस ने दो दरोगा समेत चार पुलिस कर्मियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। पुलिस के अनुसार, कुनाल चौधरी निवासी देहरादून ने अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (तृतीय) साहिस्ता बानो के यहां शिकायती पत्र सौंप कर कहा कि बीती 6 अगस्त को मसूरी डायवर्जन से गुजरते समय चार पुलिस कर्मियों ने शराब की जांच की आड़ में उसकी पिटाई की थी। यह भी आरोप लगाया कि वह शराब नहीं पिया हुआ था, फिर भी उसका चालान ड्रंक एंड ड्राइव में किया गया। एसपी सिटी प्रमोद कुमार ने बताया कि कोर्ट के आदेश पर चारों पुलिसकर्मियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है।

उत्तराखंड के 215 अभ्यर्थियों को सौंपे गए डाक विभाग में नियुक्ति के पत्र

पीएम नरेंद्र मोदी ने वर्चुअली विभिन्न राज्यों के 51,000 युवाओं को नियुक्ति पत्र जारी किए

मुख्य संवाददाता, देहरादून

नियुक्ति पत्र पाने के लिए पहुंचे युवाओं का समूह। ● अमृत विचार

अमृत विचार : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को वर्चुअली विभिन्न राज्यों के 51,000 नव नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र जारी किए।

इसी क्रम में देहरादून स्थित सर्वे ऑफ इंडिया के ऑडिटोरियम में रोजगार मेला लगाया गया। इसका शुभारंभ उत्तराखंड डाक परिमंडल की मुख्य पोस्टमास्टर जनरल शशि शालिनी कुजूर ने किया।

उन्होंने डाक विभाग में नियुक्त 59 डाक सहायको एवं डाक सेवकों,रेलवे के 14 , केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल के 81, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के 19, टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड के 41 एवं आईआईएम सिरमौर के 1 अभ्यर्थी समेत 215 नवनियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए।

मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल शशि शालिनी ने सभी नवनियुक्त युवाओं को उनकी नियुक्ति के लिए शुभकामनाएं दीं एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि युवा तत्परता एवं ईमानदारी से कर्तव्यों का निर्वहन करें एवं देश की प्रगति में अमूल्य योगदान दें। उन्होंने कहा कि रोजगार मेला रोजगार सृजन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में एक कदम है। रोजगार मेला आगे रोजगार सृजन में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता रहेगा और युवाओं को उनके सशक्तिकरण और राष्ट्रीय विकास में भागीदारी के लिए सार्थक अवसर प्रदान करेगा।

इस दौरान उत्तराखंड परिमंडल के निदेशक अनुसूया प्रसाद चमोली, सीडब्ल्यूओ अनिल कुमार सैनी, सहायक कमांडेंट अरविन्द खंडूरी, एसबीआई के मुख्य प्रबंधक राजीव कुमार सिंह, टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड की झरना दलाई आदि मौजूद रहे।

उत्तराखंड में 27 से होंगी सांसद खेल प्रतियोगिताएं

देहरादून, अमृत विचार : भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद नरेश बंसल ने कहा कि आगामी 27 अक्टूबर से राज्य में सांसद खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं।

शुक्रवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में हुई प्रेस वार्ता में जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से देश भर में 21 सितंबर से लेकर 25 दिसंबर तक सांसद खेल महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 29 अगस्त से इसका ऑनलाइन पंजीकरण प्रारंभ हो गया था। उत्तराखंड में भी 27 अक्टूबर से सांसद खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ होने जा रहा है।

देहरादून के राजीव गांधी नवोदय विद्यालय में उद्घाटन कार्यक्रम रखा गया है। इसमें मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत कर सकते हैं। राज्यसभा सांसद ने बताया कि इस आयोजन का मकसद जमीनी स्तर पर खेल प्रतिभाओं की पहचान करना और उन्हें निखारना है। इस तरह के आयोजन खेलों और फिटनेस के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देते हैं।

पटेल जयंती के कार्यक्रमों के लिए प्रभारी किए नियुक्त

मुख्य संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार : भाजपा ने लौह पुरुष भारत रत्न सरदार बल्लभभाई पटेल की 150 वीं जयंती पूर्ण जनसहभागिता के साथ मनाने का फैसला किया है। इसके तहत होने वाले कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए जिला प्रभारी और सह प्रभारियों की नियुक्ति की है।

मनवीर सिंह चौहान।

प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट के निर्देश पर स्व. पटेल जयंती कार्यक्रमों के लिए पदाधिकारियों को यह जिम्मेदारी दी गई है। 31 अक्टूबर से 6 नवंबर तक चलने वाले इस अभियान के तहत मंडल स्तर पर रन फॉर यूनिटी, श्रद्धांजलि सभा, पदयात्रा, शैक्षणिक प्रतियोगिता, स्वदेश अपनाओ आदि रचनात्मक कार्यक्रम किए जाएंगे। मंडल स्तर तक होने वाले ऐसे सभी कार्यक्रमों में अधिक से अधिक जन सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। कार्यक्रम के संदर्भ में प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट शनिवार को वर्चुअली बैठक में सभी प्रदेश पदाधिकारी, जिला प्रभारी, सह प्रभारी और मोर्चों के अध्यक्षों को आवश्यक निर्देश दिए जाएंगे।

इन्हें मिली कार्यक्रम के सफल आयोजन की जिम्मेदारी

देहरादून : चौहान ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष ने इन कार्यक्रमों के सफल संचालन के लिए सभी 19 सांगठनिक जिलों में जिला प्रभारी के साथ दो सह प्रभारी बनाए गए हैं। इसमें चमोली के जिला प्रभारी गजेंद्र सिंह रावत, रुद्रप्रयाग भूपेंद्र भंडारी, उत्तरकाशी पवन नौटियाल, टिहरी जयंत सेमवाल, टिहरी देहरादून ग्रामीण अमित डबराल, देहरादून महानगर संकेत नौटियाल, ऋषिकेश संपूर्ण रावत, हरिद्वार संदीप अग्रवाल, रुड़की भीम सिंह, पौड़ी प्रहलाद रावत, कोटद्वार हरि सिंह पुंडीर, पिथौरागढ़ वीरेंद्र शाह, बागेश्वर संजय परिहार, रानीखेत पूरन रजवार, अल्मोड़ा देवाशीष नेगी, चंपावत हिमेश कलखुड़िया, नैनीताल दया किशन पोखरिया, काशीपुर विनीत चौहान और ऊधमसिंह नगर में अमित पांडे को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

नवनियुक्त भाजपा प्रदेश महामंत्री कोश्यारी का लालकुआं में स्वागत

संवाददाता, लालकुआं

लालकुआं में रैली निकालते भाजपा नेता दीपेंद्र कोश्यारी। ● अमृत विचार

अमृत विचार: भारतीय जनता युवा मोर्चा के नवनियुक्त प्रदेश महामंत्री दीपेंद्र कोश्यारी के पहली बार लालकुआं आगमन पर लालकुआं से बिंदुखत्ता तक विशाल बाइक रैली निकाल कर भव्य स्वागत किया गया। जिसे युवा नेता दीपेंद्र कोश्यारी का शक्ति प्रदर्शन भी दिखा।

अपराह्न 2 बजे करीब काफिले के साथ हल्द्वानी से लालकुआं पहुंचे नवनियुक्त भाजयुमो प्रदेश महामंत्री दीपेंद्र कोश्यारी का भाजपा कार्यकर्ताओं ने फूलमालाओं से भव्य स्वागत किया। विशाल बाइक रैली निकाली गई, जिसमें सैकड़ो की संख्या में उपस्थित भाजयुमो कार्यकर्ता मौजूद रहे। बाइक रैली बिंदुखत्ता की ओर को रवाना हो गई।बिंदुखत्ता क्षेत्र में भ्रमण एवं जनसंपर्क करने के पश्चात पुराना खत्ता स्थित एक बैंकट हॉल में जनसभा में तब्दील हुई। जहां वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने पार्टी को मजबूत करने एवं 2027 में पुनः भाजपा की सरकार बनाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष कार्तिक हर्बोला, भाजपा मंडल अध्यक्ष अरुण जोशी, नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष पवन चौहान, वरिष्ठ भाजपा नेता हेमंत नरुला, भाजपा नेता राजकुमार सेतिया, विनोद श्रीवास्तव, संजय अरोड़ा, अरुण प्रकाश वाल्मीकि, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष जगदीश बिष्ट रहे।

तीन दिवसीय इंटर स्कूल बास्केटबाल मैच शुरू

संवाददाता, रामनगर

● ग्रीनफील्ड एकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजन

अमृत विचार: ग्रीनफील्ड एकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल पीरूमदारा में इंटर स्कूल बास्केटबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन मुख्य अतिथि रामनगर के विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्लॉक प्रमुख मंजू नेगी रहीं।

ग्रीन फील्ड एकेडमी के प्रबन्ध निदेशक शिशुपाल सिंह रावत ने बताया कि तीन दिन तक चलने वाले इस टूर्नामेंट में लगभग 50 टीमें प्रतिभाग कर रही हैं। जिनमें अंडर-14, अंडर-16 और अंडर-19 वर्ग के स्कूली खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतिभागी टीमें ऋषिकेश, हरियाणा, चंडीगढ़, देहरादून, अल्मोड़ा, पौड़ी सहित कई जिलों से पहुंचीं। मुख्य अतिथि दीवान सिंह बिष्ट ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए उन्हें खेल भावना के साथ प्रदर्शन करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि खेल जीवन में अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता विकसित करते हैं। सभी ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।

इस दौरान ग्रीनफील्ड एकेडमी के प्रबंध निदेशक शिशुपाल सिंह रावत, ब्लॉक प्रमुख मंजू नेगी, क्षेत्र पंचायत सदस्य श्याम सिंह बिष्ट, पूर्व प्रधान राहुल डंगवाल, आयोजित समिति के हर्षवर्धन पांडे, कमल आर्य, अनुज कुमार, अभिषेक मठपाल, अमित पांडे, सागर माहेश्वरी, श्रेया वर्मा, सागर जोशी, ऋषभ टम्टा व हेमंत नेगी मौजूद रहे।

उत्तराखंड के 39 नर्सिंग कॉलेजों में 1790 नई सीटों को मिली हरी झंडी

मुख्य संवाददाता, देहरादून

एम्पावर्ड समिति की बैठक लेते मुख्य सचिव आनंदबर्द्धन। ● अमृत विचार

अमृत विचार : मुख्य सचिव आनन्दबर्द्धन की अध्यक्षता में शुक्रवार को सचिवालय में नर्सिंग पाठ्यक्रम संचालन के लिए गठित एम्पावर्ड समिति की बैठक हुई। इसमें समिति की ओर से विभिन्न मेडिकल एवं नर्सिंग कॉलेजों को नर्सिंग कोर्स संचालन एवं सीट वृद्धि की संस्तुति दी गई।

मुख्य सचिव ने नर्सिंग कोर्स संचालन के लिए संस्थानों के आवेदनों को विभिन्न स्तरों में छंटनी करने के बजाय इसके लिए सिंगल विंडो सिस्टम तैयार किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि इससे संस्थानों को आवेदन करने से लेकर शासन से स्वीकृति की प्रक्रिया में सरलता आएगी। उन्होंने तत्काल इस दिशा में काम शुरू किए जाने के निर्देश दिए। संस्थानों की ओर से आवेदन किए जाने से लेकर विभिन्न चरणों की प्रक्रिया की एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) भी शीघ्र तैयार की जाए।

बैठक में समिति ने 39 कॉलेजों की 1790 नई नर्सिंग सीट्स को संस्तुति प्रदान की। सचिव स्वास्थ्य डॉ. आर राजेश कुमार ने बताया कि स्टेट नर्सिंग काउंसिल में वर्ष 2024 तक पंजीकृत नर्सों की कुल संख्या 21,541 है।

वर्तमान में सरकारी एवं प्राईवेट नर्सिंग कॉलेजों में 9806 लोगों का नर्सिंग प्रशिक्षण चल रहा है। इस दौरान सचिव दिलीप जावलकर आदि रहे।

पूर्व विधायक समेत कई कांग्रेसी हिरासत में लिये

संवाददाता, टनकपुर

● मुख्यमंत्री धामी के दौरे के बाद छोड़ा गया

अमृत विचार : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के टनकपुर-बनबसा दौरे में सुरक्षागत कारणों से पुलिस ने पूर्व विधायक सहित कांग्रेस के कई कार्यकर्ताओं को नजरबंद किया। बाद में उन्हें कोतवाली ले जाया गया। दौरा निपटने के बाद सभी को रिहा कर दिया गया।

पूर्व विधायक हेमेश खर्कवाल को कई कांग्रेस कार्यकर्ताओं को उनके आवास में नजरबंद कर दिया। बाद में सभी को कोतवाली ले जाया गया। सीएम का दौरा निपटने के बाद पूर्व विधायक सहित सभी कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया गया। पुलिस का कहना है कि ये कदम एहतियातन उठाया गया था। पूर्व विधायक और कई कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने 16 अक्टूबर को सीएम के टनकपुर दौरे के दौरान विरोध किया था। जिसके बाद पुलिस ने पीलीभीत चुंगी से हिरासत में ले लिया था। युवक कांग्रेस जिलाध्यक्ष विनोद बड़ेला, विधानसभा क्षेत्र चम्पावत के अध्यक्ष नीरज मिश्रा, हरीश जोशी, सौरभ गिरी, आसिफ, राहुल राज, श्याम कठायत, गौरव जोशी, रूपेश सक्सेना, पान सिंह रावत, विकास शर्मा, आदिल, मयूर, हरीश शर्मा, अमन रावत, अमित रावत, शानू को हिरासत में लिया गया था। इन सभी को बाद में छोड़ दिया गया।

कपड़ों की दुकान में आग से नुकसान

पिथौरागढ़: नगर के चिमस्यानौला निवासी कमला वर्मा के भवन के निचले तल में धारचूला, गर्गुवा हाल निवासी जीआईसी रोड हेमा धामी गारमेंट की दुकान है। बीते गुरुवार को वह दुकान बंद कर घर चली गईं। देर रात 11 बजे के करीब नगर के कारोबारी राजेंद्र पांडे अपनी दुकान बंद कर घर लौट रहे थे तो उन्होंने हेमा धामी की दुकान से आग की पलटें बाहर निकलतीं देखीं। उन्होंने घटना की सूचना हेमा और फायर सर्विस को दी। फायर सर्विस की टीम दो वाहनों के साथ मौके पर पहुंची। ढाई घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। हालांकि तब तक दुकान में रखे कपड़े और अन्य सामान पूरी तरह जलकर खाक हो चुका था। प्रभारी अग्निशमन अधिकारी नरेंद्र प्रसाद ने बताया कि इनवर्टर में शॉर्ट सर्किट होने से आग भड़क गई।

यमुना पंपिंग योजना से मसूरी में पेयजल आपूर्ति की जाए: जोशी

● जल संस्थान एवं जल निगम के अधिकारियों के साथ की बैठक

मुख्य संवाददाता, देहरादून

कैंप कार्यालय में बैठक करते कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने शुक्रवार को हाथीबड़कला स्थित कैंप कार्यालय में जल संस्थान एवं जल निगम के अधिकारियों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक की। उन्होंने मसूरी विधानसभा क्षेत्र में पेयजल की उपलब्धता एवं संबंधित विकास कार्यों की समीक्षा की।

कैबिनेट मंत्री जोशी ने विभागीय अधिकारियों से विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्राप्त की और कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। पेयजल से संबंधित सभी विकास कार्यों को जनहित को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूर्ण किया जाए। उन्होंने युमना पेयजल पंपिंग योजना से मसूरी शहर में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सरकार आमजन की मूलभूत सुविधाओं के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है और पेयजल जैसी आवश्यक सेवा में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सरोवर नगरी नैनीताल में पूरे दिन खिली रही चटख धूप

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: सरोवर नगरी में शुक्रवार को धूप पूरे दिन खिली रही। दिन के समय खासी गर्माहट महसूस हुई। नगर का अधिकतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

पिछले करीब एक पखवाड़े से मौसम नैनीताल पर मेहरबान है। रोजाना धूप से नगर का वातावरण खिला हुआ है, जो नैसर्गिक प्राकृतिक सुंदरता में निखार लाए हुए है। साफ आसमान के चलते दोपहर के समय धूप में बैठना मुश्किल हो रहा है, जबकि सुबह और शाम को हल्की ठंड महसूस हो रही है। नगर में हल्के बादल आते जाते रहे, जो मौसम पर असर नहीं डाल सके। मौसम की विभाग की माने तो अगले कुछ दिन मौसम सुहावना बना रहने वाला है। अलबत्ता पाला गिरने का क्रम जारी रहेगा। जिस कारण रात के तापमान में कमी आएगी। हल्के बादलों की आवाजाही बनी रहेगी। मौसम मुख्यरूप से शुष्क रहेगा। जीआईसी मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार अधिकतम तापमान 24 व न्यूनतम 14 डिग्री सेल्सियस रहा। आद्रता अधिकतम 78 व न्यूनतम 40 प्रतिशत रही।

चारधाम यात्रा में श्रद्धालुओं का आंकड़ा 50 लाख पार

देहरादून : मुख्यमंत्री के अपर सचिव बंशीधर तिवारी ने शुक्रवार को बताया कि इस वर्ष चार धाम यात्रा में लगभग 50 लाख श्रद्धालु दर्शनों के लिए पहुंचे। प्रेस वार्ता में तिवारी ने बताया कि वर्षा काल के दौरान विषम परिस्थितियों के बावजूद श्रद्धालुओं का यह आंकड़ा 50 लाख के आसपास पहुंचा है। चारधाम यात्रा मार्गों पर स्थित कई सड़कें क्षतिग्रस्त हो गईं।

यात्रासीजन में मौसम खराब होने से हेली सर्विस भी ढंग से संचालित नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि मानसून काल समाप्त होने के बाद क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत का काम तेजी से किया गया। प्रथम और द्वितीय चरण में रिकॉर्ड श्रद्धालु चारधाम यात्रा में पहुंचें। अब राज्य सरकार शीतकालीन यात्रा को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर रही है।

समीक्षा

जिलाधिकारी सविन बसंल ने जिला बाल संरक्षण इकाई की ओर से संचालित जिला बाल कल्याण और संरक्षण समिति एवं बाल कल्याण समिति की बैठक ली

बालगृहों में कार्यरत कार्मिकों का थानेवार रेंडमली सत्यापन किया जाए

मुख्य संवाददाता, देहरादून

कलेक्ट्रेट स्थित ऋषिपर्णा सभागार में बैठक लेते डीएम सविन बंसल। ● अमृत विचार

अमृत विचार : जिलाधिकारी सविन बसंल ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट स्थित ऋषिपर्णा सभागार में जिला बाल संरक्षण इकाई की ओर से संचालित जिला बाल कल्याण और संरक्षण समिति (डीसीडब्लूपीसी) एवं बाल कल्याण समिति (सीडब्लूसी), चाईल्ड हेल्प लाईन 1098 एवं बाल भिक्षावृत्ति निवारण प्रयास/इन्टेन्सिव केयर सेन्टर, साधु राम इंटर कॉलेज, राजा रोड देहरादून की तिमाही बैठक की।

डीएम ने ई डिस्ट्रिक्ट मैनेजर को बालगृहों में रह रहे बच्चों के आधार अपग्रेडेशन एवं नए आधार कार्ड बनाने को शड्यूल बनाने को कहा। बालगृहों तैनात कार्मिकों का थानेवार रेंडमली सत्यापन करने को कहा। अपर मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देशित किया कि सभी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में शड्यूल बनाकर 10 दिन के भीतर आरबीएसके टीमें भेजकर स्वास्थ्य जांच टीकाकरण कराया जाए।

उन्होंने कहा कि सीएम धामी की प्रेरणा से जिला प्रशासन का आधुनिक इंटेसिंव केयर सेन्टर एक स्वर्णिम पहल है जिसमें भिक्षावृत्ति से रेस्क्यू किए गए बच्चों को संगीत, योग, खेल से जोड़कर उनका ध्यान एक्टिविटि के माध्यम से शिक्षा की ओर मोड़ा जा रहा है। अब तक दो चरणों में कुल 82 बच्चों को रेस्क्यू कर स्कूलों में दाखिला दिलाया जा चुका है। पहले चरण में 51 बच्चों को विभिन्न स्कूलों तथा दूसरे चरण में 31 बच्चों को राजकीय प्राथमिक विद्यालय परेड ग्राउंड और साधूराम इंटर कॉलेज में दाखिला दिलाया गया। इन बच्चों के लिए डेढ़ करोड़ रुपए की लागत से साधूराम इंटर कॉलेज में आधुनिक इंटेसिव केयर सेंटर का निर्माण भी कराया जा रहा है। बैठक में पिछले 3 माह में माह जुलाई से सितंबर 2025 से देखभाल एवं संरक्षण के लिए 136 बाल संरक्षण समिति के सम्मुख प्रस्तुत किए गए तथा 138 बच्चे मुक्त किए गए। भिक्षावृत्ति में संलिप्त 70 तथा बालश्रम में संलिप्त 14 बच्चों को बाल कल्याण समिति के सम्मुख पेश किया। अन्य राज्यों के 6 बच्चों को उनके परिजनों के पास भेजा गया। प्रशासन ने भिक्षावृत्ति में संलिप्त बच्चों को रेस्क्यू करने के लिए अंतरविभागीय टीम और रेस्क्यू वाहन तैनात किए हैं। इस अभियान को सफल बनाने के लिए एक विशेष अंतरविभागीय टीम गठित की है जिसमें होमगार्ड, चाइल्ड हेल्पलाइन, शिक्षा विभाग, श्रम विभाग, पुलिस विभाग सहित कई गैर-सरकारी संस्थाएं शामिल की गई हैं। इसके साथ ही 3 रेस्क्यू वाहनों को भी अभियान में लगाया गया है, ताकि शहर में भिक्षावृत्ति में लिप्त बच्चों को तुरंत रेस्क्यू किया जा सके। नगर निगम देहरादून व ऋषिकेश को वार्ड एवं ग्राम स्तरीय बाल संरक्षण समितियों को सक्रिय करने एवं जिला पंचायती राज अधिकारी को निर्देशित किया कि मिशन वात्सल्य गाइड लाइन के अन्तर्गत ब्लॉक, ग्राम स्तरीय, नगर पंचायत, नगरपालिका, नगर निगम में वार्ड स्तरीय बाल संरक्षण समितियों के गठन एवं वित्तीय सहायता अनटाइड अनुदान का 5 प्रतिशत बच्चों के कल्याण और सुरक्षा पर व्यय करेंगे। मुख्य विकास अधिकारी अभिनव शाह, अपर जिलाधिकारी केके मिश्रा, मुख्य शिक्षा अधिकारी विनोद कुमार, जिला प्रोबेशन अधिकारी मीना बिष्ट रहे।

आईटीबीपी का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

पिथौरागढ़: भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल की 14वीं वाहिनी का स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। वाहिनीं के सेनानी राम भरत सिंह कुशवाहा ने कहा कि देश सेवा में सुरक्षा बल का बलिदान और समर्पण सदैव याद किया जाएगा। उन्होंने शहीद और सेवानिवृत कार्मिकों के परिजनों के साथ हमेशा बने रहने का भरोसा दिया।

इस दौरान वाहिनीं के सेनानी राम भरत सिंह कुशवाहा ने सेवानिवृत कर्मियों और शहीदों के योगदान को याद किया। स्थापना दिवस पर परेड का आयोजन किया गया। वाहिनीं के जवानों ने सेनानी को सलामी दी। इस मौके पर सहायक सेनानी आनंद दीक्षित, राजेंद्र प्रसाद, डॉ. हेमंत मित्तल, डॉ. केशव कुमार सहित अन्य अधिकारी और जवान शामिल रहे।

सिटी ब्रीफ

गढ़वाल में हुई हल्की बारिश, मैदान में धूप

हल्द्वानी : गढ़वाल के पर्वतीय क्षेत्रों चमोली, हर्षिल, ओली, तपोवन में मौसम में बदलाव हुआ और हल्की बारिश हुई। इससे वहां ठंड और भी बढ़ गई। बाकी जिलों में मौसम सामान्य बना रहा। मौसम विज्ञान केंद्र ने उच्च हिमालय क्षेत्रों में मौसम बिगड़ने का अनुमान जताया था। हालांकि अनुमान कमजोर साबित हुआ और गढ़वाल के कुछ क्षेत्रों में हल्की बारिश ही हुई। मैदानी जिलों में दिन के समय हल्की गर्मी पड़ रही है। बाकी समय मौसम सुहावना बना हुआ है। हल्द्वानी में अधिकतम तापमान 31 डिग्री और न्यूनतम तापमान 14 .1 डिग्री रहा। मुक्तेश्वर में पारा 19 .8 डिग्री दर्ज किया गया है।

मंजिशा का सैनिक स्कूल हिमाचल में चयन

हल्द्वानी : शहर के लामाचौड़ स्थित ऑर्डन प्रोग्रेसिव स्कूल की कक्षा 7वीं की छात्रा मंजिशा धौनी का चयन सैनिक स्कूल, सुजानपुर टीहरा (हिमाचल प्रदेश) के लिए हुआ है। मंजिशा ने सैनिक स्कूल में प्रवेश पाकर विद्यालय और अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। विद्यालय के प्राचार्य और समस्त शिक्षकों ने मंजिशा की इस उपलब्धि पर खुशी जताई है। उन्होंने बताया कि मंजिशा की यह सफलता उसकी लगन, मेहनत और अनुशासन का परिणाम है। सभी ने उन्हें उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

पांच हिंदूवादी नेताओं समेत तीस अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा

गुरुवार को हुए मांस विवाद मामले में दूसरे पक्ष के खिलाफ भी दर्ज की गई है रिपोर्ट

संवाददाता,रामनगर

अमृत विचार: विगत दिवस मांस के दो वाहन पकड़े जाने के बाद हुए बवाल के बाद पुलिस ने शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। इस प्रकरण में पुलिस ने भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष समेत पांच हिंदूवादी नेताओं और 20 से 30 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी है। वहीं दूसरे पक्ष के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज किया गया है।

बता दें कि बीते दिवस बैलपड़ाव एवं छोई क्षेत्र में एक पिकअप वाहन में कथित रूप से प्रतिबंधित मांस पकड़ा गया, इसके बाद हिंदूवादी संगठनों के कार्यकर्ताओं ने पुलिस चौकी पर हंगामा करते हुए पुलिस और वन विभाग के कुछ कर्मचारियों पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई और मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की थी। बताया जा रहा है कि इस दौरान मौके पर मौजूद कुछ लोगों ने पिकअप चालक के साथ मारपीट भी की।

बैलपड़ाव पुलिस चौकी पर नारेबाजी करते हिंदूवादी संगठनों से जुड़े लोग। ● फाइल फोटो

दोनों पक्षों ने दी तहरीर, पुलिस ने दर्ज किए अलग-अलग मुकदमे

कोतवाल सुशील कुमार ने बताया कि घटना के बाद दोनों पक्षों से पुलिस को तहरीर प्राप्त हुई, जिसके आधार पर पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ मुकदमे दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पहली तहरीर रामनगर के मोहल्ला गुलरघट्टी निवासी नूरजहां की ओर से दी गई, उन्होंने बताया कि उनका पति नासिर बरेली से रामनगर पिकअप वाहन में भैंस का मांस ला रहा था। आरोप है कि छोई क्षेत्र के पास मदन, राजू रावत, सागर मनराल, पंकज, करण और 20 से 30 अज्ञात लोगों ने उनके पति को गाड़ी से उतारकर लोहे की रॉड से मारपीट की, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। इस मामले में पुलिस ने उपरोक्त लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 109 और 190 के तहत मुकदमा दर्ज किया है। दूसरी ओर ग्राम छोई निवासी करन ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि उन्होंने अपने क्षेत्र में मांस से भरे पिकअप वाहन को रोकने की कोशिश की थी लेकिन चालक ने उन पर वाहन चढ़ाने का प्रयास किया और धारदार हथियार दिखाकर धमकाया। आरोप है कि वाहन पर दो अलग-अलग नंबर प्लेटें लगी हुई थीं। इस तहरीर के आधार पर पुलिस ने वाहन स्वामी और चालक के खिलाफ धोखाधड़ी और आपराधिक धमकी से संबंधित धाराओं में 420 का मामला दर्ज किया है। कोतवाल सुशील कुमार ने कहा दोनों पक्षों के मुकदमे दर्ज कर लिए गए हैं, मामले की जांच चल रही है। दोषियों को किसी भी स्थिति में बख्शा नहीं जाएगा।

पति के हमले में घायल हुई पत्नी की मौत, आरोपी हुआ गिरफ्तार

- बीते गुरुवार को पत्नी के सिर में कर दिया था ईंट से वार
- रेप केस में सजा काटकर जेल से बाहर आया है आरोपी

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: बीते गुरुवार को पति के सिर में ईंट मार देने से घायल पत्नी ने उपचार दे दौरान दम तोड़ दिया। इधर वारदात के बाद फरार हुए पति को पुलिस ने शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। मामले में मृतका की बेटी ने अपने पिता के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

इंद्रानगर, बड़ी रोड निवासी रुखसार ने पुलिस को तहरीर सौंपी। तहरीर के अनुसार उसकी मां शाहीन (52) वर्ष उसके पिता इंतजार हुसैन (58) के साथ पानी की टंकी के सामने, मलिक का बगीचा में रहती थी। पिता इंतजार हुसैन पिछले साल ही रेप केस में कई सालों की सजा काटकर घर आए हैं। वह आए दिन मां शाहीन के साथ झगड़ा करते थे। गुरुवार को शाहीन ने बेटी रुखसार को फोन करके कहा कि उसकी तबीयत खराब है और वह नातिन मंतशा को उसके पास भेज दे।

पुलिस की गिरफ्त में आरोपी इंतजार हुसैन। ● अमृत विचार

मंतशा नानी के पास पहुंची और दिन के करीब 12 बजे उसने अपनी मां रुखसार को फोन किया और बताया कि नाना और नानी में झगड़ा हो गया है और नाना ने नानी के सिर पर ईंट मार दी है और घर से चले गए हैं। आनन-फानन में रुखसार अपने पिता के घर पहुंची। जहां देखा कि उसकी मां खून से लथपथ पड़ी है। सिर से काफी खून बह रहा था। रुखसार ने अपनी मां को उपचार के लिए डॉ. सुशीला तिवारी राजकीय अस्पताल में भर्ती कराया। वहां जांच में पता चला कि शाहीन के सिर में गंभीर चोटें आई हैं। उपचार के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है जहां उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने रुखसार की तहरीर के आधार पर आरोपी पिता के खिलाफ बीएनएस की धारा 103(1)मुकदमा दर्ज कर लिया।

इधर पुलिस ने वारदात के बाद फरार हुए आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया।

आज पर्यटकों के लिए डायवर्जन प्लान जारी

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: आज (शनिवार) और कल (रविवार) को वीकेंड के दौरान यात्रा रूट पर भारी वाहनों और पर्यटकों के दबाव को देखते हुए नैनीताल पुलिस ने डायवर्जन प्लान जारी किया है। इस डायवर्जन से पर्यटकों की सुविधा और पर्वतीय क्षेत्रों में यातायात सुचारू रखने के लिए जारी किया गया है।

डायवर्जन के अनुसार नैनीताल और ज्योलीकोट से कैंचीधाम आने वाले पर्यटकों के वाहनों को भवाली सेनिटोरियम में पार्क किया जाएगा। इसके बाद पर्यटकों को शटल सेवा के माध्यम से सीधे कैंचीधाम पहुंचाया जाएगा। इसी तरह, भीमताल से आने वाले पर्यटक अपने वाहनों को विकास भवन में पार्क करेंगे और शटल सेवा का लाभ उठा सकेंगे। हल्द्वानी से पर्वतीय क्षेत्रों की ओर जाने वाले भारी वाहन भीमताल रोड से खुटानी होते हुए मुक्तेश्वर मार्ग से अपने गंतव्य तक जाएंगे।

आवश्यक सेवा जैसे सब्जी, फल, ईंधन, गैस और दूध वाले वाहनों का आवागमन पूरी तरह सुचारू रहेगा। इसके अलावा, अल्मोड़ा, रानीखेत और बागेश्वर से हल्द्वानी की ओर आने वाले भारी वाहन क्वारब से रामगढ़ और मुक्तेश्वर होते हुए भीमताल मार्ग से अपने गंतव्य तक पहुंचेंगे। प्रशासन ने पर्यटकों और वाहन चालकों से यातायात नियमों का पालन करने और समय पर शटल सेवा का उपयोग करने की अपील की है।

महिला बंदी रक्षक नियुक्त करें और बच्चों के लिए खोले आंगनबाड़ी केंद्र

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : शुक्रवार को जिला जज हरीश गोयल, डीएम ललित मोहन रयाल और एसएसपी प्रह्लाद नारायण मीणा ने हल्द्वानी उप कारागार का निरीक्षण किया।

उन्होंने ने जेल अधीक्षक प्रमोद पांडेय से बातचीत की और जेल प्रशासन की ओर से दी जा रही व्यवस्थाओं का जायजा लिया। डीएम रयाल ने कहा कि यह नियमित निरीक्षण है जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बंदियों को जेल मैनुअल के अनुरूप सभी सुविधाएं मिलनी चाहिए, यदि नहीं मिल रही हैं तो उन्हें मुहैया कराई जाए। उन्होंने कहा कि सभी बंदियों को निशुल्क चिकित्सा सुविधा और विधिक सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए। डीएम ने जेल में चल रहे स्किल डेवलपमेंट कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि जरूरत पड़ने पर नए-नए प्रयोग भी किए जाएंगे। महिला बंदियों की सुरक्षा के लिए डीएम ने महिला बंदी रक्षकों की तैनाती के निर्देश दिए। साथ ही जेल में मौजूद छोटे बच्चों के लिए आंगनबाड़ी सुविधा सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए गए। इस दौरान जेल परिसर की स्वच्छता, भोजन व्यवस्था और स्वास्थ्य सेवाओं की भी समीक्षा की गई। अधिकारियों ने बंदियों के पुनर्वास और सुधार की दिशा में काम करने के निर्देश दिए।

हल्द्वानी उप कारागार का निरीक्षण करते जिला जज व जिलाधिकारी। ● अमृत विचार

निर्माणाधीन भवन में चोरों ने लगाई सेंध

हल्द्वानी, अमृत विचार: नवोदय विद्यालय पिथौरागढ़ के उप प्राचार्य अमित उप्रेती के निर्माणाधीन भवन में चोरों ने सेंध लगा दी। चोर अपने साथ पानी की मीटर, फिटिंग किए गए तार आदि सामान लेकर फरार हो गए हैं।

पुलिस के अनुसार नवोदय विद्यालय के उप प्रचार्य अमित उप्रेती का आरटीओ चौकी क्षेत्र में सरस्वती नारायण कॉलौनी में मकान बन रहा है। बीती पांच अक्टूबर को वह अपने मकान का निरीक्षण करने गए तो पाया कि ग्राउंड फ्लोर पर दरवाजे का ताला टूटा था और उसके ऊपर वाले फ्लोर में चोरों ने सेंध मारी है। चोर अपने साथ फिटिंग की हुई तारें निकाल लेकर ले गए। साथ ही कमरे के अंदर से पानी की मोटर और नल फिटिंग का सामान गायब था। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच की।

कार ने साइकिल सवार को मारी टक्कर, मुकदमा दर्ज

संवाददाता, हल्द्वानी

- घटना के बाद आरोपी कार चालक वाहन लेकर फरार
- घायल का अस्पताल में चल रहा है उपचार

अमृत विचार: एक साइकिल सवार को कार ने पीछे से टक्कर मार दी। घटना में साइकिल सवार बुरी तरह से घायल हो गए। उनका उपचार अस्पताल में चल रहा है।

डहरिया कॉलोनी निवासी मोहन सिंह ने पुलिस को बताया कि उसके फूफा हीरा सिंह बिष्ट निवासी निकट महर्षि स्कूल निलियम कालोनी बीती 11 अक्टूबर को धानमिल डहरिया से अपने घर की ओर साइकिल से जा रहे थे। शाम करीब छह बजे धानमिल के पास जी मॉल के आगे एक कार ने उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर से साइकिल समेत वह नीचे गिर गए। उन्होंने देखा कि एक नीले रंग की कार से उनकी टक्कर लगी है। बाद में कार चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने उन्हें उपचार के लिए डॉ. सुशीला तिवारी राजकीय अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टरों ने बताया कि उनके कॉलर बोन और कूल्हे की हड्डी टूट गई है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी तो शहर के एक निजी अस्पताल में उनका ऑपरेशन हुआ। आरोप है कि वाहन चालक से फोन पर बात की तो वह झूठ बोल रहा है और कहा कि वह उस दिन वह देवलचौड़ से आगे गया ही नहीं। पुलिस ने आरोपी कार चालक के ऊपर मुकदमा दर्ज कर लिया।

दीपावली व वीकेंड के बाद कैंची में उमड़े श्रद्धालु, जाम से दिक्कत

संवाददाता, भवाली

अमृत विचार: दीपावली व वीकेंड के बाद कैंची धाम में जून माह के बाद एक फिर से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा है। शुक्रवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ बाबा नीब करौरी के दर्शन को उमड़ी। जिससे कि क्षेत्र में फिर से जाम की समस्या विकराल हो गई। भवाली से अल्मोड़ा मार्ग पर कई किलोमीटर लम्बा जाम लग गया। जिससे कि वाहन रेंगते रहे।

वहीं भवाली बाजार व भीमताल रोड पर भी जाम की स्थिती बनी रही। हालाकि अधिकतर वाहनों को पुलिस ने बाईपास से भेजा। एक बार फिर से अचानक भीड़ बढ़ने से प्रशासन व पुलिस की व्यवस्था फेल रही। वहीं टैक्सी यूनियन के उपाध्यक्ष संजय लोहनी ने बताया कि दो दिन शटल सेवा चलाने की योजना थी पर नही चलाई गई। जिससे कि जाम की स्थिती बनी रही। पर्यटकों व श्रद्धालुओं की संख्या देख पर्यटन कारोबारियो की बांछें खिलीं रहीं। अधिकांश होटल व होम स्टे पैक रहे।

कैंची धाम में भीड़ बढ़ने से जाम में फंसे वाहन। ● अमृत विचार

न्यूरो संबंधी बीमारियों का दूरबीन विधि उपचार संभव

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: न्यूरोकॉन 2025 में डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों को दूरबीन विधि (एंडोस्कोपी) से मस्तिष्क और रीढ़ की बीमारियों के उपचार की तकनीक सिखाई गई। एनाटॉमी विभाग और लेक्चर थिएटर में विशेषज्ञ डॉक्टरों ने अलग-अलग ऑपरेशन टेबल पर शवों पर ऑपरेशन की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया। छात्रों और डॉक्टरों ने इन लाइव ऑपरेशनों को स्क्रीन पर देखा और उनसे बारीकियों को समझा।

संजय गांधी पीजीआई लखनऊ के न्यूरोसर्जरी विभाग के एचओडी डॉ. अवधेश जायसवाल ने आंख के रास्ते मस्तिष्क का ऑपरेशन किया। वहीं किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ के प्रोफेसर डॉ. अवधेश यादव ने नाक के रास्ते मस्तिष्क की सर्जरी का प्रदर्शन किया। किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज के ही प्रोफेसर डॉ. सामिल जायसवाल ने रीढ़ की हड्डी की एंडोवैस्कुलर सर्जरी की प्रक्रिया दिखाई। इसके अलावा, प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन डॉ. पी.एस. भंडारी ने हाथों की नसों की सर्जरी का लाइव प्रदर्शन किया। विशेषज्ञों ने ऑपरेशन प्रक्रिया के दौरान आने वाली चुनौतियों और सावधानियों के बारे में बताया। विशेषज्ञों ने उपस्थित डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों के सवालों के उत्तर दिए।

ट्रंचिंग ग्राउंड में लगी दूसरी प्रोसेसिंग मशीन, नगर आयुक्त ने लिया जायजा

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : नगर निगम की ओर से शहर को स्वच्छ और प्रदूषणमुक्त बनाने की दिशा में एक और अहम कदम उठाया गया है। मुख्य नगर आयुक्त परितोष वर्मा ने शुक्रवार को गौलापार स्थित ट्रंचिंग ग्राउंड का निरीक्षण किया। इस दौरान नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जितेश भी मौजूद रहे।

निरीक्षण के दौरान ट्रंचिंग ग्राउंड में अपशिष्ट निस्तारण के लिए दूसरी प्रोसेसिंग मशीन को स्थापित कर चालू किया गया। दूसरी मशीन का संचालन शुरू होने से अब पुराने एकत्रित कचरे के निस्तारण की प्रक्रिया दुगनी तेजी से हो सकेगी।

ट्रंचिंग ग्राउंड का निरीक्षण करते नगर आयुक्त परितोष वर्मा। ● अमृत विचार

मुख्य नगर आयुक्त परितोष वर्मा ने बताया कि शहर में प्रतिदिन बड़ी मात्रा में अपशिष्ट एकत्र होता है। दूसरी प्रोसेसिंग मशीन शुरू होने से अपशिष्ट निस्तारण की क्षमता बढ़ने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता मिशन को भी बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि ट्रंचिंग ग्राउंड पर आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर कचरा निस्तारण प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है।

कार्रवाई

48 घंटे के अंदर पुलिस को मिली सफलता, दोनों ही आरोपियों के खिलाफ पहले भी दर्ज हुए हैं कई मुकदमे

पुलिस ने पांच दोपहिया वाहनों के साथ दो आरोपियों को दबोचा

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: पुलिस ने शहर में दोपहिया वाहनों की हो रही चोरी पर बड़ी कार्रवाई की है। दो आरोपियों को चोरी किए गए दोपहिया वाहनों के साथ पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार दोनों ही आरोपी बागजाला, गौलापार के रहने वाले हैं और दोनों ही पेशेवर अपराधी हैं।

एसपी प्रकाश चंद्र ने बहुउद्देश्यीय भवन में मामले का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि बीती 22 अक्टूबर को नवाड़खेड़ा रामलाल कॉलोनी काठगोदाम निवासी विकास कुमार मंडल ने काठगोदाम पुलिस को बताया कि उसकी मोटर साइकिल 21 अक्टूबर को चोरी हो गई है। इसके अलावा दो अन्य ने भी काठगोदाम थाने में मोटर साइकिल चोरी होने की सूचना दी। पुलिस समझ गई शातिर चोरों की नजर दोपहिया वाहनों पर है। चोरी की घटनाओं को देखते हुए पुलिस तुरंत ही सक्रिय हो गई। काठगोदाम थानाध्यक्ष विमल मिश्रा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मामले की जांच शुरू की। सीसीटीवी फुटेज खंगाले और मुखबिर तंत्र को सक्रिय किया। पुलिस को 48 घंटे के अंदर ही सफलता मिल गई। पुलिस ने दो आरोपियों को गौलापुल के पास से लाल व काली रंग की मोटर साइकिल हीरो होंडा सीडी डीलक्स के साथ गिरफ्तार किया। चेसिस नंबर का मिलान किया तो यह वही मोटर साइकिल निकली, जिसकी चोरी की सूचना पुलिस में दी गई थी। पूछताछ में पता चला कि दोनों आरोपी गौलापार बागजाला के रहने वाले हैं। एक आरोपी का नाम सौरभ आर्या (26) और दूसरे का नाम संजय बिष्ट (24) है। दोनों ने बताया कि यह मोटरसाइकिल चोरी की है जिसे वह बेचने के लिए जा रहे थे। अभियुक्तों से थाना काठगोदाम पर पंजीकृत अन्य मुकदमों से संबंधित चोरी की अन्य मोटर साईकिलों के बारे में पूछताछ की गयी तो अभियुक्त सौरभ आर्या की निशानदेही पर दो अन्य चोरी की मोटरसाइकिल और दो स्कूटी बरामद की गईं।

इन चोरी किए गए दोपहिया वाहनों के संबंध में भी हल्द्वानी तथा काठगोदाम में पूर्व में अभियोग दर्ज किए गए हैं। इस दौरान सीओ नितिन लोहनी भी थे। एसएसपी प्रहलाद नारायण मीणा ने पूरी टीम को नगद पुरस्कार दिया है। खुलासा करने वाली टीम में काठगोदाम थानाध्यक्ष विमल कुमार मिश्रा, खेड़ा चौकी प्रभारी ए रविन्द्र राणा, कांस्टेबल अशोक रावत, प्रेम प्रकाश, सुरेन्द्र सिंह शामिल थे।

मोटर साइकिल चोरी करने वाले दोनों आरोपी। ● अमृत विचार

बरामद दोपहिया वाहन

- मोटर साइकिल संख्या यूके 04एजी-1939, हीरो एचएफ डीलक्स।
- मोटर साइकिल संख्या यूके 04 एजी-1250 स्पेलंडर प्लस।
- मोटर साइकिल संख्या यूके 04 एल 0785 पल्सर।
- हल्द्वानी डहरिया से पुराना माडल स्कूटी।
- इकोटाउन डहरिया से चोरी स्कूटी एक्टिवा फोर जी।

दोनो हैं पेशेवर अपराधी

हल्द्वानी : दोपहिया वाहनों के चोरी के मामले में पकड़े गए दोनों ही आरोपी पेशेवर अपराधी हैं। सौरभ आर्या पर थाना बनभूलपुरा में आर्म्स एक्ट के अलावा चोरी और मारपीट करने के मुकदमे दर्ज हो चुके हैं। संजय बिष्ट के ऊपर साल 2023 में एक चोरी का मुकदमा थाना काठगोदाम में दर्ज हुआ था।

आज 'नहाय-खाय' से शुरू होगा छठ पर्व

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: दीपावली के बाद अब लोक आस्था का महापर्व छठ की तैयारियां जोरों पर हैं। हल्द्वानी सहित आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धालु 25 अक्टूबर से नहाय-खाय के साथ चार दिवसीय छठ अनुष्ठान की शुरुआत करेंगे। सूर्य उपासना के इस पर्व को लेकर शहर में धार्मिक वातावरण बन गया है।

हल्द्वानी छठ समिति के अनुसार शहर के प्रमुख घाटों में पूजा स्थलों की सफाई व सजावट शुरू कर दी गई है। साथ ही स्वच्छता को लेकर तैयारियां तेज कर दी हैं। बाजारों में भी छठ पर्व की रौनक बढ़ गई है। दुकानदार फल, गन्ना, पूजन सामग्री, मिट्टी के बर्तन और डलिया का स्टॉक जुटाने में लगे हैं। इस बार 25 अक्टूबर को नहाय-खाय, 26 अक्टूबर को खरना, 27 अक्टूबर को अस्त होते सूर्य को अर्घ्य और 28 अक्टूबर को उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रती महिलाएं पारण करेंगी। छठ समिति ने श्रद्धालुओं से स्वच्छता बनाए रखने और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पूजा में सम्मिलित होने की अपील की है।

अमृत विचार

हल्द्वानी , शनिवार,25 अक्टूबर 2025

नैनीताल

सिटी ब्रीफ

वीकेंड में डायवर्जन प्लान प्रभावी होगा

नैनीताल। आगामी 25 और 26 अक्तूबर को वीकेंड के दौरान नैनीताल, भीमताल और आसपास के पर्यटन स्थलों की ओर यातायात बढ़ने की संभावना को देखते हुए यातायात पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने विशेष डायवर्जन योजना तैयार की है। पुलिस के अनुसार, नैनीताल और ज्योलीकोट से कैंचीधाम की ओर जाने वाले पर्यटक अपने वाहन भवाली सेनिटोरियम में पार्क कर शटल सेवा से कैंचीधाम पहुंचेगे। भीमताल से कैंचीधाम जाने वाले पर्यटक अपने वाहनों को विकास भवन में पार्क करेंगे और शटल बस से यात्रा पूरी करेंगे। हल्द्वानी से पर्वतीय क्षेत्रों की ओर जाने वाले भारी वाहन भीमताल रोड से खुटानी होते हुए मुक्तेश्वर के रास्ते अपने गंतव्य तक जाएंगे। वहीं अल्मोडा, रानीखेत और बागेश्वर से हल्द्वानी की ओर जाने वाले भारी वाहन क्वारब से रामगढ़, मुक्तेश्वर से खुटानी होते हुए भीमताल होते हुए अपने गंतव्य तक पहुंचेगे। प्रशासन के अनुसार आवश्यक सेवाओं से जुड़े वाहनों जैसे सब्जी, फल, ईंधन, गैस और दूध आदि का आवागमन नियमित रहेगा।

खो-खो खिलाड़ियों का चयन ट्रायल 26 को

कालाढूंगी : नैनीताल जिले के लिए खो-खो अंडर 14 व 18 वर्ग के लिए 26 अक्टूबर को राइका कालाढूंगी के मैदान में चयन को जिलास्तरीय ट्रायल होगा। चयनित खिलाड़ी आगामी राज्य स्थापना दिवस पर 7 से 9 नवंबर राइका नरेन्द्रनगर में होने वाली प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। खेल अधिकारी निर्मला पंत ने बताया कि चयन ट्रायल में आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र व दो पासपोर्ट साइज फोटो लानी अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि अधिक जानकारी के लिए खेल प्रशिक्षक राजेन्द्र सिंह नेगी मो 9458476555 कर सकते हैं।

अधिवक्ता पंकज गोस्वामी को मातृशोक

नैनीताल : हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता पंकज गोस्वामी की 75 वर्षीय माता कुंती गोस्वामी का लंबी बीमारी के बाद शुक्रवार को निधन हो गया। उनके निधन से परिवार में शोक की लहर है। कुंती गोस्वामी लंबे समय से हृदय रोग से पीड़ित थीं। शुक्रवार दोपहर लगभग डेढ़ बजे ऋषिकेश एम्स से उपचार के बाद घर लौटते समय उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके पुत्र पंकज गोस्वामी, अधिवक्ता ललित गोस्वामी व गोविंद गोस्वामी के अनुसार कुंती गोस्वामी की शव यात्रा शनिवार सुबह नौ बजे मॉर्डन कॉटेज, स्नोव्यू स्थित उनके निवास से रानीबाग के चित्रशिला घाट के लिए प्रस्थान करेगी।

विधिक साक्षरता शिविर आयोजित

नैनीताल। विश्व पोलियो दिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय में विधिक साक्षरता शिविर आयोजित किया गया। अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण व जिला जज हरीश कुमार गोयल के मार्गदर्शन में सिविल जज (सीडी) व सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, नैनीताल पारुल थपलियाल के पर्यवेक्षण में आयोजित शिविर में रिटेनर अधिवक्ता तारा आर्या ने विश्व पोलियो दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. रविन्द्र सिंह मेर ने पोलियो टीकाकरण की निर्धारित चार खुराकों की जानकारी दी। शिविर में डॉ. एन गंगोला, डॉ. मोनिका कंडवाल, डॉ. सुधांशु, सहायक नर्स पुष्पा वर्मा, जानकी गंगवार, विमल चिलवाल, तृप्ति, सीमा आर्य सहित कई चिकित्सालय कर्मचारी उपस्थित रहे।

बीसीसीआई के बैनर तले शुरू होगा ऐतिहासिक क्रिकेट मुकाबला, प्रतियोगिता में कई नामचीन भारतीय खिलाड़ी करेंगे प्रतिभाग

रामनगर में पहली बार होगा रणजी ट्रॉफी का आयोजन, मैच आज से

संवाददाता, रामनगर

अमृत विचार: कुमाऊं क्षेत्र के क्रिकेट प्रेमियों के लिए अच्छी खबर है। बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड) के बैनर तले क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड (सीएयू) पहली बार शनिवार से कुमाऊं क्षेत्र में रणजी ट्रॉफी मैच का आयोजन रामनगर के कोशिकी क्रिकेट अकादमी, मंगलार के मैदान में खेला जाएगा। आयोजन की सभी तैयारियां बीसीसीआई की गाइडलाइन के अनुरूप पूरी की जा चुकी हैं।

रामनगर में पत्रकार वार्ता में जानकारी देते आयोजनकर्ता। ● अमृत विचार

यह पहला अवसर है जब उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में बीसीसीआई की मान्यता प्राप्त रणजी ट्रॉफी का मुकाबला खेला जाएगा। मैच शनिवार से शुरू होकर मंगलवार तक चलेगा, यानी चार दिनों तक क्रिकेट का रोमांच रामनगर में देखने को मिलेगा। इस मुकाबले में भारतीय क्रिकेट जगत के कई नामचीन खिलाड़ी मैदान में उतरेंगे। इस रणजी ट्रॉफी मुकाबले में उत्तराखंड टीम का सामना ऑल इंडिया रेलवे टीम से होगा। रेलवे टीम देश की अनुभवी और मजबूत टीमों में से एक मानी जाती है। इस टीम में आईपीएल फ्रेंचाइजी मुंबई इंडियंस से खेलने वाले खिलाड़ी करन शर्मा, हिमांशु सांगवान, उपेंद्र यादव और जे. सुचिथ जैसे दिग्गज क्रिकेटर शामिल हैं। वहीं उत्तराखंड की ओर से राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित प्रतिभाशाली खिलाड़ी मैदान में उतरेंगे। इनमें राजन और जे. सुचिथ (जो इस बार उत्तराखंड टीम में स्थानीय चयन के अंतर्गत खेलेंगे) जैसे क्रिकेटर टीम की कमान संभालेंगे। सभी खिलाड़ी इस ऐतिहासिक आयोजन को लेकर उत्साहित हैं और बेहतर प्रदर्शन का मन बना चुके हैं। यह आयोजन न केवल कुमाऊं क्षेत्र के क्रिकेट प्रेमियों के लिए उत्साह का केंद्र बना है, बल्कि युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का भी स्रोत है। स्थानीय खेलप्रेमियों का कहना है कि इस आयोजन से क्षेत्र में क्रिकेट के विकास को नई दिशा मिलेगी। इसके साथ ही पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, क्योंकि रणजी जैसे बड़े आयोजन से बाहर से आने वाले खिलाड़ियों, दर्शकों और अधिकारियों की संख्या में वृद्धि होगी। क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड के अध्यक्ष दीपक मेहरा ने बताया कि रामनगर में रणजी ट्रॉफी का आयोजन राज्य के क्रिकेट इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

उन्होंने कहा कि यह उत्तराखंड क्रिकेट के लिए ऐतिहासिक पल है। बीसीसीआई के निर्देशों के अनुरूप सभी व्यवस्थाएं पूरी की गई हैं। हम चाहते हैं कि इस आयोजन से कुमाऊं क्षेत्र के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को बड़ा मंच मिले और वे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकें। मेहरा ने बताया कि मैदान की पिच, खिलाड़ियों की सुविधा और दर्शकों की सुरक्षा व्यवस्था बीसीसीआई की तकनीकी टीम की देखरेख में की गई है। रामनगर में रणजी ट्रॉफी का आयोजन न केवल कुमाऊं क्षेत्र को राष्ट्रीय क्रिकेट मानचित्र पर नई पहचान देगा, बल्कि इससे क्षेत्र के युवाओं में खेल के प्रति उत्साह और भागीदारी भी बढ़ेगी। अध्यक्ष दीपक मेहरा के अनुसार रामनगर में रणजी ट्रॉफी का आयोजन उत्तराखंड क्रिकेट के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय जोड़ेगा। यह आयोजन स्थानीय खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर देगा।

कुमाऊं विवि डॉ. एलडी भट्ट स्मृति पुरस्कार देगा

बीकॉम टॉपर को 50 हजार व इतिहास टॉपर को मिलेंगे 25 हजार रुपये

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: कुमाऊं विश्वविद्यालय और डॉ. लीलाधर भट्ट मेमोरियल कल्याण समिति, हल्द्वानी के बीच एक महत्वपूर्ण करार हुआ है। जिसके तहत विश्वविद्यालय में डॉ. लीलाधार भट्ट स्मृति पुरस्कार प्रारंभ किया जाएगा। कुमाऊं विश्वविद्यालय डीएसबी परिसर के वाणिज्य विभाग के पूर्व छात्र एवं वर्तमान में एलारा कैपिटल्स लंदन के चेयरमैन और मुख्य कार्यकारी अधिकारी राज भट्ट ने अपने स्वर्गीय पिता डॉ. लीलाधार भट्ट की स्मृति में यह पुरस्कार शुरू करने की घोषणा की है।

लीलाधर भट्ट पुरस्कार को लेकर समझौता ज्ञापन सौंपते राज भट्ट। ● अमृत विचार

इस पुरस्कार के तहत विश्वविद्यालय के बीकॉम में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र या छात्रा को 50 हजार और बीए (इतिहास विषय) में टॉपर छात्र या छात्रा को 25 हजार रुपये की धनराशि पुरस्कार स्वरूप दी जाएगी। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में प्रदान किया जाएगा। समझौता ज्ञापन पर विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. एमएस मंद्रवाल तथा समिति की ओर से राकेश जोशी ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. डीएस. रावत ने राज भट्ट के इस योगदान की सराहना करते हुए कहा कि इससे न केवल छात्रों को आर्थिक प्रोत्साहन मिलेगा, बल्कि वे उत्कृष्टता की दिशा में और भी प्रेरित होंगे। उन्होंने श्री भट्ट के सामाजिक योगदान और विश्वविद्यालय से जुड़ेपन के लिए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. अतुल जोशी और इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो. सावित्री कैड़ा ने भी राज भट्ट का आभार जताया। प्रो. अतुल जोशी ने कहा कि छात्र-छात्राओं को राज भट्ट से प्रेरणा लेते हुए चार्टर्ड अकाउंटेंसी जैसे पेशेवर करियर की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। समझौता ज्ञापन के अवसर पर प्रो. अतुल जोशी, नवीन चंद्र पनेरू, अंकिता पंत, दीक्षा जोशी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

चेकिंग अभियान के दौरान किया 15 वाहनों का चालान

नैनीताल: जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल के निर्देशों के क्रम में जिले में सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम को लगातार सघन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। शुक्रवार को एसडीएम कैंची धाम के नेतृत्व में परिवहन विभाग एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम ने क्षेत्र के छड़ा, गरमपानी सहित आसपास के इलाकों में वाहनों की गहन जांच की।

अभियान के दौरान कुल 15 वाहनों के चालान किए गए। इनमें ओवरलोडिंग, बिना ड्राइविंग लाइसेंस, बिना फर्स्ट एड बॉक्स, बिना हेलमेट, तथा वाहन से संबंधित आवश्यक दस्तावेजों की अनुपलब्धता जैसे मामलों में कार्रवाई की गई।अधिकारियों ने बताया कि आगामी पर्व व पर्यटक सीजन को देखते हुए जिले में यातायात अनुशासन सुनिश्चित करने और दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए इस प्रकार के अभियान लगातार जारी रहेंगे। उन्होंने वाहन चालकों से अपील की कि वे यातायात नियमों का पालन करें और सुरक्षित ड्राइविंग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। कहा कि नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

समस्याओं के समाधान की मांग, डीएम को ज्ञापन सौंपा

जिलाधिकारी को ज्ञापन देते ओखलकांडा के जनप्रतिनिधि। ● अमृत विचार

संवाददाता, भीमताल

● पूर्व ग्राम प्रधान मदन नौलिया ने सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार: विकासखंड ओखलकांडा में विभिन्न मांगों को लेकर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों ने जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल को ज्ञापन सौंपा है। क्षेत्र पंचायत सदस्य कुकाना कविता नौलिया के नेतृत्व में मिले शिष्टमंडल ने जिलाधिकारी से समस्याओं के समाधान की मांग की।

इस मौके पर पूर्व ग्राम प्रधान मदन नौलिया ने बताया कि हाईस्कूल कैड़ा गांव में प्रधानाचार्य की नियुक्ति नहीं हो पाई है। वहीं इस दौरान उन्होंने कूकना से देवली पहुंच मोटर मार्ग, कैड़ा गांव से रीठा साहिब पहुंच मोटर मार्ग, कोकना में प्राथमिक उपचार की व्यवस्था, कोकना उद्यान केंद्र में एडीओ स्टाफ की नियुक्ति, कुकाना कैड़ा गांव धैना ग्राम सभा में जंगली जानवरों से बचाव के लिए तारबाड़, ढोली गांव प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में रोगी वाहन की व्यवस्था, बच्चों की कीड़ा के लिए केंद्र बिंदु कुकाना में खेल का मैदान, ढोली गांव में पूर्व में स्वीकृत पॉलिटेक्निक कॉलेज पूर्व में स्वीकृत कचला कोट-सुनकोट-पैडायल कैड़ा गांव के लिए 9 किलोमीटर मोटर मार्ग निर्माण की मांग उठाई। इस दौरान क्षेत्र के कई ग्रामीण भी मौजूद थे

घायल गाय के लिए देवदूत बने नीरज

चोरगलिया: पांच दिन से तड़प रही एक गाय के लिए छात्र नीरज रुवाली देवदूत बनकर सामने आए। सड़कों पर आवारा पशुओं की भरमार हो चुकी है। कुछ किसान दूध देना बंद करने पर अपनी पालतू गाय को छोड़ देते हैं। सड़कों पर पशुओं के आ जाने से आए दिन एक्सीडेंट हो रहे हैं।

पांच दिन पहले एक गाय जो घायल अवस्था में पड़ी थी। उसके पैर में काफी गहरा जख्म था जिससे वह ठीक से चल भी नहीं पा रही थी। पशु प्रेमी नीरज रुवाली की निगाह उस गाय पर पड़ी उन्होंने गाय की मदद के लिए 1962 नंबर पर संपर्क किया। दूसरे दिन पशु चिकित्सक भावना अपने स्टाफ हृदेश कुमार शर्मा व मिथुन के साथ गाय का इलाज करने चोरगलियां पहुंचीं। इस दौरान ग्रामीण श्याम सिंह, शंकर, चंदू परगांई व दीपक आदि ने मदद की।

गाय का उपचार करतीं डॉ. भावना।

आपदा प्रबंधन की दी जानकारी

● पीएमश्री राजकीय इंटर कालेज पतलोट में कार्यशाला

● पांच दर्जन से अधिक विद्यार्थियों को दी गई जानकारी

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: ओखलकाडा ब्लॉक के पीएमश्री अटल उत्कृष्ट शहीद बहादुर सिंह मटियाली राजकीय इंटर कालेज, पतलोट जनपद नैनीताल में एक दिवसीय आपदा प्रबंधन एवं न्यूनीकरण त्वरित राहत-बचाव कार्य और जागरुकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद आपदा प्रबंधन प्राधिकरण नैनीताल के तत्वावधान में नैनीताल के मास्टर ट्रेनर नवीन चंद्र (खोज एवं बचाव) और सुमित जोशी सहायक कंसल्टेंट द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर 60 छात्र-छात्राओं विद्यालय कर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र अंतर्गत विद्यमान तथा संभावित प्राकृतिक आपदाओं के विषय में जानकारी दी गई।

पतलोट में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रक में मौजूद विद्यार्थी व शिक्षक। ● अमृत विचार

विद्यार्थियों को आपदा के प्रकार आपदा के दौरान और बाद की कार्यवाही, आपदा से पूर्व तैयारी, सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन, उपकरणों की जानकारी, आपातकालीन स्ट्रेचर बनाना, प्राथमिक उपचार आग से बचने के तरीके और बाढ़ से बचाव के तरीके आदि संबंधित जानकारी के साथ जनपद आपातकालीन, आपातकाल के टोल फ्री नंबर की जानकारी और विद्यालय परिसर के सुरक्षित स्थान एवं निकासी मार्गो की भी जानकारी दी गई।

इस दौरान प्रधानाचार्य आशुतोष साह, रमेश चंद्र त्रिपाठी, संजय कुमार, डॉ. हेमंत कुमार जोशी डॉ. कमल चंद्र , मदन मोहन बिष्ट, गीता रजवार ,कंचन बिष्ट एवं बुशरा फिरदौश आदि मौजूद रहे।

छुट्टियां समाप्त होने के बावजूद बंद हैं कई स्कूल

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: सरकारी विद्यालयों में लगभग एक सप्ताह से दीपावली अवकाश चल रहे थे। जानकारी मिली है कि नैनीताल जनपद के कई विद्यालयों में 24 व 25 अक्टूबर को भी प्रधानाचार्यों ने विवेकाधीन अवकाश लगाकर छुट्टियां की हैं। जबकि अटल उत्कृष्ट विद्यालयों को छोड़कर उत्तराखण्ड बोर्ड से संचालित सभी इण्टर कॉलेजों में 29 अक्टूबर से अर्धवार्षिक परीक्षाएं होनी हैं लेकिन विद्यालय दीपावली त्योहार संपन्न होने के बाद भी बन्द हैं।

आपको बताते चलें कि विद्यालयों में वर्ष में देय तीन प्रधानाचार्य विवेकाधीन अवकाश होते हैं और वे तीनों अवकाश दोनों ही परिस्थितियों में लगने का प्रावधान है। क्षेत्र विशेष में कोई आकस्मिक आपदा आ जाने पर, दूसरा कोई स्थानीय त्योहार आदि के होने पर जबकि दोनों में से एक भी स्थिति नहीं है। फिर भी अधिकतर प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय विवेकाधीन अवकाश के नाम पर बंद पड़े हैं। विभागीय अधिकारियों से पूछने पर पता चला कि छुट्टियां बढ़ाने के लिए प्रधानाचार्य विवेकाधीन अवकाश लगाने का कोई विभागीय नियम है और न ही छात्रहित में है पिछले कुछ वर्षों से यह स्थिति बनते जा रही है जिसमें छात्रहित में विभागीय अधिकारियों एवं शासन को संज्ञान लिया जाना बहुत जरूरी है। प्रधानाचार्य विवेकाधीन अवकाश भी बीईओ की स्वीकृति के उपरान्त ही स्वीकृति का प्रावधान होना चाहिए।

> तीन विवेकाधीन अवकाश मिलते हैं। पर यह अपकाश लेने के लिए उनको खंड शिक्षा अधिकारी को सूचित करना होता है।
> -पुष्कर लाल टम्टा, डीईओ, नैनीताल

सीएचसी भीमताल के उच्चीकरण व अल्ट्रासाउंड मशीन लगाने की मांग

संवाददाता, भीमताल

अमृत विचार: ग्राम पंचायत जंगलिया गांव की प्रधान राधा कुल्याल व राज्य आंदोलनकारी प्रेम सिंह कुल्याल ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भीमताल का उच्चीकरण कर उप जिला चिकित्सालय बनाने तथा अस्पताल में अल्ट्रासाउंड मशीन लगाने की मांग को लेकर मुख्य विकास अधिकारी अनामिका नैनीताल को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग की कि आगामी राज्य स्थापना दिवस पर उक्त मांग पर गंभीरता पूर्वक विचार किया जाए। गौरतलब है कि भीमताल में एक्स रे टेक्नीशियन सप्ताह में तीन दिन उपलब्ध रहते हैं जबकि इस अस्पताल के अधीन 35000 से ज्यादा जनसंख्या आती हैं। बावजूद इसके यह अस्पताल रेफरल सेंटर बना हुआ है। राज्य आंदोलनकारी प्रेम सिंह कुल्याल ने कहा कि एक तरफ हम राज्य स्थापना की रजत जयंती वर्ष मनाने जा रहे हैं दूसरी तरफ क्षेत्र के लोग स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधा से वंचित हैं। उन्होंने आम जनता से अपने अपने इस मांग से स्थानीय जन प्रतिनिधियों तथा प्रशासनिक अधिकारियों से अवगत कराने की अपील की है। उन्होंने कहा कि उचित हल नहीं निकला तो सभी संगठनों को साथ लेकर आंदोलन किया जाएगा।

मुख्य विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपतीं ग्राम प्रधान राधा कुलियाल। ● अमृत विचार

निर्णय | चिड़ियाघर प्रशासन ने टिकट की दरों में की बढ़ोतरी, प्राणियों के रखरखाव व भोजन की बढ़ती लागत के चलते उठाया कदम

अब चिड़ियाघर में जानवर देखना हुआ 50 फीसदी महंगा

● चिड़ियाघर में 224 संरक्षित प्राणी हैं मौजूद

● विदेशी पर्यटकों से 300 रुपये प्रति व्यक्ति शुल्क लेने का निर्णय

संवाददाता, नैनीताल

अमृत विचार: सरोवर नगरी आने वाले पर्यटकों को अब चिड़ियाघर का भ्रमण महंगा पड़ेगा। टोल टैक्स और पार्किंग शुल्क बढ़ने के बाद पर्यटकों के लिए यह तीसरा झटका है। नैनीताल चिड़ियाघर प्रशासन ने टिकट दरों में 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर दी है। चिड़ियाघर में संरक्षित 224 प्राणियों के रखरखाव और भोजन की बढ़ती लागत को देखते हुए यह कदम उठाया गया है।

नैनीताल स्थित उच्च स्थलीय प्राणी उद्यान। ● अमृत विचार

नई दरों के अनुसार अब भारतीय पर्यटकों से 150 रुपये और विदेशी पर्यटकों से 300 रुपये प्रति व्यक्ति शुल्क लिया जाएगा। पहले ये दरें क्रमशः 100 और 200 रुपये थीं। हालांकि 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों, 60 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों और दिव्यांग पर्यटकों से शुल्क नहीं लिया जाएगा। चिड़ियाघर क्षेत्राधिकारी आनंद लाल ने बताया कि चिड़ियाघर प्रबंधन समिति की वार्षिक साधारण सभा में इस प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। नैनीताल चिड़ियाघर में बंगाल टाइगर, गुलदार, हिमालयी भालू, रेड पांडा, मारखोर, सांभर, मोनाल समेत 29 प्रजातियों के वन्यजीव संरक्षित हैं। हर वर्ष 12 से 15 लाख पर्यटक यहां आते हैं जिससे जू प्रशासन को औसतन तीन करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। लेकिन इस वर्ष पर्यटन सीजन कमजोर रहने से अब तक चिड़ियाघर की आमदनी घटी है। अप्रैल से छह अक्टूबर तक 1.09 लाख पर्यटक पहुंचे, जिससे करीब 1.11 करोड़ रुपये का ही राजस्व मिला, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 2.62 करोड़ रुपये था।जू प्रबंधन हर महीने 25 से 30 लाख रुपये भोजन, रखरखाव और कर्मियों के मानदेय पर खर्च करता है। बढ़ते खर्च और घटती आमदनी के चलते टिकट दरों में बढ़ोतरी जरूरी मानी गई।

भोजन में बदलाव

नैनीताल के बदलते मौसम और बढ़ती ठंड को देखते हुए चिड़ियाघर प्रशासन ने प्राणियों के भोजन में भी बदलाव शुरू कर दिया है। रेंजर आनंद लाल ने बताया कि सर्दी बढ़ते ही भालू को गुड़ और शहद, जबकि बाघ, गुलदार व पक्षियों को अंडे दिए जा रहे है। ठंड से बचाव के लिए बाड़ों में हीटर और ब्लोअर की व्यवस्था की जा रही है।

धान क्रय केंद्र का शुभारंभ करते विधायक दीवान सिंह बिष्ट। ● अमृत विचार

विधायक बिष्ट ने किया धन क्रय केंद्र का शुभारंभ

रामनगर। विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने क्रय विक्रय समिति में स्वीकृत धान क्रय केंद्र शंकरपुर का विधिवत शुभारंभ किया। विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने किसानों से धान अधिक से अधिक संख्या में क्रय केंद्रों पर लाने की अपील की। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों के हित में कई प्रकार की योजनाएं चला रही है। किसानी कर रहे लोगों को इन योजनाओं का भरपूर लाभ लेना चाहिए। शुक्रवार को क्रय केंद्र पर क्षेत्र के प्रगतिशील किसान श्री राम धन पुत्र श्री किशन चंद्र ग्राम भवानीपुर बड़ी का धन तोल की गई। इस अवसर पर समिति के निवर्तमान अध्यक्ष ब्रह्मदेव झा जी, एस० के० अनुरागी अपर जिला सहकारी अधिकारी, समिति कर्मचारी उमेश चंद्र , आशिक कैलाश चंद्र बुधोडी विक्रेता, राजेंद्र सिंह मेहरा, विनोद बिष्ट केंद्र प्रभारी उपस्थित रहे।

पर्यटकों से गुलजार रही सरोवर नगरी

नैनीताल। दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण बढ़ने से नैनीताल में भारी संख्या में पर्यटक पहुंचने लगे है। दिवाली के बाद नैनीताल में भारी भीड़ के कारण पर्यटन व्यवसाय में रौनक लौटी है। शुक्रवार को भी नैनीताल में पर्यटकों के आगमन से नैनीताल व आसपास के क्षेत्रों के सभी होटलों व होमस्टे के कमरे फुल रहे जिससे स्थानीय कारोबारियों और पर्यटन कारोबारियों के चेहरे खिले रहे। हालांकि, पर्यटकों की आमद से शहर में ट्रैफिक जाम और पार्किंग की समस्या भी देखी जा रही है। होटल एसोसियेशन के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह बिष्ट ने बताया कि मंगलवार से नैनीताल में पर्यटकों के आगमन से होटलों व होमस्टे का कारोबार में सुधार हुआ है। दिवाली के बाद वीकेंड में बेहतर कारोबार की उम्मीद है।

सिटी ब्रीफ

अंडर-17 फुटबॉल टीम का ट्रायल कल

हल्द्वानी : राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय अंडर-17 बालक वर्ग फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन 5 से 9 नवम्बर तक पवेलियन ग्राउंड देहरादून में किया जाएगा। प्रतियोगिता में जनपद नैनीताल की टीम भी प्रतिभाग करेगी। टीम चयन के लिए 26 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से स्पोर्ट्स स्टेडियम हल्द्वानी में चयन ट्रायल आयोजित किया जाएगा। ट्रायल में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की आयु की गणना 1 जनवरी 2009 के आधार पर की जाएगी। प्रतिभागियों को आधार कार्ड, स्थायी निवास प्रमाण पत्र, जन्म प्रमाण पत्र की छायाप्रति तथा दो पासपोर्ट आकार के फोटोग्राफ साथ लाने होंगे।

इंटर-स्कूल बास्केटबॉल टूर्नामेंट 30 अक्टूबर से

हल्द्वानी : एसकेएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में 30 अक्टूबर से तीन दिवसीय इंटर-स्कूल बास्केटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया जाएगा। यह प्रतियोगिता 1 नवम्बर तक चलेगी। क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों की टीमें इसमें भाग लेकर अपने खेल कौशल का प्रदर्शन करेंगी। प्रधानाचार्या मोनिका शर्मा ने बताया कि टूर्नामेंट का उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल के प्रति रुचि बढ़ाना, अनुशासन और टीम भावना को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि विद्यालय शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ खेल प्रतिभाओं को भी आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

अनदेखी: आखिर कब सुधरेंगी शहर की बदहाल सड़कें

लोक निर्माण विभाग ने की कुछ सड़कों की मरम्मत, नगर निगम के अधीन अधिकांश सड़कें उखड़ी, जगह-जगह गड्ढों से खतरा

अमृत विचार पड़ताल

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : बरसात समाप्त हुए करीब तीन सप्ताह बीत चुके हैं। लेकिन शहर की कई सड़कें अब भी बदहाली झेल रही हैं। सड़कों में जगह-जगह गड्ढे हैं, जिनको अभी तक भरा नहीं गया है। साथ ही सड़कों का अधिकांश हिस्सा उखड़ा हुआ है। बरसात के बाद टूटी सड़कों और जगह-जगह बने गड्ढों से लोगों का सफर जोखिम भरा हो गया है। लोक निर्माण विभाग की ओर से कई सड़कों में पैचवर्क के साथ ही मरम्मत की जा रही है। लेकिन अभी भी कई सड़कों को मरम्मत की दरकार है। वहीं, नगर निगम की अधिकांश सड़कों की स्थिति अभी भी खस्ताहाल है। शहर की कई आंतरिक सड़कें मरम्मत की राह देख रही हैं। उल्लेखनीय है कि हर मानसून के बाद शहर की सड़कें उखड़ जाती हैं, इस बार हालात कहीं और अधिक खराब हैं। पूर्व में नगर निगम ने दावा किया था कि शहर की खराब सड़कों की मरम्मत शीघ्र की जाएगी। अब अक्टूबर माह खत्म होने को है, लेकिन अभी तक मरम्मत का काम शुरू नहीं हुआ।

इधर, लोनिवि के ईई प्रत्यूष कुमार का कहना है कि सड़कों पर पैचवर्क शुरू कर दिया गया है और कई खराब सड़कों की मरम्मत की जा चुकी है। बताया कि शीघ्र ही अन्य सड़कों की मरम्मत भी कर ली जाएगी। शहरवासियों का कहना है कि दोपहिया वाहन चलाना खतरे से खाली नहीं। कहा कि पहले बरसात के कारण सड़कों की मरम्मत में देरी का हवाला दिया गया लेकिन अब मौसम पूरी तरह साफ होने के बाद भी तेजी से कार्य नहीं किया जा रहा है। नगर निगम के एई नवल नौटियाल ने बताया कि मरम्मत के लिए प्रस्ताव भेजा गया है, लेकिन बजट के अभाव के कारण सड़कों की मरम्मत शुरू नहीं हो पा रही है।

रामपुर रोड

खोदाई के बाद नहीं भरे गड्ढे, सड़क भी उखड़ी

हल्द्वानी : रामपुर रोड शहर का एक प्रमुख हाईवे है। जहां से रोजाना हजारों वाहन गुजरते हैं। लेकिन यह सड़क भी वर्तमान में सुरक्षित नहीं है। यहां अग्रसेन भवन के सामने सड़क को पेयजल लाइन डालने के लिए पूर्व में खोदा गया था, जिसे अभी तक भरा नहीं गया है। जिससे यह दोपहिया वाहन चालकों के लिए खतरनाक बनी हुई है और कभी भी बड़े हादसे को दावत दे सकती है।

कैंसर अस्पताल रोड

चौराहे के पास गड्ढे

हीरा नगर को शहर के एक पॉश इलाके के रूप में जाना जाता है। लेकिन यहां भी सड़कों की स्थित ठीक नहीं है। यहां तिराहे के पास सड़क में गड्ढे हैं, जिनको भरा नहीं गया है। इन गड्ढों में कई बार दोपहिया वाहन चालक चोटिल हो चुके हैं। रात के समय इस सड़क से गुजरना खतरे से भरा हुआ है।

हीरानगर चौराहा

गांधी कॉलेज सड़क

हीरा नगर जाने वाली सड़क को मरम्मत की दरकार

सुशीला तिवारी अस्पताल से कुछ दूरी पर स्थित कैंसर अस्पताल से हीरा नगर को जाने वाली सड़क भी जगह-जगह उखड़ी हुई है। यहां से रोजाना हजारों वाहन गुजरते हैं। खासकर दोपहिया वाहनों के लिए यह सड़क जोखिम भरी बनी हुई है। बरसात के दौरान कई लोग सड़क पर गिरकर चोटिल भी हो चुके हैं, लेकिन अभी तक इसकी मरम्मत शुरू नहीं की गई है।

गांधी इंटर कॉलेज जाने वाली सड़क खस्ताहाल

एसटीएच से बरेली रोड स्थित महात्मा गांधी इंटर कॉलेज की ओर जाने वाली सड़क भी खस्ताहाल है। इस मार्ग पर विजिलेंस के एसपी कार्यालय के पास सड़क बहुत बुरी तरह उखड़ी हुई है और इसमें जगह-जगह गड्ढे हो चुके हैं। इस सड़क से दोपहिया वाहन चालकों का गुजरना मुश्किल हो चुका है।

बागजाला के ग्रामीणों का धरना रहा जारी

हल्द्वानी, अमृत विचार: मालिकाना हक और आठ सूत्रीय मांग को लेकर बागजाला के ग्रामीणों का अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुक्रवार को 68वें दिन भी जारी रहा। शुक्रवार को सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक गणेश राम ने सरकार पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि यह आंदोलन केवल घर-खेत को बचाने का नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों की रक्षा का आंदोलन है।

उन्होंने कहा कि सरकार जनभावनाओं की अनदेखी कर रही है। आंदोलन की अनदेखी का जवाब जनता आने वाले चुनावों में देगी। धरने को अखिल भारतीय किसान महासभा के प्रदेश अध्यक्ष आनंद सिंह नेगी, मोहम्मद परवेज, विमला देवी, मोहम्मद सुलेमान मलिक समेत अन्य वक्ताओं ने भी संबोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि सरकार को जनता की आवाज सुननी चाहिए, अन्यथा आंदोलन और तेज किया जाएगा। धरना प्रदर्शन में हरक सिंह बिष्ट, गोपाल सिंह बिष्ट, आनंद सिंह नेगी, विमला देवी, दौलत सिंह, प्रेम सिंह नयाल, सुनीता देवी, भगवती आर्य, मोहम्मद परवेज, मोहम्मद सुलेमान मलिक, शांति देवी, हेमा आर्या, हेमलता देवी सहित कई लोग शामिल रहे। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय किसान महासभा बागजाला के सचिव वेद प्रकाश ने किया।

पीएम श्री विद्यालय पतलोट बना आदर्श मॉडल, चलाई जा रही स्मार्ट क्लासेस

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : ओखलकांडा ब्लॉक के दूरस्थ ग्राम पतलोट में स्थित पीएम श्री अटल उत्कृष्ट शहीद बहादुर सिंह मटियाली वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय को आदर्श मॉडल स्कूल घोषित किया गया है।

पहाड़ की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद यहां डिजिटल बोर्ड और प्रोजेक्टर के माध्यम से स्मार्ट क्लासेस चलाई जा रही हैं। शिक्षक बच्चों को रोचक और व्यवहारिक तरीके से पढ़ा रहे हैं, जिससे विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है। विद्यालय में प्रत्येक दिन की शुरुआत स्थानीय संस्कृति से जुड़ी होती है। सुबह की प्रार्थना कुमाऊनी भाषा में की जाती है, जिससे विद्यार्थियों में लोकभाषा और परंपराओं के प्रति गर्व की भावना उत्पन्न होती है। साथ ही बच्चों के सामान्य ज्ञान और अंग्रेजी कौशल को सशक्त करने के लिए नियमित रूप से प्रश्नोत्तर आधारित चर्चा सत्र आयोजित किए जाते हैं। स्कूल में एनसीसी प्रशिक्षण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व और सामाजिक सहभागिता की भावना विकसित की जा रही है। यहां एक आधुनिक लैब का निर्माण भी किया जा रहा है, जो प्रयोगात्मक शिक्षा की दिशा में नए अवसर प्रदान करेगी।

ओखलकांडा ब्लॉक के पतलोट आदर्श स्कूल की दीवार में बनाई गई सुंदर पेंटिंग।

हल्द्वानी का एक्यूआई स्तर 117 तक पहुंचा

- तीन दिन में एक्यूआई में 77 अंकों का सुधार
- हवा में धुंध कम होने से लोगों को मिली राहत

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: हल्द्वानी के एक्यूआई में लगातार सुधार आ रहा है। अब एक्यूआई 117 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक पहुंच गया है। इससे हवा और भी साफ हो गई है। साथ ही नैनीताल का एक्यूआई भी कम होने से हवा साफ हो रही है।

दूसरे राज्यों के महानगरों की अपेक्षा उत्तराखंड में आबोहवा काफी साफ है। नैनीताल जिले में नैनीताल में एक्यूआई अब 82 तक पहुंच गया है। गुरुवार को दर्ज किए गए आंकड़ों के बाद यह तस्वीर सामने आई है। अब दिवाली त्योहार भी पूरी तरह से खत्म हो गया है और साथ ही आतिशबाजी भी अब न के बराबर हो रही है। इधर हल्द्वानी में गुरुवार को एक्यूआई 117 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा। दिवाली के दिन यह 194 तक पहुंच गया था। तीन दिनों में 77 अंकों की कमी आई है। अगले कुछ दिनों में हल्द्वानी का एक्यूआई अब 100 से नीचे पहुंचने की संभावना है। क्षेत्रीय प्रदूषण अधिकारी अनुराग नेगी ने बताया कि राहत की बात है कि तेजी के साथ एक्यूआई में सुधार आ रहा है। कहा कि हमें शहर साफ और स्वच्छ रखना चाहिए, साथ ही वाहनों का इस्तेमाल कम से कम करना चाहिए।

छठ के लिए घाट की हो रही सफाई कुछ लोग नहर में फेंक रहा कूड़ा

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : रामपुर रोड स्थित सुशीला तिवारी अस्पताल के पास नहर पूरी तरह गंदगी और कूड़े से पटी पड़ी है। नगर निगम के कर्मचारी पिछले दो दिन से लगातार सफाई में जुटे हैं, लेकिन इसके बावजूद नहर में लगातार कूड़ा-कचरा डाला जा रहा है। आज होने वाली छठ पूजा के मौके पर यहीं स्थित छठ पूजा स्थल पर महिलाएं नहाय-खाय के साथ पर्व की शुरुआत करेंगी। यह पर्व मुख्य रूप से बिहारी समाज और पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों की ओर से मनाया जाता है।

छठ पूजा समिति की ओर से मेयर से सफाई की मांग किए जाने के बाद निगम कर्मियों ने सफाई अभियान शुरू किया था। समिति के अध्यक्ष मुरारी प्रसाद श्रीवास्तव ने बताया कि पूजा स्थल जैसी पवित्र जगह पर भी लोग बेखौफ होकर कूड़ा फेंक रहे हैं। समिति और नगर निगम के संयुक्त प्रयासों के बावजूद कुछ स्थानीय दुकानदारों और राहगीरों की लापरवाही से नहर फिर से गंदी हो गई है। इधर, सुशीला तिवारी अस्पताल के पीछे नहर के किनारे वाली सड़क पर भी लोग दोपहिया वाहनों और पैदल पहुंचकर कूड़ा डाल रहे हैं।

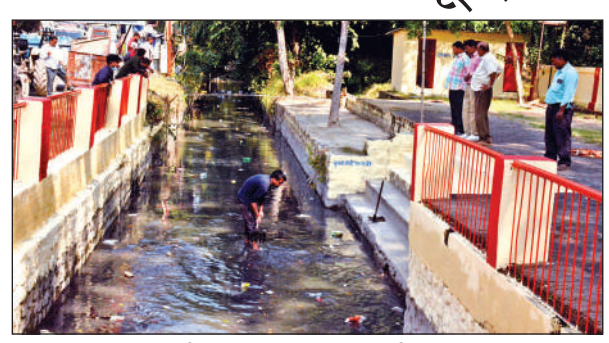

छठ पूजा स्थल पर नहर की सफाई करता सफाई कर्मचारी। ● अमृत विचार

दिव्यांग समिति बनाने के लिए सौंपा ज्ञापन

हल्द्वानी, अमृत विचार : हल्द्वानी में दिव्यांग समुदाय के दो प्रतिनिधियों ने नगर निगम के मेयर को ज्ञापन सौंपकर दिव्यांग समिति बनाने की मांग की है। ज्ञापन में दिव्यांग लोगों को केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं एवं सुविधाओं के बेहतर संचालन के लिए समिति गठन की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

ज्ञापन सौंपने वाले कार्यकर्ताओं में सक्षम के जिला अध्यक्ष अरुण कुमार गुप्ता और सक्षम के मीडिया प्रभारी नैनीताल दिलीप वार्ष्णेय सहित अन्य दिव्यांग लोग भी उपस्थित थे। मेयर ने उनकी मांग पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए दिव्यांग समिति बनाने का आश्वासन दिया है। कहा कि इस संबंध में शीघ्र कार्रवाई होगी।

डॉक्यूमेंट शिविर में 77 नागरिकों ने लिया लाभ

संवाददाता, हल्द्वानी

- ग्राम हरिपुर जमन सिंह में लगाया गया शिविर
- यूसीसी मैरिज रजिस्ट्रेशन व आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए

अमृत विचार : ग्राम हरिपुर जमन सिंह में गुरुवार को आयोजित विशेष डॉक्यूमेंट कैंप में नागरिकों को यूसीसी मैरिज रजिस्ट्रेशन, आयुष्मान कार्ड, पैन कार्ड, वोटर आईडी, ई-श्रम कार्ड और आधार कार्ड संशोधन/अपडेट जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं।

ग्राम प्रधान नरेश सिंह बजवाल के नेतृत्व में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित इस कैंप में नागरिकों ने सक्रिय भागीदारी दिखाई। विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों (70 वर्ष और उससे अधिक आयु) के लिए आयुष्मान कार्ड बनवाने की सुविधा भी दी गई। यूसीसी विवाह पंजीकरण हेतु आवश्यक दस्तावेज जैसे पति-पत्नी का आधार कार्ड, स्थायी प्रमाण पत्र, हाई स्कूल मार्कशीट, फोटो सहित गवाह दस्तावेज और बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र जमा कराए गए। साथ ही पुराने आयुष्मान कार्डधारकों के लिए आधार लिंकिंग और केवाईसी अपडेट भी किया गया। कैंप में कुल 77 लोगों ने लाभ उठाया। कैंप को लेकर लोगों में खासा उत्साह देखा गया। कई लोगों ने विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी ली।

थार ने ठेले को मारी टक्कर, हुआ हंगामा

हल्द्वानी, अमृत विचार : मंगल पड़ाव क्षेत्र में शुक्रवार को एक थार चालक ने ठेले को टक्कर मार दी। टक्कर से ठेले वाले की सब्जी गिर गई। दोनों में विवाद हो गया।

पुलिस के अनुसार बरेली रोड की ओर से आ रहे मुखानी निवासी थार चालक से उसकी गाड़ी मंगलपड़ाव के पास एक सब्जी के ठेले से टकरा गई। यही नहीं यहां से जा रहे एक व्यक्ति की टक्कर भी थार से हो गई। जिस वजह से उसके पैर में चोट आई। वहां मौजूद लोग थार को रोककर चालक से बहस करने लगा। पुलिस के अनुसार थार चालक नशे में था और उन्हीं लोगों से बहस करने लगा। चौकी प्रभारी मंगलपड़ाव गौरव जोशी ने बताया कि थार चालक का 185 पुलिस एक्ट में चालान किया गया है।

खेड़ा में नशे के खिलाफ अभियान

गौलापार खेड़ा में स्मैक और अन्य नशे के खिलाफ नारेबाजी करते ग्रामीण। ● अमृत विचार

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: गौलापार खेड़ा में स्मैक और अन्य नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाया गया। लोगों के नशे के दुष्प्रभावों के बारे में बताया गया।

अभियान के दौरान वक्ताओं ने कहा कि आए दिन क्षेत्र में नशा बढ़ता जा रहा है। जिससे अप्रिय घटनाएं हो रही हैं। पुलिस प्रशासन से मांग की गई कि नशे के अवैध कारोबार पर रोक लगाई जाए। जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि अर्जुन सिंह बिष्ट ने कहा कि कम उम्र में युवा नशे की चपेट में आ रहे हैं और अपना भविष्य बर्बाद कर रहे हैं। बसंत सनवाल ने कहा कि युवाओं को जागरुक किया जा रहा है कि वह नशे की आदत को छोड़ें। उन्होंने पुलिस से मांग करी कि क्षेत्र में पुलिस गश्त क सक्रियता को बढ़ाया जाए। इस दौरान राकेश सिंह चौहान, राजेंद्र कांडपाल, पूजा, कमला लटवाल ,दुर्गा मेहरा, दीपा देवी, भावना पाठक, दिया आर्या, दीवान कुमार, सूरज आर्या रहे।

प्रशासनिक संवर्ग में हुई पदोन्नतियां

हल्द्वानी, अमृत विचार : विद्यालयी शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्रशासनिक संवर्ग में उच्चाधिकारियों की पदोन्नति हुई है। विभागीय सचिव रविनाथ रामन की ओर से जारी आदेश में बताया गया है कि गजेंद्र सिंह सौन, मुख्य शिक्षा अधिकारी बागेश्वर को अपर शिक्षा निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा कुमाऊं मंडल बनाया गया है।

कुलदीप गैरोला को अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा से अपर शिक्षा निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, शिव प्रसाद सेमवाल को सीईओ टिहरी गढ़वाल से अपर शिक्षा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा कुमाऊं और आनंद भारद्वाज को संयुक्त शिक्षा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा से अपर शिक्षा निदेशक विद्यालयी शिक्षा उत्तराखंड बनाया गया है।

खेल-खिलाड़ी | कम उम्र से ही बच्चों को तैराकी का प्रशिक्षण देकर भविष्य के पदक विजेता तैयार करना है मकसद

बिगिनर्स क्लास में बच्चे सीख रहे तैराकी की बारीकियां

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार: गौलापार स्थित अत्याधुनिक ऑल वेदर तरणताल में अब पानी की लहरों पर नौनिहालों के सपने तैरने लगे हैं। खेल विभाग ने प्रदेश में तैराकी को नई दिशा देने के उद्देश्य से 8 साल तक के बच्चों के लिए विशेष बिगिनर्स क्लास की भी शुरुआत की है।

इस पहल का मकसद है, कम उम्र से ही बच्चों को तैराकी की सही तकनीक और पेशेवर प्रशिक्षण देकर भविष्य के पदक विजेता तैयार करना। प्रशिक्षण के दौरान बच्चों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। पूल में प्रशिक्षित लाइफ सेवर्स हर समय तैनात हैं ताकि कोई भी दुर्घटना न हो और बच्चे पूरी तरह सुरक्षित माहौल में तैराकी सीख सकें। राज्य को अब तक तैराकी की किसी भी बड़ी स्पर्धा में पदक नहीं मिल पाया है। इस कमी को दूर करने के लिए विभाग ने जमीनी स्तर पर प्रशिक्षण को सशक्त बनाने की रणनीति अपनाई है।

जिला खेल अधिकारी निर्मला पंत ने बताया कि हमने राष्ट्रीय खेलों के प्रदर्शन का गहराई से विश्लेषण किया है। गौलापार तरणताल में शुरू हुई बिगिनर्स क्लास उसी रणनीति का हिस्सा है। हमारा लक्ष्य है कि हमारे नौनिहाल विश्वस्तरीय सुविधाओं में प्रशिक्षित हों और आने वाले समय में उत्तराखंड का नाम पदक तालिका में दर्ज कराएं। निर्मला पंत ने बताया कि अगर बच्चों को शुरुआती उम्र में ही बेहतर प्रशिक्षण और सही मार्गदर्शन मिले तो वे न सिर्फ राज्य बल्कि देश का नाम भी रोशन कर सकते हैं। स्विमिंग कोच पूनम सिरौला ने कहा छोटी उम्र में बच्चों को पानी से दोस्ती कराना ही सबसे बड़ा प्रशिक्षण है। सही तकनीक और निरंतर अभ्यास से यही बच्चे आने वाले वर्षों में राज्य के लिए स्वर्ण पदक जीत सकते हैं। अगर बच्चों को शुरुआती उम्र में ही बेहतर प्रशिक्षण और सही मार्गदर्शन मिले तो वे न सिर्फ राज्य बल्कि देश का नाम अंतरराष्ट्रीय मंच पर रोशन करेंगे।

100 से ज्यादा लोग ले रहे तैराकी का प्रशिक्षण

गौलापार स्थित अत्याधुनिक ऑल वेदर तरणताल में तैराकी का प्रशिक्षण दिया जाता है। 100 से अधिक युवा तरणताल में प्रशिक्षण ले रहे हैं। विभाग का उद्देश्य है कि तैराकी का पेशेवर प्रशिक्षण देकर भविष्य के पदक विजेता तैयार किए जाएं। प्रशिक्षण के दौरान बच्चों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। पूल में प्रशिक्षित लाइफ सेवर्स हर समय मौजूद रहते हैं। जिला खेल अधिकारी निर्मला पंत ने बताया कि राज्य में तैराकी को मजबूत आधार देने की दिशा में एक कदम है। उन्होंने कहा कि विभाग का लक्ष्य 2027 के राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड को तैराकी में पदक दिलाना है।

वरिष्ठ नागरिक जन कल्याण समिति के पदाधिकारियों ने डीएम से की भेंट

- नैनीताल में पदभार ग्रहण करने पर दी बधाई
- वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएं हल करने को बैठक करने की मांग

संवाददाता, हल्द्वानी

अमृत विचार : वरिष्ठ नागरिक जन कल्याण समिति के पदाधिकारियों के एक शिष्टमंडल ने दर्जा राज्यमंत्री नवीन चंद्र वर्मा के नेतृत्व में जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान शिष्टमंडल ने जिलाधिकारी को जिला नैनीताल का कार्यभार ग्रहण करने पर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी।

समिति ने जिलाधिकारी को स्वागत पत्रा भेंट करते हुए, वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए आगामी दिसंबर-2025 में एक समीक्षा बैठक आयोजित करने का अनुरोध किया। इसके अलावा, नगर निगम काठगोदाम-हल्द्वानी में नगर आयुक्त का कार्यभार ग्रहण करने पर परितोष वर्मा का स्वागत किया और उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर समिति के उपाध्यक्ष इंदर सिंह निगल्टिया, महामंत्री डीके पांडे, संरक्षक डीके बल्यूटिया, पीएस जंतवाल, डीके पंत, राजेंद्र सिंह ऐरी, दिनेश चंद्र पंन्तोला आदि मौजूद रहे

डीएम ललित मोहन रयाल को बुके देकर स्वागत करते वरिष्ठ नागरिक। ● अमृत विचार

अमृत विचार

हल्द्वानी , शनिवार,25 अक्टूबर 2025

सिटी ब्रीफ

पड़ोसी पर मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने का आरोप

बाजपुर : मुड़िया कलां निवासी एक महिला ने पड़ोसी पर मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पीड़िता लक्ष्मी पत्नी मंगल सैनी ने कोतवाली में तहरीर देकर पुलिस को बताया कि पड़ोसी द्वारा पीड़िता व उसकी पुत्री मंजू एवं बहन मालती के साथ कई बार मारपीट की गई है। आरोप है कि पूर्व में आरोपी दीवार फांदकर उनके घर में घुसकर चोरी भी कर चुका है। विरोध करने पर पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी। महिला का कहना है कि आरोपी स्वयं को दबंग बताते हुए कहता है कि वह कई लोगों को मार चुका है और उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

मामूली विवाद के बाद ट्रक चालकों में मारपीट

बाजपुर : आपसी बात को लेकर ट्रक चालकों में विवाद हो गया, जिनमें बात बढ़ी तो मारपीट होने लगी। घटना में एक चालक के चोटें आई हैं, जिसे पुलिस के माध्यम से सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना शुक्रवार की देर रात करीब साढ़े 8 बजे की कोसी कांटा रतनपुरा क्षेत्र की बताई जा रही है। ग्रामीणों के अनुसार यहां दो ट्रक चालकों में किसी बात को लेकर विवाद हो गया, जिनमें बहसबाजी के बाद देखते ही देखते मारपीट शुरू हो गई। घटना में दानिश नामक चालक घायल हो गया। ग्रामीणों ने बमुश्किल उनमें बीच-बचाव करवाया। घायल को पुलिस के माध्यम से सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सूचनाधिकारी सहित 4 कर्मियों को मधुमक्खियों ने काटा

टनकपुर : मधुमक्खियों के झुंड ने जिला सूचनाधिकारी सहित सूचना विभाग के 2 कर्मियों को काट दिया। इसके अलावा चालक सहित एक अन्य व्यक्ति को भी मधुमक्खियों ने निशाने में लिया। चारों कार्मिकों को अस्पताल ले जाया गया।

सूचना विभाग की टीम मुख्यमंत्री के दौरे को कवर करने के लिए पूर्वान्ह चम्पावत से बनबसा जा रही भी। इस बीच गुदमी के पास मधुमक्खियों के झुंड ने वहां से गुजर रहे जिला सूचनाधिकारी धीरज कार्की, फोटोग्राफर सुधीर कुमार के साथ ही सूचना विभाग के चालक गोपाल दत्त थाल और अलंकार फोटो स्टूडियो के संजय सक्टा को काट दिया। आनन-फानन में चारों लोगों को टनकपुर अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टर नौनिहाल सिंह ने चारों का इलाज किया बाद में सभी को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। उधर, घटना को लेकर आसपास के लोगों में दहशत का माहौल है।

टीवीएस शोरूम में लगी आग, करोड़ों का नुकसान

फ्लाईओवर के नीचे है टीवीएस का शोरूम, 40 से अधिक नई बाइक-स्कूटी हुईं स्वाहा, दमकल की गाड़ियों ने आग पर पाया काबू

संवाददाता, रुद्रपुर

शोरूम की आग बुझाते दमकल कर्मी। ● अमृत विचार

अग्निकांड में जलीं बाइक व स्कूटियां। ● अमृत विचार

अमृत विचार : काशीपुर फ्लाईओवर के नीचे स्थित टीवीएस कंपनी शोरूम के गोदाम में आग धधक पड़ी। देखते ही देखते आग की लपटें उठने लगीं और सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचीं और आग पर काबू पाया गया। अग्निकांड में दर्जनों बाइक-स्कूटी के अलावा महंगे पार्ट्स भी जलकर स्वाहा हो गए और अग्निकांड से करोड़ों का नुकसान भी हो गया।

जानकारी के अनुसार गदरपुर मुख्य बाजार निवासी गुरप्रीत सिंह और सुखबीर सिंह की काशीपुर हाईवे फ्लाईओवर के नीचे टीवीएस बाइक-स्कूटी व साइकिल शोरूम की ब्रांच शाखा थी और त्यौहारी सीजन को देखते हुए शोरूम के पिछले हिस्से में बने गोदाम में सैकड़ों वाहन खड़े हुए थे। शुक्रवार की सुबह सवा आठ बजे आसपास के दुकानदारों ने शोरूम संचालक को अग्निकांड की सूचना दी और शोरूम संचालक भी दौड़े-दौड़े पहुंचे। सूचना मिलने पर एफएसओ महेश कुमार भी अपनी टीम के साथ घटनास्थल पहुंचे। पाया कि पिछले हिस्सा आग की लपटों में घिरा हुआ है।

जिसके बाद फायर फाइटर्स ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, लेकिन अग्निकांड में 40 से अधिक स्कूटी, बाइक व साइकिल सहित पार्ट्स एवं एसेसरीज को जलकर स्वाहा हो गए। शोरूम संचालक गुरप्रीत सिंह व सुखबीर सिंह ने बताया कि अग्निकांड में कितनी बाइक व स्कूटी खड़ी हुई थी। उसका आंकलन किया जा रहा है। फिलहाल अनुमानित एक करोड़ से अधिक का नुकसान हुआ है, क्योंकि त्योहारी सीजन को देखते हुए गदरपुर स्थित मुख्य शोरूम से भी सैकड़ों गाड़ियां गोदाम में रखी हुई थी। वास्तविक नुकसान का आंकलन किया जा रहा है।

100 से अधिक खड़ी थीं नई गाड़ियां

टीवीएस कंपनी के दशमेश ऑटो शोरूम में धधकी आग के वक्त 100 से अधिक स्कूटी और बाइक गोदाम व बाहर शोरूम में रखे हुए थे और जैसे ही दमकल विभाग को खबर मिली। वैसे ही अग्निशमन कर्मियों ने गोदाम के अंदर व बाहर खड़ी नई बाइक को बाहर निकालना शुरू कर दिया। एफएसओ महेश चंद्र ने बताया कि करीब 60 स्कूटी व बाइक को बाहर निकालकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया। उसके बाद ही आग को बुझाने की कोशिश प्रारंभ हुई, क्योंकि सबसे पहले नुकसान को रोकना था। वरना नुकसान का आंकड़ा कई करोड़ में जा सकता था।

हो सकता था भीषण अग्निकांड

काशीपुर हाईवे स्थित फ्लाईओवर के नीचे स्थित शोरूम में हुए अग्निकांड को ज्यादा भीषण अग्निकांड हो सकता था, यदि अग्निशमन की टीम थोडी देर कर देती,क्योंकि शोरूम से सटा हुआ टायर शोरूम है और घटनास्थल के बेहद नजदीक कई बड़े कारोबारी भी अपना कारोबार करते हैं। यदि समय रहते आग पर काबू नहीं पाया जाता तो अग्निकांड भीषण अग्निकांड में तब्दील हो जाता है और कारोबारियों का नुकसान बहुत ज्यादा हो सकता था।

नेताओं ने ली हादसे की जानकारी

कारोबारी गुरप्रीत व सुखबीर सिंह के टीवीएस शोरूम में धधकी आग की खबर मिलते ही किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़, पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल, व्यापारी नेता संजय जुनेजा, राजेश ग्रोवर सहित कारोबारी घटनास्थल पहुंचे और शोरूम संचालक से अग्निकांड की जानकारी ली। साथ ही आश्वासन दिया कि क्षति का आकलन रिपोर्ट आने के बाद शासन स्तर पर मुआवजा देने का मुद्दा उठाया जाएगा।

अग्निकांड की वास्तविक वजह की होगी जांच

सीएफओ ईशान कटारिया ने बताया कि अग्निकांड की खबर मिलते ही दमकल की दो गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंची थीं और दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाया। फिलहाल अग्निकांड की वास्तविक वजह की जांच की जाएगी, क्योंकि शोरूम संचालक शॉर्ट सर्किट से ही अग्निकांड होने की आशंका जता रहे है। संचालक से नुकसान का सही आकलन रिपोर्ट भी मांगी गई है। उसके बाद ही जांच प्रारंभ होगी।

विश्व पोलियो दिवस पर जागरूकता शिविर

बाजपुरः उत्तराखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण नैनीताल के तत्वावधान एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ऊधम सिंह नगर के सचिव योगेंद्र कुमार सागर के निर्देशन में सरकारी अस्पताल में शुक्रवार को विश्व पोलियो दिवस पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। डॉ.राशिदा की अध्यक्षता में आयोजित इस जागरूकता शिविर में पराविधिक कार्यकर्ता मोहम्मद शहीद ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से मिलने वाली निश्शुल्क विधिक सेवाओं एवं नालसा हेल्पलाइन नंबर 15100 एवं स्थायी लोक अदालत की विस्तार पूर्वक जानकारी दी। डॉ. राशिदा ने कहा कि पोलियो एक दुर्बल करने वाली जानलेवा बीमारी है। यह वाइरस मस्तिक और रीड की हड्डियों को प्रभावित करता है जिससे लकवा बीमारी या मौत भी हो सकती है। यह पोलियो को बेहद खतरनाक बनाता है, खासकर उन लोगों के लिए जिन्होंने पोलियो के टीके नहीं लगवाए हैं। उन्होंने कहा कि दो बूंद जिंदगी की विश्व पोलियो दिवस पर देश दुनिया से इस घातक बीमारी को मिटाकर स्वस्थ समाज बनाने में हम अपना अमूल्य योगदान दें। इस मौके पर आशीष चौहान, गीता रावत, शोभा देवी मौजूद रहे।

सड़क हादसों में बाइक सवार दो लोग घायल

संवाददाता, बाजपुर

● दो बाइकों की भिड़ंत हुई, घायलों को हायर सेंटर किया रेफर

अमृत विचार: अलग-अलग सड़क हादसों में बाइक सवार दो लोग घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए सरकारी व निजी चिकित्सालयों में भर्ती कराया गया, जहां से चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार देकर हायर सेंटर रेफर कर दिया है।

शुक्रवार की प्रातः करीब साढ़े आठ बजे पुलिस चौकी दोराहा क्षेत्रांतर्गत एनएच-74 पर ग्राम कनौरा के सामने दो बाइकों की भिड़ंत हो गई, जिसमें एक बाइक पर सवार मानपुर स्वार रामपुर उप्र निवासी विजयपाल घायल हो गया, जिसे स्थानीय लोगों की मदद से सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार देकर उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया। इसके अलावा ग्राम केशोवला निवासी अंशु पुत्र धर्म सिंह गुरुवार की देर रात करीब 9 बजे बाइक पर फौजी कॉलोनी की ओर जा रहा था।

इसी बीच रामराज रोड पर केशोवाला मोड़ के निकट सड़क पर पड़ी मिट्टी के ढेर से टकराकर असंतुलित हो सड़क पर गिर गया। घायल को ग्रामीणों ने निजी चिकित्सालय में भर्ती कराया है। वहीं रोड पर इस तरह मिट्टी डालने को लेकर लोगों में नाराजगी भी देखने को मिली।

ऐतिहासिक रूप से मनाएंगे सरदार पटेल की जयंती

संवाददाता, खटीमा

खटीमा में जिलाधिकारियों की वर्चुअल बैठक लेते मुख्यमंत्री धामी।

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को कैम्प कार्यालय लोहियाहेड में राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में तैयारियों के संबंध में वर्चुअल बैठक ली।

जिलाधिकारियों को वर्चुअल संबोधन में मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि एकता मार्च के सफल आयोजन के लिए विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाए। उन्होंने कहा कि इस अभियान में युवाओं, महिलाओं, स्थानीय निकायों, एनसीसी, स्वयं सहायता समूहों, जनप्रतिनिधियों एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। वहीं महाविद्यालयों, विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हो। यह भी कहा कि कार्यक्रमों की जानकारी राज्य स्तर पर साझा की जाए, ताकि अभियान का संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि अभियान का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता का संदेश घर-घर तक पहुंचाना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती को ऐतिहासिक रूप से मनाना है ताकि देश की नई पीढ़ी उनके योगदान और विचारों से प्रेरणा ले सके। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने अपने अदम्य साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति और कौशल से भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाया। मुख्यमंत्री ने कहा सरदार पटेल की कूटनीति और दूरदर्शिता का स्वतंत्र भारत के इतिहास में बड़ा योगदान रहा है।

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पटेल के सपनों को आगे बढ़ाया है। प्रधानमंत्री ने सरदार पटेल के सम्मान में गुजरात के नर्मदा जिले के केवड़िया में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का निर्माण कराया गया जो विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है और भारत की एकता, अखंडता तथा राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। अभियान के तहत राज्य के नागरिक माई भारत पोर्टल पर अपना पंजीकरण करा रहे हैं। इसके अन्तर्गत सोशल मीडिया रील प्रतियोगिता, निबंध लेखन, क्विज जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। राज्य के 13 जिलों में 31 अक्टूबर से 16 नवम्बर के मध्य एकता मार्च का आयोजन होगा। यह एकता मार्च तीन दिन आयोजित होगा। जिसके तहत आठ से 10 किमी पैदल यात्रा होगी। जिसमें कोई भी नागरिक प्रतिभाग कर सकता है। 26 नवंबर से छह दिसंबर तक 152 किमी राष्ट्रीय पदयात्रा करमसद (सरकार पटेल का जन्म स्थान) से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवड़िया तक निकाली जाएगी। इस यात्रा में राज्य के प्रत्येक जिले से 2 युवा प्रतिभाग करेंगे, जिनका चयन माई भारत पोर्टल से होगा। वर्चुअल बैठक में जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, जिलाधिकारी चम्पावत मनीष कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मणिकांत मिश्रा मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने जनता की सुनीं समस्याएं

खटीमा : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अपने दो दिवसीय जनपद भ्रमण के बाद शुक्रवार को बनबसा रवाना होने से पूर्व लोहियाहेड स्थित कैंप कार्यालय पहुंचकर लोगों से मुलाकात की और समस्याएं सुनीं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के निस्तारण हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष अजय मौर्य, नगर पालिका अध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी, दर्जा मंत्री अनिल कपूर, शंकर कोरंगा, फरजाना बेगम, पूर्व विधायक डॉ प्रेम सिंह राणा, जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, जिलाधिकारी चम्पावत मनीष कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मणिकांत मिश्रा, अपर जिलाधिकारी कौस्तुभ मिश्र, एसपी सिटी डॉ उत्तम सिंह नेगी, उप जिलाधिकारी तुषार सैनी सहित अनेक अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

आरोपी पिकअप चालक पर कार्रवाई की मांग उठी

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: टेंपो व पिकअप की आमने-सामने की हुई भिड़ंत में महिलाओं समेत पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें एक घायल महिला के बेटे ने पुलिस को तहरीर देकर आरोपित पिकअप चालक के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है।

ग्राम गुलड़िया निवासी सद्दाम हुसैन ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि बीती 17 सितंबर की अपराह्न करीब 11.30 बजे उसकी मां आलम जहां व कुछ अन्य सवारियां टेंपो में बैठकर काशीपुर से रोशनपुर जा रही थीं। रास्ते में पैगा के निकट एचपी पेट्रोल पंप के सामने मुरादाबाद की ओर से विपरीत दिशा से आ रहे पिकअप के चालक ने तेजी व लापरवाही से चलाते हुए उक्त टेंपो में टक्कर मार दी।

उसका कहना है कि टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि टेंपो में बैठी उसकी मां व चार अन्य सवारियां गंभीर रूप से घायल हो गये। कुछ राहगीरों ने उसकी मां समेत अन्य घायलों को मुरादाबाद रोड स्थित एक निजी हास्पिटल में भर्ती कराया, जहां दो दिन उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी मां को हायर सेंटर रेफर कर दिया। तहरीर में कहा कि अब उसकी मां का उपचार मुरादाबाद के एक अस्पताल में चल रहा है। उसका कहना है कि अब तक उसकी मां के इलाज में तीन से चार लाख रुपये खर्च हो चुके हैं।

ग्राम प्रधानों का वेतन 15 हजार करने की मांग

संवाददाता, बाजपुर

बाजपुर में बीडीओ शेखर जोशी को ज्ञापन सौंपते जनप्रतिनिधि।

अमृत विचार: ग्राम प्रधानों का मानदेय साढ़े तीन हजार से बढ़ाकर 15 हजार रुपये मासिक करने की मांग को लेकर ग्राम प्रधानों ने बीडीओ के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया है।

शुक्रवार को ग्राम प्रधान संघ के अध्यक्ष मनदीप सिंह नरवाल के नेतृत्व में कुछ जनप्रतिनिधि एकत्रित होकर खंडविकास कार्यालय जा पहुंचे और मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन वहां मौजूद खंडविकास अधिकारी शेखर जोशी को सौंपा। ज्ञापन में पंचायत प्रतिनिधियों (ग्राम प्रधानों) का मानदेय 3500 रुपये से बढ़ाकर कम से कम 15 हजार रुपये करने, पंचायतों में मनरेगा अंतर्गत प्रत्येक वर्ष 20 कार्यों की सीमा को समाप्त कर असीमित कार्यों को कराने की अनुमति प्रदान करने, ब्लाक में जरूरत के हिसाब से कर्मचारियों की नियुक्ति करने, पंचायत घरों का सर्वे करवाकर उनका पुनर्निर्माण करवाने समेत कई मांगों को जोर-शोर से उठाया है। साथ ही चेतावनी दी है कि यदि जल्द मांगों का निस्तारण नहीं होता है तो ग्राम प्रधान संघ आंदोलन करने के लिए मजबूर होगा। इस मौके पर पूर्व ग्राम प्रधान लियाकत अली, ग्राम प्रधान अराज सिंह सिद्धू, जावेद अली मौजूद रहे।

सरकारी अस्पताल में घायलों की जानकारी हासिल करती पुलिस।

कार की चपेट में आकर चार श्रमिक हुए घायल

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार: नेशनल हाईवे-74 पर तेज रफ्तार कार की चपेट में आकर चार श्रमिक गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें आनन-फानन में सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां से चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार देकर हायर सेंटर रेफर कर दिया है।

वार्ड-सात मोहल्ला संजय कॉलोनी निवासी 60 वर्षीय ओम सिंह, 32 वर्षीय महेश पुत्र रामकृपाल, वार्ड-सात मोहल्ला आदर्शनगर निवासी 32 वर्षीय अजय कुमार पुत्र महेंद्र सिंह, वार्ड-11 मोहल्ला पहाड़ी कालोनी निवासी 28 वर्षीय असलम पुत्र नौशाद पल्लेदारी का काम करते हैं। बताया जाता है कि शुक्रवार को चारों बाइकों पर एक फार्म हाउस में धान तौल करने के लिए जा रहे थे। इसी बीच राष्ट्रीय राजमार्ग-74 पर ग्राम विचपुरी के निकट तेज रफ्तार कार चालक ने उन्हें चपेट में ले लिया, जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को आनन-फानन में ही सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया,जहां से चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार देकर दो युवकों को हायर सेंटर रेफर कर दिया है।

फफूंदी लगी मिठाई बेचने का आरोप पूर्णतः निराधार बताया

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: जसपुरखुर्द, कुण्डेश्वरी रोड स्थित मिठाई की दुकान ''कुमाऊं स्वीट्स'' के स्वामी मो. नवी ने अपनी दुकान पर अधिवक्ता अश्वनी कुमार सैनी द्वारा सोशल मीडिया पर लगाए गए फफूंदी लगी मिठाई बेचने और जनता को ठगने के आरोपों को पूर्णतः निराधार व मानहानिकारक बताया है।

शुक्रवार को कुमाऊं स्वीट्स के स्वामी मो. नवी द्वारा प्रेस वार्ता कर बताया कि उनकी फर्म की एक ईमानदार, बेदाग और स्वच्छ छवि की ख्याति है। उन्होंने कहा कि उनकी फर्म के विरुद्ध आज तक किसी भी व्यक्ति द्वारा कोई शिकायत नहीं की गई है। बताया कि अश्वनी कुमार सैनी ने 22 अक्टूबर को अपने फेसबुक पर वीडियो पोस्ट कर आरोप लगाया कि उन्होंने किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से उनकी दुकान से मिठाई मंगवाई थी, जिसमें फफूंदी लगी हुई थी। सैनी ने वीडियो में कहा कि दुकान ने जनता को ठगा है। नवी ने इन सभी आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि अश्वनी कुमार सैनी न तो कभी उनकी फर्म पर मिठाई लेने आए और न ही उनके पास मिठाई खरीदने का कोई बिल है। उन्होंने आशंका व्यक्त की है कि अश्वनी कुमार सैनी ने उनकी फर्म को बदनाम करने की नीयत से किसी अन्य स्थान से खाली डिब्बा लेकर उसमें गंदा पदार्थ भरकर, केवल डिब्बे का इस्तेमाल करते हुए उनकी फर्म को फंसाने का षड्यंत्र किया है। कहा कि अश्वनी कुमार सैनी ने अपनी पोस्ट में ''विशेष समुदाय'' का नाम लेकर समाज में वैमनस्य भड़काने का भी प्रयास किया है।

झनकईया क्षेत्र में धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन देने का आरोप लगा

संवाददाता, खटीमा

● पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की

अमृत विचार: थाना झनकईया क्षेत्र के एक घर में धर्म परिवर्तन के लिए उकसाने के मामले के उजागर होने पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को एक व्यक्ति ने तहरीर सौंपकर बताया कि कुछ लोग अवैध रूप से चर्च बनाकर लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन दे रहे हैं।

पकड़िया निवासी जितेन्द्र विश्वकर्मा ने पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा कि वह अनुसूचित जाति का व्यक्ति है। तहरीर में कहा है कि उसे शुक्रवार को करीब 10 बजे झनकईया क्षेत्र में सिधारी प्रसाद के घर में उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड से आये लोगों द्वारा अवैध रूप से चर्च का निर्माण कर, अनुसूचित जाति के लोगों को इसाई धर्म का गुणगान कर, उसे सर्वोत्तम धर्म बताकर तरह-तरह के प्रलोभन दिए जा रहे हैं । जब मैं उससे व्यक्तिगत मिला तो उसने मुझे भी प्रलोभन दिया कि तुम भी धर्म परिवर्तन कर लो जिससे तुम्हारा परिवार सुखी जीवन व्यतीत कर सके। इसके अतिरिक्त उसके द्वारा अपने धर्म से सम्बन्धित एक पुस्तक भी दिखायी और कहा कि आप इस पुस्तक का अध्ययन करोगे तो इसाई धर्म की खूबियों के बारे में आपको पूर्ण जानकारी हासिल हो जायेगी और आपका जीवन धन्य हो जायेगा। जब मैंने प्रश्नगत व्यक्ति का विरोध किया तो वह आग बबूला हो गया और भद्दी भद्दी गाली देने लगा तथा जान से मारने को उतारू हो गया। उस समय विशाल सिंह खोलिया, आकाश राठौर एवं प्रदीप सिंह मौजूद थे। पीड़ित ने रिपोर्ट दर कर कार्रवाई करने की मांग की। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

बाजपुर में हादसे के बाद मौके पर खड़ी क्षतिग्रस्त कार।

ब्रीफ न्यूज

19 लीटर कच्ची शराब संग तस्कर गिरफ्तार

काशीपुर : पुलिस ने एक शराब तस्कर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 19 लीटर कच्ची शराब बरामद कर उसे न्यायालय में पेश किया है। टांडा चौकी पुलिस ने ढकिया गुलाबो रोड पर रायपुर गांव के पास एक संदिग्ध व्यक्ति को रोक उसकी तलाशी के दौरान उसके पास से बरामद एक प्लास्टिक के कट्टे में 57 थैली कुल 19 लीटर कच्ची शराब बरामद की। पूछताछ में पकड़े गये व्यक्ति की पहचान थाना ठाकुरद्वारा के ग्राम असलेमपुर पोस्ट गोपीवाला निवासी इंद्रजीत सिंह के रूप में हुई।

परचून का खोखा पलटकर नुकसान पहुंचाने का आरोप

खटीमा : ग्राम मझोला निवासी इमरान ने सत्रहमील पुलिस चौकी प्रभारी को तहरीर सौंपकर बताया कि नौसर के एक व्यक्ति ने मझोला पुल के पास स्थित उसके परचून के खोखे को पिछले चार-पांच दिनों से बेवजह हटाने का प्रयास कर रहा था जबकि खोखा उसकी जमीन पर नहीं है। पीड़ित का आरोप है कि 20 अक्टूबर को फोन कर खोखा न हटाने पर जान से मारने की धमकी दी गई। यह भी कहा है कि गुरुवार की रात्रि लगभग 11.30 बजे वह खोखा बंद कर पास के ही गन्ना कोल्हू पर गया था तभी उसने देखा कि बोलेरो से अपने साथियों के साथ आए उस व्यक्ति ने उसके खोखे को धक्का देकर खाई में गिरा दिया। जैसे ही पीड़ित खोके के पास पहुंचा तो चारों आरोपी बोलेरो में सवार होकर फरार हो गए। वहीं पीड़ित ने रिपोर्ट दर्ज कर मामले में उचित कार्रवाई की मांग की है।

ब्लाइंड मर्डर : एक हफ्ते बाद सुलझी अधजली लाश की गुत्थी

काशीपुर की सीमा खातून का था शव, हरिद्वार पुलिस ने आरोपी सलमान व उसकी महिला मित्र को पकड़ा, प्रेम त्रिकोण रही हत्याकांड की वजह

संवाददाता,रुद्रपुर/देहरादून

अमृत विचार : 18 अक्टूबर को थाना श्यामपुर गांव गाजीवली हाईवे किनारे मिले अधजले शव का पर्दाफाश करते हुए हरिद्वार पुलिस ने हत्याकांड में शामिल ट्रक चालक व एक महिला मित्र को गिरफ्तार कर लिया है। जबकि मृतक अधजली महिला की पहचान काशीपुर निवासी सीमा खातून के नाम से हुई है। पुलिस ने अभियुक्तों को न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है। हत्याकांड की वजह प्रेम त्रिकोण है।

एसएसपी हरिद्वार प्रभेद्र डोभाल ने बताया कि 18 अक्टूबर को थाना श्यामपुर के गांव गाजीवली हाईवे किनारे स्थित एक खाली प्लाट में एक अज्ञात महिला का अधजला शव पड़ा मिला था। प्रथम दृष्टया हरिद्वार पुलिस ने ब्लाइंड मर्डर मान कर हत्याकांड की तफ्तीश शुरू कर दी और सीओ व थानाध्यक्ष श्यामपुर के साथ कई टीमों का गठन भी कर दिया। घटनास्थल के सैकड़ों सीसीटीवी खंगालने के बाद यह पता चला कि अनसुलझी व अधजला शव काशीपुर निवासी सीमा खातून का है,क्योंकि 17 अक्टूबर को ट्रक चालक से झगड़ा होने के बाद वह ट्रक में बैठ कर काशीपुर से निकली थी। सीसीटीवी फुटेज और मैनुअल साक्ष्यों के आधार पर 23 अक्टूबर को मिली सूचना पर जब गठित टीम ने रसियाबड के समीप बंद बॉडी कंटेनर संख्या यूके 18 सीए 4788 के साथ चालक सलमान खां को दबोच लिया। पूछताछ में अभियुक्त ने बताया कि सीमा खातून का इस्तेमाल कर वह उसे छोड़कर दूसरी महिला से शादी करना चाहता था, लेकिन सीमा खातून को भनक लग गई और उसने शादी का दबाव बनाया। जिसके बाद उसने एक महिला के साथ मिलकर 17 अक्टूबर की रात्रि को ही चुन्नी से गला दबाकर हत्या कर दी और डीजल डालकर पहचान मिटाने का प्रयास भी किया।

हत्याकांड के आरोपियों के साथ हरिद्वार पुलिस टीम। ● अमृत विचार

काशीपुर की रहने वाली है महिला

रुद्रपुर : हत्याकांड में हत्या की पटकथा लिखने वाली महिला अभियुक्त मझरा लक्ष्मीपुर पट्टी काशीपुर की रहने वाली है और खुद भी शादीशुदा है। चर्चा है कि महिला का अपने पति से विवाद चल रहा है और पति से दूर रहती है,चूंकि अभियुक्त महिला सलमान से मोहब्बत कर बैठी और सीमा खातून को पहचानती भी थी। यही कारण है कि 17 अक्टूबर को सलमान काशीपुर सीमा से नहीं,बल्कि आरोपी महिला से मिलने आया था।

खुलासे में लगे 19 पुलिसकर्मी

रुद्रपुर : काशीपुर की रहने वाली सीमा का शव श्यामपुर थाना इलाके में मिलने के बाद हत्याकांड वास्तव में ब्लाइंड मर्डर हुआ था। यही कारण है कि एसएसपी प्रमेंद्र डोभाल ने एसपी व सीओ के अलावा पर्दाफाश के लिए प्रभारी सीआईयू नरेंद्र बिष्ट, थानाध्यक्ष श्यामपुर मनोज शर्मा के अलावा तीन दरोगा और तेरह पुलिस कर्मियों की कई टीमें गठित की और हल्का सा सुराग मिलते ही पुलिस ने पर्दाफाश कर दिया।

आरोपी महिला ने लिखी हत्या की पटकथा

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार : सीमा खातून हत्याकांड को अंजाम देने के बाद जहां चालक सलमान बेफ्रिक था वहीं अभियुक्त महिला भी सलमान को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार थी। 17 अक्टूबर को सीमा को जब यह पता चला कि सलमान उसका शारीरिक दोहन कर चुका है और अब दूसरी महिला से शादी करना चाहता है तो उसने काशीपुर में ही चालक से हाथापाई की। बस क्या था महिला अभियुक्त ने उसी वक्त सीमा को रास्ते से हटाने की पटकथा लिख डाली थी।

ब्लाइंड मर्डर के खुलासे में खुद एसएसपी प्रमेंद्र डोभाल ने बताया कि मृतक सीमा और चालक सलमान पिछले कई वर्षों से एक दूसरे से प्रेम करते थे, लेकिन सलमान को दूसरी महिला पसंद हो चुकी थी और वह सीमा से पीछा छुड़ाना चाहता था। यह भी बताया कि दूरदराज सामान छोड़ने के दौरान भी सीमा बार-बार फोन कर चालक की लोकेशन पूछती रहती थी और शादी का दबाव भी बना रही थी। यही नहीं चालक से खर्चे के लिए पैसों की डिमांड करना सीमा की आदत बन चुकी थी। जैसे ही सीमा खातून को यह भनक लगी कि 17 अक्टूबर को सलमान काशीपुर आया है तो उसने सरेराह उसके साथ हाथापाई कर डाली और उस वक्त अभियुक्त महिला भी ट्रक में बैठी हुई थी। बस क्या था महिला के ही इशारे पर सलमान सीमा को यह कहकर साथ ले गया कि वह हरिद्वार पहुंचकर शादी कर लेगा और ट्रक में बिठा लिया। 17 अक्टूबर की देर रात्रि जैसे ही ट्रक केवीआर तिराहे पर पहुंची। वैसे ही सुनसान इलाका देखकर सलमान चुन्नी से गला दबाता रहा और महिला हाथ-पैर पकड़े रही।

घटनास्थल को सीलबंद करवाते एसएसपी प्रमेंद्र डोभाल।

सीमा खातून से थी कट्टर दुश्मनी

रुद्रपुर : खुलासे में यह भी पता चला कि जहां महिला अभियुक्त हत्याकांड के अभियुक्त चालक सलमान को दिल दे बैठी थी। वहीं अभियुक्त महिला मृतक सीमा से अपना बदला भी लेना चाहती थी,क्योंकि सीमा खातून की शिकायत पर ही पुलिस ने महिला अभियुक्त के बेटे को एनडीपीएस के तहत जेल भिजवाया था। तभी से सीमा खातून अभियुक्त महिला की कट्टर दुश्मन बन गई थी।

एएनपीआर कैमरे से हुई पहचान

रुद्रपुर : ब्लाइंड मर्डर का पर्दाफाश करने के लिए जहां हरिद्वार पुलिस को 400 से अधिक सीसीटीवी कैमरों को खंगालना पड़ा। अधजले शव की पहचान दिलाने में एएनपीआर कैमरों की भूमिका अहम रही, क्योंकि वाहन की पहचान इसी कैमरे से हुई थी। सीमा के साथ आखिरी बार अभियुक्त महिला को ही ट्रक में देखा गया था। हरिद्वार पुलिस ने जब काशीपुर आकर पूछताछ की तो अहम सुराग मिल चुका था।

नानकमत्ता में पुरानी रंजिश में युवक की पीट-पीटकर हत्या

संवाददाता, नानकमत्ता

अमृत विचार: पुरानी रंजिश में एक युवक की बेरहमी से पीट पीट कर हत्या कर दी गई। जबकि परिवार के तीन अन्य लोग घायल हैं। पुलिस ने तहरीर के आधार पर पांच लोगों के विरुद्ध नामजद मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। नानकमत्ता के हरीनगर सिद्धा निवासी नितिन कुमार अरोड़ा (45) का पास के ही रहने वाले विश्वास से पुरानी रंजिश चल रही थी। आरोप है विश्वास ने नितिन अरोड़ा की पुत्रवधू की अश्लील फोटो फेसबुक में अपलोड कर दी। गुरुवार देर रात्रि जब नितिन अरोड़ा घर पहुंचा तो पुत्रवधू ने इसकी जानकारी दी। इस पर नितिन अरोड़ा और उसका एक किराएदार आरोपी के घर पहुंचे और फोटो हटाने की बात कही।

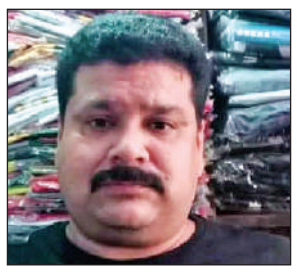

नितिन कुमार अरोड़ा। ● फाइल फोटो

● तीन अन्य लोग घायल, वारदात के बाद फरार हुए आरोपी

थाने में सौंपी तहरीर के आधार पर नामजद विशाल विश्वास, अनीश विश्वास, विक्रम विश्वास, उनका पिता विद्युत विश्वास और उसकी मां ने एक राय होकर लाठी डंडों से नितिन कुमार अरोड़ा और दलजीत सिंह पर जानलेवा हमला कर दिया।

शोर सुनकर नितिन अरोड़ा की पुत्रवधू व पुत्र बीच बचाव करने पहुंचे तो उन पर भी हमला कर दिया। नितिन अरोड़ा के सिर पर गम्भीर चोट आने से वह जमीन पर गिर पड़ा। यह देख आरोपी फरार हो गए। आनन-फानन में नितिन को सीएचसी ले जाया गया। जहां से डॉक्टरों ने उसे रुद्रपुर रेफर कर दिया। रुद्रपुर में डॉक्टरो ने उसे मृत घोषित कर दिया। घायल पुत्रवधू व पुत्र और किरायेदार दलजीत सिंह को इलाज के बाद छुट्टी दे दी है। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस ने पुत्रवधू सोनी की तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत कर फरार आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

हादसे में सिडकुल कर्मी की मौत

रुद्रपुर: 19 अक्टूबर को आवारा पशु से टकराकर घायल हुए सिडकुल कर्मी ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने घटना की जानकारी लेने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

जानकारी के अनुसार झा कॉलोनी पंतनगर निवासी 20 वर्षीय सचिन कुमार सिडकुल की एक ऑटो कंपनी में काम करता था। 19 अक्टूबर को वह रोजमर्रा की भांति बाइक से अपनी ड्यूटी जा रहा था कि तभी अचानक एक पशु सामने आ गया और बाइक सवार युवक छिटककर सड़क पर जा गिरा और सिर में गंभीर चोट लगने के कारण घायल हो गया। जिला अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया। शुक्रवार की सुबह प्राइवेट अस्पताल में युवक ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

गूलरभोज की बेटी खुशबू डोगरा बनी सहायक समीक्षा अधिकारी

संवाददाता, गूलरभोज

अमृत विचार: उत्तराखंड पीसीएस परीक्षा में मैरिट लिस्ट में आने पर खुशबू डोगरा पुत्री ओमप्रकाश डोगरा का माध्यमिक शिक्षा विभाग में सहायक समीक्षा अधिकारी बनने पर परिजनों व क्षेत्र का नाम रोशन किया। खुशबू डोगरा ने अपनी उपलब्धि के लिए माता-पिता व गुरुजनों को श्रेय दिया। जनप्रतिनिधियों ने उनके आवास कोपा कृपाली जाकर परिजनों व खुशबू डोगरा को सम्मानित कर बधाई दी।

शुक्रवार को कोपा कृपाली डोगरा निवास में आयोजित सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता मोहन सिंह पानू ने कहा कि खुशबू डोगरा किसान परिवार में जन्मी अपनी मेहनत व लगन से मुकाम हासिल किया है। क्षेत्र के विद्यार्थियों को उनसे सीख लेनी चाहिए। भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष नरेश हुड़िया ने कहा गदरपुर ब्लॉक की छात्राएं हर क्षेत्र में अव्वल रहती है। इस दौरान जनप्रतिनिधियों ने खुशबू डोगरा के साथ माता उषा डोगरा, पिता ओमप्रकाश डोगरा, दादी शीला डोगरा सहित परिजनों को सम्मानित कर बधाई दी। इस मौके पर बरीराई जिपंस भावना कोरंगा, पूर्व छात्र संघ नेता पुष्कर सिंह कोश्यारी, व्यापार मंडल अध्यक्ष कुलदीप सिंह रघुवंशी, भाजपा नेता संजीव भटेजा, समाजसेवी लवेंद्र डोगरा, सभासद नंदन सिंह कोश्यारी, योगेश पानू आदि मौजूद रहे।

गूलरभोज की कोपा कृपाली निवासी खुशबू डोगरा को सम्मानित करते जनप्रतिनिधि।

हादसे के मामले में हुई रिपोर्ट दर्ज

खटीमा: पुलिस ने कैंटर की चपेट में आकर युवक की मौत के मामले में कैंटर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। चार दिन पूर्व हुई इस घटना में युवक की मौत हो गई थी जबकि दो सगी बहनों गंभीर रूप से घायल हो गई थी।

कुटरा निवासी जानकी राणा ने पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा है कि 20 अक्टूबर को रात्रि करीब 11 बजे उसका भाई विवेक राणा स्कूटी से नानकमता से घर आ रहा था। उसके साथ खेतलसंडा मुस्ताजर निवासी प्रकाश सिंह राणा की पुत्रियां अंशिका और अनाक्षी भी थी। वह बानूसी पहुंचे ही थे कि खटीमा की तरफ से बड़ी तेजी और लापरवाही से जा रहे कैंटर के चालक ने गलत दिशा में आकर स्कूटी में टक्कर मार दी। जिसमें उसके भाई विवेक राना की मौके पर मृत्यु हो गई तथा अंशिका और अनाक्षी राना गम्भीर रूप से घायल हो गई।

दिनेशपुर में छठ घाट पर रंग-रोगन करते पूर्वांचल जन जागरण समिति के सदस्य।

उद्घाटन मैच में सर्राफ ने सिटी कान्वेंट की टीम को 3-0 से हराया

संवाददाता, खटीमा

अमृत विचार: शौर्य चक्र विजेता शहीद नायक मनोज सिंह रुमाल की स्मृति में 14वें फुटबॉल महाकुम्भ का उद्घाटन मैच सर्राफ पब्लिक स्कूल ने जीतकर अगले चक्र में प्रवेश कर लिया है।

उद्घाटन मैच के लिए मैदान में उतरी सर्राफ पब्लिक स्कूल और सिटी कान्वेंट स्कूल की टीम के खिलाड़ियों से मुख्य अतिथि संजू ज्याला ने परिचय प्राप्त किया। इसके साथ ही शुरू हुए मैच में सर्राफ पब्लिक स्कूल की टीम सिटी कान्वेंट स्कूल पर भारी पड़ी और उसने इकतरफा मैच में सिटी कॉन्वेंट स्कूल को 3-0 से हराकर दूसरे चक्र में प्रवेश कर लिया। इस अवसर पर भरत शर्मा, गौरव नेगी, गोपाल बोरा, धीरेन्द्र भट्ट, चन्दर थापा, महेश ज्याला आदि मौजूद रहे। आयोजक हरीश रुमाल ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

खटीमा में फुटबॉल मैच में गोल करने की जद्दोजहद करते खिलाड़ी। ● अमृत विचार

नहाय-खाय के साथ आज से छठ पूजा शुरू

संवाददाता, दिनेशपुर

- नगर के साथ बुक्सौरा, जयनगर, खटोला व गूलरभोज में पूजा स्थलों पर किया जा रहा रंगरोगन का कार्य
- 27-28 को होगी पूजा, आज होगी खरीदारी, बाजार में लौटेगी रौनक

अमृत विचार: महापर्व छठ पूजा को लेकर शनिवार को नहाय व खाय के साथ पूर्वांचल समाज के लोगों ने अपनी आस्था को अटूट बनाते हेतु नियमों का पालन करना शुरू कर दिया है। वहीं 27 अक्टूबर को पूजा की तैयारी शुरू कर दी है। पूजा को लेकर शनिवार को बाजार में रौनक लौट की उम्मीद है। जिसे लेकर पूर्वांचल समाज के लोगों सहित प्रशासन ने भी छठ स्थल पर सभी तैयारियां पूर्ण कर ली है।

वरिष्ठ समाजसेवी केएन तिवारी ने बताया कि मान्यता है कि छठ व्रत करने से संतान की प्राप्ति, संतान की कुशलता, सुख- समृद्धि, एवं लंबी आयु प्राप्त होती है। 25 अक्टूबर को नहाय -खाय, 26 अक्टूबर को खरना के साथ व्रतधारी महिलाएं 36 घंटे का निर्जला व्रत रखेंगी। 27 अक्टूबर को छठ पर्व पर श्रद्धालु डूबते सूर्य को अर्घ्य देंगे व 28 अक्टूबर को उगते सूर्य को अर्घ्य देकर पूजा के विधिवत समापन पर प्रसाद वितरण के बाद अटूट भंडारा के साथ संपन्न किया जाएगा।

छठ पूजा के लिए नगर के वार्ड-8 गदरपुर रोड छठ घाट के साथ बुक्सौरा, जयनगर, खटोला व गूलरभोज में छठ स्थलों पर साफ- सफाई के साथ सजाया गया है। 27 अक्टूबर की रात्रि संस्कृतिक कार्यक्रमों व जागरण का आयोजन भी किया गया है। इस मौके पर पूर्वांचल जन जागरण समिति सदस्य अनिल मिश्रा, मुकेश कुशवाह, बृजेश तिवारी, प्रेम कनौजिया, वासुदेव यादव, सुरेश पासवान आदि मौजूद रहे।

तैयारी

साफ सफाई, प्रकाश व्यवस्था सहित अन्य व्यवस्थाओं को लेकर अधिकारियों से की वार्ता

छठ घाटों का भाजपा नेता संजीव व पूर्व विधायक शुक्ला ने किया निरीक्षण

संवाददाता, किच्छा

अमृत विचार: वरिष्ठ भाजपा नेता संजीव कुमार सिंह ने विधानसभा अंतर्गत तमाम क्षेत्र में छठ घाटों पर पहुंच कर साफ सफाई, प्रकाश व्यवस्था, सुरक्षा एवं श्रद्धालुओं के आवागमन की स्थिति का निरीक्षण किया। भाजपा नेता संजीव सिंह ने छठ पर्व पर राजकीय अवकाश घोषित किए जाने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया।

भाजपा नेता संजीव सिंह ने कहा कि भक्ति और विश्वास के प्रतीक छठ पर्व दिव्यता से परिपूर्ण होगा। कहा कि छठ का पर्व देश भर की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान का प्रतीक है तथा छठ मैया की आराधना, लोक आस्था, शुद्धता और अनुशासन का प्रतीक छठ का पर्व सामाजिक समरसता और जन भागीदारी का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार का उद्देश्य है कि हर श्रद्धालु बिना किसी परेशानी के अपनी पूरी श्रद्धा, अवस्था और विश्वास के साथ पूजा अर्चना कर सके। इसके लिए छठ घाटों की साफ सफाई के साथ ही छठ पर्व की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। इस मौके पर धनंजय सिंह, नवीन सिंह, कमलेश कुमार, चंदन कुमार, वीरेंद्र वर्मा, राजकुमार, सुनील कुमार, अजय सिंह, विपिन कुमार आदि मौजूद रहे।

किच्छा में छठ घाट का निरीक्षण करते भाजपा नेता संजीव सिंह।

इधर पूर्व विधायक राजेश शुक्ला ने भी निकटवर्ती ग्राम आनंदपुर, राघव नगर, इंदरपुर, कनक पुर, प्रतापपुर सहित तमाम क्षेत्रों में छठ घाटों का भ्रमण किया और छठ पूजा समितियों से मुलाकात कर सफाई एवं प्रकाश व्यवस्था की जानकारी हासिल की।

इस दौरान उन्होंने छठ घाट पर चल रहे सफाई कार्य में स्वयं श्रमदान कर समिति सदस्यों का उत्साह वर्धन किया। उन्होंने नगर एवं ग्राम पंचायत के अधिकारियों से दूरभाष पर वार्ता कर छठ पर्व से पूर्व सभी घाटों की सफाई, प्रकाश व्यवस्था एवं सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित करने को लेकर चर्चा की। मौके पर धीरेंद्र शाही, रामपाल यादव, वीरेंद्र यादव, जितेंद्र गौतम, अखिलेश यादव, शिवकुमार यादव, परमेश्वर राजभर, नरेंद्र मणि त्रिपाठी, सावित्री देवी, बृजेश यादव आदि मौजूद रहे।

बैगुल नदी के तट पर कराया छठ घाट का निर्माण

सितारगंज, अमृत विचार : सूर्य उपासना के महापर्व छठ पूजा से पहले बैगुल नदी के तट पर छठ घाट का निर्माण किया गया है। वहीं, रंग-रोगन और रेलिंग के कार्य के बाद छठ घाट पूरी तरह से तैयार हो जाएगा। पूर्वांचल के लोग सालों से बैगुल नदी के तट पर छठ पूजा करते हैं। नदी के तटबंध को मजबूत करने का कार्य होने के बाद लोगों ने कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा से छठ घाट निर्माण की मांग की थी। इस पर कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा ने छठ महापर्व से पहले बैगुल नदी के दोनों ओर करीब 26 छठ बेदी का निर्माण कार्य प्रारंभ कराया था। जो अब बनकर तैयार हो गया है। वहीं, अब केवल रंग-रोगन और रेलिंग का कार्य ही बचा है। पूर्व जिला पंचायत सदस्य उदय राणा ने कहा कि मंत्री बहुगुणा ने छठ घाट का निर्माण कराकर पूर्व समाज के लोगों की आस्था का सम्मान किया है। घाट का निर्माण होने से न सिर्फ सामाजिक एकता को मजबूती मिलेगी बल्कि क्षेत्र का सांस्कृतिक विकास भी होगा। वहीं, बीडीसी सदस्य अजय कठायत ने कहा कि कई साल से लोग यहां छठ मईया की पूजा कर रहे हैं। वहीं, अब पक्का छठ घाट के निर्माण होने से लोगों को पूजा करने में सुविधा होगी। इस मौके पर अवतार सिंह चीमा सहित अन्य लोग उपस्थित रहें।

सितारगंज में बैगुल नदी के तट पर निर्मित छठ घाट।

अमृत विचार

हल्द्वानी , शनिवार,25 अक्टूबर 2025

बाजपुर में मंडी समिति सचिव से वार्ता करते किसान। ● अमृत विचार

बाजपुर के कृषि उत्पादन मंडी समिति परिसर में खड़ीं धान से लदी ट्रॉलियां। ● अमृत विचार

क्रय केंद्रों पर लड़खड़ाई तौल व्यवस्था, भड़के किसान

कच्चा आढ़तियों पर धान खरीद में मनमानी का आरोप, कृषि उत्पादन मंडी समिति परिसर में धान से लदी सैकड़ों ट्रॉलियां खड़ीं

संवाददाता, बाजपुर

अमृत विचार : क्रय केंद्रों पर लड़खड़ाई धान तौल व्यवस्था की वजह से कृषि उत्पादन मंडी समिति परिसर में सैकड़ों की संख्या में धान से लदी ट्रॉलियां खड़ी हो गई हैं। वहीं कच्चा आढ़तियों पर धान खरीद में मनमानी का आरोप लगा आक्रोशित किसानों ने अनाज मंडी में आरएफसी के क्रय केंद्र पर हंगामा किया। सूचना पर हल्द्वानी से पहुंची आरएफसी प्रभारी लला मिश्रा एवं एसएमओ बाजपुर रेनु पांडेय ने किसानों व व्यापारियों से कई घंटे वार्ता कर सामन्जस्य बैठाया गया। इन अधिकारियों ने सरकार से निर्धारित समर्थन मूल्य पर ही किसानों की उपज को नियमानुसार खरीदने का भरोसा दिलाया है।

पिछले कई दिनों से क्रय केंद्रों पर धीमी गति से धान तौल होने एवं सरकार के लाइसेंस धारक कच्चा आढ़ती व्यापारियों द्वारा धान खरीद में मनमानी का आरोप लगा बड़ी संख्या में किसान शुक्रवार को भारतीय किसान यूनियन के प्रदेशाध्यक्ष कर्म सिंह पड्डा की अगुवाई में एकत्र होकर कृषि उत्पादन मंडी समिति परिसर में संचालित आरएफसी के क्रय केंद्र पर जा पहुंचे और लड़खड़ाई धान तौल की व्यवस्था पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए जमकर हो-हल्ला किया गया। उनका कहना था कि कच्चा आढ़तियों द्वारा औने-पौने दामों में बाहर से धान खरीदकर पोर्टल में भरा जा रहा है। हमारी मांग है कि सरकार द्वारा घोषित प्रत्येक कांटे पर रोजाना निर्धारित 400 क्विंटल धान की खरीद क्रय केंद्रों के माध्यम से करवाई जाए या फिर कच्चा आढ़ती अपना सरकार से जारी कोटा आरएफसी को वापस करे। प्रदेशाध्यक्ष कर्म सिंह पड्डा ने कहा कि धान खरीद की व्यवस्था बनवाना सरकार का काम है, लेकिन राइस मिलर्स एवं कच्चा आढ़ती की मनमानी की वजह से किसान अपनी उपज लेकर मंडी में कई-कई दिन तक खड़े होने को मजबूर हैं। व्यापारियों की अपनी समस्या हो सकती है, लेकिन किसान की दिक्कतें कम नहीं हैं। हमें ऐसा लग रहा है कि सरकार किसानों का धान नहीं खरीदना चाहती है। प्रदेश उपाध्यक्ष अजीत प्रताप सिंह रंधावा ने कहा कि इस साल धान के बाजार और सरकारी मूल्य में बहुत बड़ा अंतर है, जिसके चलते बड़ी योजना के तहत किसान को लूटने की मंसा से काम किया जा रहा है। हमारी एक ही मांग है कि सरकार ने जो समर्थन मूल्य निर्धारित किया है उसी के तहत किसान की उपज को खरीदने की व्यवस्था बनाई जाए, यदि यह व्यवस्था नहीं बनेगी तो किसान यूनियन उग्र आंदोलन करेगी। प्रदेश सचिव बिजेंद्र डोगरा ने कहा कि मंडी की सारी सड़कें धान से लदी ट्रालियों से भरी पड़ी हैं। सैकड़ों किसान अपनी उपज लेकर मंडी में खड़ा है। सरकार के प्रतिनिधि यहां पर आते हैं तो किसानों से कुछ और बात करते हैं तथा राइस मिलर्स से जाकर कुछ और बात करते हैं। हर बार किसानों के साथ यही खेल होता है, जिससे भ्रम की स्थिति बनाई हुई है।

उन्होंने कहा कि सरकार हमें यह बताए कि किसानों का शोषण क्यों किया जा रहा है। ब्लाक अध्यक्ष प्रताप सिंह संधू ने कहा कि आज कास्तकार पीछे जा रहा है, जबकि व्यापारी और सर्विस करने वाले लोग आगे बढ़ रहे हैं। पूरे जनपद में खरीद की व्यवस्था लड़खाई हुई है। जल्द ही सिस्टम में सुधार नहीं हुआ तो किसान धान से लदी अपनी ट्रालियां मुख्य चौराहों पर खड़ी करके जाम लगाने को विवश होंगे। वहीं किसानों के हंगामे की जानकारी मिलने पर दोपहर बाद करीब एक बजे आरएफसी प्रभारी लता मिश्रा व एसमएमओ बाजपुर रेनु पांडेय भी बाजपुर पहुंच गईं और कई घंटे तक किसानों व व्यापारियों से वार्ता कर तय किया गया कि मंडी परिसर में खड़ीं धान से लदी सभी ट्रालियां कच्चा आढ़तियों के यहां भेजा जाएगा और इसके अलावा भी आगामी दिनों में किसान की उपज को सरकार से निर्धारित समर्थन मूल्य पर नियमानुसार खरीदा जाएगा। इस मौके पर प्रभारी तहसीलदार देवेंद्र सिंह बिष्ट, मंडी सचिव कैलाश चंद्र शर्मा, एसएमआई नलनीकांत सहित बड़ी संख्या में किसान एवं अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

सितारगंज मंडी गेट पर धरने पर बैठे किसान। ● अमृत विचार

नाराज किसानों ने मंडी गेट पर लगाया ताला

सितारगंज : कच्चे आढ़तियों के धान नहीं खरीदने से नाराज किसानों ने मंडी गेट पर ताला लगा दिया। वहीं, मंडी में करीब 200 धान की ट्रॉली खड़ी कर आवाजाही बाधित कर दी। साथ ही, सैकड़ों किसान धरने पर बैठ गए। शुक्रवार को धरने पर बैठे किसानों ने बताया कि कच्चे आढ़तियों ने 63 धान की ट्रॉली को खरीदने के बाद बाकी किसानों को लौटा दिया। उन्होंने बताया कि वह पिछले पांच दिनों से धान ख़रीद का इंतजार कर रहे हैं। लेकिन उनका धान नहीं खरीदा जा रहा है। किसानों ने बताया कि पहले दीपावली के कारण चार दिन तौल नहीं हुई। फिर, शुक्रवार को कच्चे आढ़तियों ने केवल 63 धान की ट्रॉली ख़रीद कर तौल बंद कर दी। वहीं, तौल बंद करने से किसान आक्रोशित हो गए। उन्होंने मंडी गेट पर ताला लगा कर धरना शुरू कर दिया। इधर, धान नहीं ख़रीदने पर किसानों ने मुख्य चौराहे पर धान की ट्राली पलटने की चेतावनी दे दी।

आरएमओ से वार्ता के बाद माने किसान

सितारगंज : किसानों ने बताया कि सरकार ने कच्चे आढ़तियों को एमएसपी पर धान खरीदने के लाइसेंस दिया है। सरकार उन्हें धान की तुलवाई, परिवहन आदि का खर्च भी दे रही है। लेकिन फिर भी वह किसानों के धान नहीं खरीद रहे हैं। किसान नेताओं ने आरोप लगाया कि किसानों का धान औने-पौने में खरीदा जा रहा है। वहीं, यूपी के किसानों से सस्ते में खरीदे को ऑनलाइन पोर्टल में चढ़ाया जा रहा है। वहीं, मामले में किसानों ने अधिकारियों से वार्ता की। उन्होंने बताया कि आरएमओ लता मिश्रा शनिवार को सितारगंज आएंगी। वहीं, उनसे वार्ता के बाद किसानों ने सड़क पर धान पलटने का फैसला स्थगित कर दिया।वहां किसान नेता नवतेज पाल सिंह, गुरसेवक सिंह, दिलबाग सिंह ने तहसीलदार हिमांशु जोशी, एसएमओ विनय चौधरी, मंडी सचिव विनोद पलड़िया, एसएसआई विक्रम सिंह धामी उपस्थित रहे।

धान बिक्री को लेकर केंद्र पर जमा किसान।

खटीमा में धान की फसल बेचने को लेकर मारामारी

- नमी, क्वालिटी के नाम पर की जा रही कटौती
- धान क्रय केंद्रों में लेबर, बारदाने का बताया जा रहा भाव

संवाददाता, खटीमा

अमृत विचार: निर्धारित दामों पर धान बिक्री को लेकर किसानों को खासी मारामारी का सामना करना पड़ रहा है। सरकारी क्रय केन्द्रों एवं कच्चा आढ़त में खरीद के रिकार्ड दुरुस्त बताए जा रहे हैं। बावजूद किसानों को सरकार का निर्धारित धान का मूल्य नहीं मिल पा रहा है। सरकार की तमाम व्यवस्थाओं के बाद भी किसान धान औने-पौने दाम पर बेचने को विवश है। किसानों को नमी, खराब क्वालिटी के नाम पर लूटा जा रहा है।

मंडी परिसर में संचालित कच्चा आढ़त में किसानों को मुनासिब रेट नहीं मिल पा रहा है। किसानों की मानें तो उनके धान का पांच से 10 किग्रा प्रति क्विंटल फफरा, 60 किलो पर एक से दो किलो प्रति क्विंटल कर्दा तथा 18 से 25 प्रतिशत नमी के बहाने 10 से 20 किलो प्रति क्विंटल कटौती की जा रही है। अपना धान बेच चुके किसान बताते हैं कि उन्हें 15 से 25 किलो प्रति क्विंटल धान मुफ्त में देना पड़ता है। कच्ची आढ़त से 17 फीसदी नमी वाले धान को सरकारी क्रय केन्द्रों में बिक्री करने पर मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। धान क्रय केन्द्रों में बारदाना, लेबर का अभाव तथा दिन का कोटा पूरा होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तिगरी निवासी दान सिंह ने बताया कि तमाम समस्याओं से बचने के लिए उनके द्वारा 1700 से 1800 रुपए प्रति क्विंटल की दर से अपना धान बिचौलियों को मजबूरन सौपना पड़ा। प्रतापपुर निवासी हरचरण सिंह, गुड़खुड़ा निवासी कुलदीप, गांगी निवासी समनदीप सिंह, सुजिया निवासी भूपाल चन्द, रतनपुर निवासी संजय चंद, जादोपुर निवासी सुरजीत सिंह आदि किसानों ने बताया कि धान क्रय केन्द्रों सहित कच्चा आढ़तों में किसानों की फसल में तमाम कमियां निकालकर कटौती की जा रही है। सरकारी क्रय केन्द्रों में भी धान खरीद को लेकर कई बहाने बनाए जाते हैं।

भारतीय किसान यूनियन (चढूनी) जिला अध्यक्ष मनजिन्दर सिंह भुल्लर ने कहा कि किसानों की फसल खरीद में भारी कोताही बरती जा रही है। कहीं कोटा फूल, तो कहीं बारदाने का अभाव, नमी के नाम पर भारी कटौती से किसानों को जूझना पड़ता है। किसान अपनी फसल को औने-पौने रेट पर बेचने को मजबूर है। भाकियू जिला अध्यक्ष चढूनी भुल्लर ने चेतावनी दी है कि धान खरीद व्यवस्था में सुधार नहीं होने पर किसान आंदोलन के लिए मजबूर होगा। एसएमआई कृष्ण चन्द्र आर्य ने बताया कि जहां बारदाने की शिकायत थी वहां बारदाना भेज दिया गया है। अभी तक एक लाख 69 हजार कट्टे विभिन्न सेंटरों को भेजे जा चुके हैं। कच्चा आदत में 2 लाख 37 हजार क्विंटल तथा खाद्य विभाग द्वारा 20,700 क्विंटल धान खरीदा जा चुका है। एडीओ सहकारिता जगदीश गिरी ने बताया कि निरीक्षण के दौरान एक क्रय केंद्र बंद मिला और अभी अन्य सेंटरों का निरीक्षण किया जाएगा। अभी तक 184191, 40 क्विंटल धान खरीदा जा चुका है।

पीटीए का गठन 29 को होगा

काशीपुर: राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सत्र 2025-26 के लिए अभिभावक-शिक्षक संघ तथा एल्यूमनी सेल का गठन 29 अक्टूबर को किया जाएगा। भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष व संयोजक डॉ. महिपाल सिंह ने बताया कि 29 अक्टूबर को दोपहर 3 बजे कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें अभिभावक-शिक्षक संगठन के लिए महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को अपने अभिभावकों को बुलाने के लिए निर्देशित किया गया है। बताया कि इसी दिन महाविद्यालय की एल्यूमनी सेल का गठन भी किया जाएगा। इसमें महाविद्यालय से पढ़ाई पूरी कर चुके पुरातन छात्र-छात्राओं को आमंत्रित किया गया है। महाविद्यालय प्रशासन ने विद्यार्थियों के अभिभावकों तथा पुरातन विद्यार्थियों से इस कार्यक्रम में पहुंचने की अपील की है।

किसानों को दी गन्ना बुवाई की जानकारी

संवाददाता, काशीपुर

अमृत विचार: गन्ना उत्पादन की तकनीक, प्रजातियों के चयन, रोग एवं कीट नियंत्रण के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए कुंडेश्वरी में गोष्ठी हुई।

गन्ना किसान संस्थान एवं प्रशिक्षण केंद्र की ओर से शुक्रवार को काश्तकार रणधीर सिंह के आवास पर कृषक गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी को संबोधित करते हुए गन्ना विभाग के प्रचार एवं जनसंपर्क अधिकारी नीलेश कुमार ने किसानों को गन्ना बुवाई के टिप्स दिए। कहा कि किसान उत्तम बीज का चुनाव करें। प्रत्येक गन्ना कृषक अपनी खेत का निरीक्षण करें तथा जो भी बीमारी के लक्षण उसमें पाए जाएं उसका फोटो लेकर गन्ना शोध केंद्र के वैज्ञानिकों से सलाह लें। गन्ना अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. संजय सिंह ने बताया कि वर्तमान में 15023, 13235, 14201 जैसी उन्नतशील प्रजातियां हैं जिनको गन्ना कृषकों को प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्होंने भूमि की जांच के बाद खेत और बीज के ट्रीटमेंट के बारे में भी जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. सिद्धार्थ कश्यप ने कीट प्रबंधन के बारे जानकारी दी। कहा कि भूमि में 16 प्रकार के सूक्ष्म पोषक तत्व पाए जाते हैं। इन पोषक तत्वों को बनाए रखने के लिए जैविक खादों का उपयोग करें। उन्होंने फंगस, दीमक जैसी बीमारियों तथा उसमें प्रयोग की जाने वाली दवाइयां तथा उनको गन्ने की वैज्ञानिक विधि के बारे में भी जानकारी दी। बाजपुर चीनी मिल के सीसीओ अरुण सेमवाल ने गन्ना आपूर्ति के बारे में बताया।

दो नए धान खरीद केंद्र खोलने का आदेश

सितारगंज: कुमाऊं संभाग के संभागीय खाद्य नियंत्रक नई मंडी समिति सितारगंज में दो नए अस्थाई सरकारी धान खरीद केंद्र खोलने का आदेश जारी किया है।

बृहस्पतिवार को सहकारी गन्ना विकास समिति के अध्यक्ष जनरैल सिंह ने किसानों की समस्याओं से अवगत कराते हुए कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा को पत्र लिखा था। उन्होंने बताया था कि किसान एमएसपी पर अपनी फसल बेचना चाहता है। लेकिन एक केंद्र पर केवल 400 क्विंटल धन की खरीद होने के कारण किसानों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा है।

वहीं, संभागीय खाद्य नियंत्रक सीएस मतोलिया ने बताया कि किसान के हितों को ध्यान में रखते हुए सितारगंज धान खरीद केंद्र प्रथम और द्वितीय पर एक-एक अतिरिक्त तौल कांटा अस्थाई रूप से संचालित किए जाने का आदेश जारी किया है।

किसानों के साथ डीएम कार्यालय पर गरजे बेहड़

- धान केंद्र लिमिट सहित उठाए गए मुद्दे
- डीएम को सौंपा ज्ञापन, आंदोलन की चेतावनी

संवाददाता, रुद्रपुर

अमृत विचार : धान क्रय केंद्रों की लिमिट बढ़ाने सहित कई मुद्दों को लेकर किच्छा विधायक तिलक राज बेहड़ ने किसानों के साथ डीएम कार्यालय पर प्रदर्शन किया और डीएम को संबोधित ज्ञापन एडीएम पंकज उपाध्याय को सौंपा। उन्होंने आगाह किया कि यदि किसानों की समस्याओं की अनदेखी हुई तो आंदोलन किया जाएगा।

बेहड़ ने बताया कि ज्यादा धान क्रय केंद्रों पर धान खरीद की लिमिट पूर्ण हो चुकी है और किसान दर-दर भटकने को विवश है। ऐसे में केंद्रों की लिमिट दस हजार प्रति कुंतल होनी चाहिए। इसके अलावा किच्छा में सबसे ज्यादा धान राइस मिलर्स को देने की जांच कर जांच रिपोर्ट स्पष्ट सार्वजनिक होनी चाहिए। बताया कि यूपी में धान क्रय केंद्रों पर दलालों के माध्यम से धान की खरीद हो रही है,जबकि जनपद में किसानों का धान तौला ही नहीं जा रहा है। विधायक बेहड़ ने कहा कि सभी केंद्रों की जांच के साथ कोआपरेटिव से जुड़ी संस्थाओं के अलावा राइस मिलर्स व बिचौलियों पर कार्रवाई सुनिश्चित होनी चाहिए। बेहड़ ने ऐलान किया कि यदि किसानों का दोहन बंद नहीं हुआ तो वृहद आंदोलन होगा। इस मौके पर मोहन लाल खेड़ा, राजकुमार सिंह, हरजिंदर पाल सिंह, दया शंकर, राजेश प्रताप सिंह, दलजीत खुराना, शिशु पाल सिंह, सर्वेश कुमार सिंह, राजेंद्र मिश्रा, हरविंदर सिंह, मोहम्मद अशफाक मौजूद रहे।

डीएम कार्यालय पर किसानों के साथ ज्ञापन देने पहुंचे किच्छा विधायक बेहड़। ● अमृत विचार

फिट इंडिया अभियान के तहत एसएसबी जवानों ने लगाई दौड़

संवाददाता सितारगंज

अमृत विचार : फिट इंडिया अभियान के तहत एसएसबी जवानों ने जमकर दौड़ लगाई। इस दौरान उन्होंने "स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत" अभियान के तहत ग्रामीणों को जागरूक भी किया।

शुक्रवार को कमांडेंट मनोहर लाल के नेतृत्व में 57 वीं वाहिनी मुख्यालय और सीमा चौकियों में "फिट इंडिया अभियान के तहत दौड़ का आयोजन किया गया। इसमें वाहिनी के दर्जनों जवानों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

कमांडेंट मनोहर लाल ने बताया कि "फिट इंडिया" एक अभियान नहीं बल्कि एक जन आंदोलन है। जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करता है। हर साल इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस साल सरकार ने इसकी थीम स्वच्छता एवं स्वस्थ को रखा है। बताया कि यह अभियान 2 अक्टूबर को शुरू हुआ था। जो 31 अक्टूबर को जारी रहेगा।

इस मौके पर उप कमांडेंट दीपक सिंह जायाड़ा, उप कमांडेंट अनिल कुमार यादव, उप निरीक्षक महिपाल सिंह, सहायक उप निरीक्षक हीरा सिंह, रविंद्र कुमार अधिकारी, राजू कुमार सिंह, ज्योति शंकर पटेल आदि उपस्थित रहे।

सितारगंज में फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत दौड़ लगाते जवान। ● अमृत विचार

सीमांत की बेटियों ने हवा में भरी उड़ान

संवाददाता, खटीमा

- बरेली वायुसेना स्टेशन में एयरक्राफ्ट में की सवारी

अमृत विचार: पीएमश्री अटल उत्कृष्ट थारू राजकीय इंटर कॉलेज की एनसीसी एयर विंग की 12 बालिका कैडेट्स ने भारतीय वायुसेना स्टेशन बरेली में एसडब्ल्यू-80 वायरस एयरक्राफ्ट से उड़ान भरकर आसमान में अपने हौसलों की उड़ान भरी।

1-यूके एयर स्क्वाड्रन एनसीसी पंतनगर के कमांडिंग ऑफिसर ग्रुप कैप्टन विवेक रावत ने कैडेट्स को विमान में बैठाकर उड़ान का अनुभव कराया और विमान संचालन की तकनीकी जानकारी दी। एनसीसी कैडेट्स ने कहा कि यह उनके जीवन का अविस्मरणीय क्षण है। उन्होंने कहा कि एनसीसी में रहते हुए राजकीय विद्यालय की छात्राओं को ऐसा अवसर मिलना गर्व की बात है। फ्लाइंग करके लौटे के बाद कैडेट ने अपने अनुभव विद्यालय के अन्य बच्चों के साथ साझा किया।

कैडेट्स ने इस उपलब्धि के लिए ग्रुप कैप्टन विवेक रावत और एसोसिएट एनसीसी अधिकारी फर्स्ट ऑफिसर नरेंद्र सिंह रौतेला का आभार व्यक्त किया। फ्लाइंग करने वाली कैडेट्स में नीतू, योगिता डसीला, कोमल सामंत, मुस्कान, आलिया, आफरीन, श्वेता शर्मा, नीतिका, भावना, अनन्या, गीता और सुमेरा शामिल रहीं।

उपजिला अस्पताल की व्यवस्थाएं दूर नहीं हुई तो करेंगे उग्र आंदोलन

संवाददाता, खटीमा

अमृत विचार: उत्तराखंड क्रांतिदल की जिला इकाई ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से उपजिला चिकित्सालय में स्वास्थ्य उपचार संबंधी सुविधाओं को दुरस्त कराने की मांग की है। उन्होंने सीएम धामी को संबोधित ज्ञापन चिकित्सालय के प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा।

मुख्यमंत्री धामी को संबोधित ज्ञापन उपजिला चिकित्सालय के प्रशासनिक अधिकारी को सौंपते हुए उक्रांद कार्यकर्ताओं ने अविलंब स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने की मांग की है। ज्ञापन में सौ शैय्या वाले इस अस्पताल में चिकित्सकों, विशेषज्ञ चिकित्सकों, तकनीशियनों के रिक्त पद भरने, अस्पताल में दवाइयों का अभाव, रोगियों को महंगी दवाइयों के लिए निजी मेडिकल सेंटरों में भेजने, प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र में उचित स्थान एवं उचित दवाइयों का अभाव, अस्पताल में स्थाई सर्जन, नेत्र रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, रात्रि कालीन आपातकालीन चिकित्सक का अभाव, चिकित्सकों द्वारा जन उपयोगी सुविधाओं के संबंध में शासन को लिखे जाने के बाद भी सुविधाओं का टोटा बना रहता है। ज्ञापन देने वालों में संतोष मेहरोत्रा जिला मंत्री, राम सिंह धामी जिला अध्यक्ष, शिव शंकर भाटिया, विनोद राजपूत पूर्व युवा प्रदेश अध्यक्ष, पंकज सिंह मौजूद रहे।

खटीमा में उपजिला चिकित्सालय के प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन सौंपते कार्यकर्ता।

ब्रीफ न्यूज

दीपावली महोत्सव में रंगारंग कार्यक्रमों की धूम

टनकपुर / लोहाघाट : गुमदेश क्षेत्र के मौड़ा गांव में चार दिवसीय दीपावली महोत्सव का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ समापन हो गया है। अंतिम सांस्कृतिक संध्या में लोहाघाट, खटीमा के अलावा स्थानीय कलाकारों ने धूम मचाई। समिति के अध्यक्ष केदार सिंह बोहरा की अध्यक्षता में आयोजित समापन समारोह पर मुख्य अतिथि विधायक खुशाल सिंह अधिकारी रहे। उन्होंने महोत्सव के संरक्षण के लिए हर संभव मदद का आश्वासन दिया। इस दौरान कुमाऊं लोक सांस्कृतिक कला दर्पण लोहाघाट के दलनायक भैरव राय के नेतृत्व में गायक कमल कुमार और अंजलि ने-तेरि रंग्याली पिछौड़ी कमू..., ओ भाना रंगीली भाना..., धूरा आए बांज काटना..., लाली हो हंसिया पधानी लाली, तीले धारू बोला..., आदि गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी। सोबना सामंत ने एकल डांस प्रस्तुत किया। वहीं पूर्णागिरि उत्थान समिति खटीमा के कलाकारों ने-दैणा होया खोली का गणेशा हो..., के बाद शाबास मेरो मोतिया बल्द..., आदि एक से बढकर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। स्थानीय कलाकार कमला देवी, डांसर नीमा चंद और चन्द्रा गोस्वामी ने भी कई प्रस्तुतियां दी। आयोजन में योगेश किशोर, रोशन कुमार, नवीन सिंह, दिलीप सिंह बोहरा, निर्मल गोस्वामी आदि मौजूद रहे।

बसों और टैक्सियों के लिए भटके यात्री

अल्मोड़ा : त्योहारी सीजन के बीच वाहनों के लिए यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ी। यात्रियों को बस स्टेशनों पर वाहनों के लिए भटकना पड़ा। काफी देर इंतजार कर किसी तरह गंतव्य को जाना पड़ा। दीवाली पर्व के बाद अब घर पहुंचे लोगों का लौटने का सिलसीला शुरू हो गया है। इधर, बीते दिन रोडवेज ने यात्रियों की भारी संख्या को देखते हुए दिल्ली और देहरादून को अतिरिक्त बसें चलाई गई थी। डिपो कार्यालय के अनुसार इन दिनों सामान्य दिनों की अपेक्षा बसों में यात्रियों की संख्या में 30 फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है। वहीं केएमओयू की बसों में भी यात्रियों की भीड़ रही। हालांकि इन दिनों रोडवेज की ओर से नियमित रूप से 14 मार्गों में बसों का संचालन किया जा रहा है।

सीएम धामी ने किया शारदा कॉरिडोर परियोजना का शुभारंभ

मुख्यमंत्री बोले-बनबसा से माता रंकोची तक की घाटी को धर्म, प्रकृति और रोजगार के संगम के रूप में विकसित करना है लक्ष्य, क्षेत्र का होगा विकास

संवाददाता, टनकपुर

अमृत विचार : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को शारदा घाट टनकपुर में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेकर 185.20 करोड़ से बनने वाले शारदा कॉरिडोर परियोजना के प्रथम चरण का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शारदा कॉरिडोर का उद्देश्य बनबसा से माता रंकोची तक की घाटी को धर्म, प्रकृति और रोजगार के सुंदर संगम के रूप में विकसित करना है। यहां आस्था के साथ ही लोगों के जीवन में आर्थिक समृद्धि और अवसरों की नई धारा भी प्रवाहित होगी। उन्होंने कहा कि शारदा घाट पुनर्विकास परियोजना के कार्य को प्रथम चरण के रूप (अनुमानित लागत 185.20 करोड़) में प्रारंभ किया जा रहा है। इस परियोजना के अंतर्गत सुरक्षित स्नान घाट, आरती स्थल, स्वच्छता एवं विश्राम की सुविधाएं, सुंदर घाट, सुगम पहुंच मार्ग, पैदल पथ, प्रकाश व्यवस्था और सौंदर्यीकरण कार्य किए जाएंगे। कहा कि आरती स्थल अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीक से निर्मित होगा, जिसमें रेनवाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था और फ्लोर कूलिंग सिस्टम जैसी आधुनिक सुविधाएं होंगी। बाढ़ प्रतिरोधी संरचनाओं से नदी के प्रवाह को नियंत्रित कर आसपास के क्षेत्रों की सुरक्षा की जाएगी। सीएम ने कहा कि यह परियोजना धार्मिक पर्यटन, स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन में नई गति लाएगी। उन्होंने इसे सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से एक अद्वितीय मॉडल बताया, जो पूरे क्षेत्र के लिए विकास का प्रतीक बनेगा।

कहा कि शारदा कॉरिडोर परियोजना के कुछ क्षेत्र वन भूमि में आते हैं, जिनके भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया वन विभाग के साथ प्रगति पर है। इस अवसर पर दर्जा राज्य मंत्री श्याम नारायण पांडे, शंकर कोरंगा, जिला पंचायत अध्यक्ष आनंद सिंह अधिकारी, ब्लॉक प्रमुख अंचला बोहरा, भाजपा जिला अध्यक्ष गोविंद सामंत, जिलाधिकारी मनीष कुमार, एसपी अजय गणपति, सीडीओ डॉ. जी.एस. खाती, एडीएम कृष्णा नाथ गोस्वामी आदि मौजूद रहे।

टनकपुर में शारदा कॉरिडोर परियोजना का शुभारंभ करते मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ● अमृत विचार

लैंड पोर्ट परियोजना से बढ़ेगा व्यापार, मिलेगा रोजगारः धामी

- सीएम धामी ने किया बनबसा के गुदमी में 500 करोड़ रुपये की निर्माणाधीन लैंड पोर्ट परियोजना का निरीक्षण

संवाददाता, बनबसा

अमृत विचार : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को बनबसा स्थित गुदमी क्षेत्र में लैंड पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा लगभग 500 करोड़ की लागत से निर्मित होने वाली आधुनिक लैंड पोर्ट परियोजना का स्थलीय निरीक्षण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि परियोजना भारत-नेपाल के बीच सहयोग, व्यापार और सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास में सहायक होगी। उन्होंने बताया कि भारत सरकार की लैंड पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया इस महत्वाकांक्षी परियोजना को उत्तराखंड सरकार के सहयोग से तेजी से आगे बढ़ा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि परियोजना के आरंभ से ही पर्यावरणीय मंजूरी, प्रतिपूरक पौधरोपण और भूमि हस्तांतरण की सभी औपचारिकताएं पूर्ण होती रही हैं। इस वर्ष पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा लगभग 84 एकड़ वन भूमि को अंतिम स्वीकृति मिल चुकी थी, जिसके बाद परियोजना के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि लगभग 500 करोड़ की लागत से बनने जा रहा यह आधुनिक लैंड पोर्ट भारत और नेपाल के बीच व्यापार एवं यात्री आवागमन के लिए एक समेकित, सुविधाजनक और सुरक्षित प्रणाली विकसित करेगा। यहाँ कस्टम, सुरक्षा, व्यापार एवं बॉर्डर से जुड़ी सभी प्रमुख एजेंसियां एक ही परिसर में कार्य करेंगी, जिससे सीमा प्रबंधन में अधिक तेजी व पारदर्शिता आएगी। साथ ही स्थानीय युवाओं के लिए नए रोजगार अवसर पैदा होंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लैंड पोर्ट के माध्यम से किसानों और छोटे उत्पादकों को सीमा पार बाजारों तक सीधी पहुंच मिलेगी, जिससे परिवहन लागत घटेगी और उत्पादों का मूल्य संवर्धन संभव होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पहल भारत और नेपाल के आपसी संबंधों को और मजबूत करेगी, जिससे पर्यटन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पारस्परिक सहयोग को भी बढ़ावा मिलेगा। इस मौके पर दर्जा राज्य मंत्री श्याम नारायण पांडे, जिला पंचायत अध्यक्ष आनंद सिंह अधिकारी, चंपावत ब्लॉक प्रमुख अंचला बोहरा, भाजपा जिला अध्यक्ष गोविंद सामंत, विधायक प्रतिनिधि चंपावत प्रकाश तिवारी, विधायक प्रतिनिधि टनकपुर दीपक रजवार, पूर्व प्रदेश मंत्री हेमा जोशी, मंडल अध्यक्ष कमलेश भट्ट, मोनू ठाकुर, दीपक सक्सेना, सुरेश उप्रेती, पूर्व दर्जा मंत्री शिवराज सिंह कठायत, नगर पालिका अध्यक्ष टनकपुर विपिन कुमार, लोहाघाट गोविंद वर्मा, जिलाधिकारी मनीष कुमार, पुलिस अधीक्षक अजय गणपति, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. जीएस खाती, अपर जिलाधिकारी कृष्णा नाथ गोस्वामी, उप जिलाधिकारी टनकपुर आकाश जोशी, खंड विकास अधिकारी अशोक अधिकारी सहित जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

बनबसा में अधिकारियों से जानकारी लेते मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी। ● अमृत विचार

चम्पावत में खुलेगा कृषि विश्वविद्यालय

संवाददाता, टनकपुर

अमृत विचार: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को शारदा घाट टनकपुर में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए 20.50 करोड़ की 10 विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। उन्होंने पंतनगर की तर्ज पर चम्पावत में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना करने व छीनीगोठ क्षेत्र में बाढ़ राहत एवं सुरक्षा कार्य करने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि छीनीगोठ एवं आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ राहत एवं सुरक्षा कार्य कराए जाने से यह क्षेत्र मानसून में होने वाले क्षति से बच सकेगा और कृषि भूमि व सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मददगार साबित होगा। कहा कि पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय की तर्ज पर चम्पावत में एक नया कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया जाएगा। इस विश्वविद्यालय से स्थानीय युवाओं को कृषि एवं संबद्ध विज्ञानों में उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के अवसर मिलेंगे। यह कदम क्षेत्र में वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देगा और पर्वतीय कृषि अर्थव्यवस्था को नई पहचान प्रदान करेगा। इससे लोगो को काफी लाभ होगा। धामी ने कहा राज्य सरकार उत्तराखंड को शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्यान, रोजगार व स्वरोजगार को बढ़ावा देने आदि सभी क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि चम्पावत को आदर्श जिले के रूप में स्थापित किया जा रहा है।

इस अवसर पर दायित्वधारी श्याम नारायण पांडे, शंकर कोरंगा, जिला पंचायत अध्यक्ष आनंद सिंह अधिकारी, ब्लॉक प्रमुख अंचला बोहरा, भाजपा जिला अध्यक्ष गोविंद सामंत, जिलाधिकारी मनीष कुमार, पुलिस अधीक्षक अजय गणपति आदि मौजूद रहे।

सीएम ने इन कार्यों का किया शिलान्यास व लोकार्पण

- सैनिक स्मारक, बहुउद्देशीय हॉल एवं एसएसबी चौकी का लोकार्पण
- चम्पावत नगर में मल्टी लेवल कार पार्किंग एवं परिसर निर्माण लागत 987 .16 लाख
- जायका रेस्टोरेंट के पास मल्टी लेवल कार पार्किंग लागत 352 .00 लाख
- मल्लाडेश्वर मंदिर का सौंदर्यीकरण लागत61 .41 लाख
- भागेश्वर मंदिर का सौंदर्यीकरण लागत 85 .27 लाख
- झालीमाली मंदिर सौंदर्यीकरण लागत 47 .03 लाख
- ताड़केश्वर मंदिर सौंदर्यीकरण लागत 90 .10 लाख
- डिप्टेश्वर महादेव मंदिर का सौंदर्यीकरण लागत 97 .52 लाख
- मानेश्वर में पर्यटन अवस्थापना विकास कार्य लागत 89 .26 लाख
- एबट माउंट में विरासत संरक्षण कार्य लागत 96 .96 लाख का शिलान्यास

परियोजना के तहत ये कार्य किए जाएंगे

टनकपुर : शारदा कॉरिडोर परियोजना के प्रथम चरण में किरोड़ा नाला पारिस्थितिक कॉरिडोर (109 .57 करोड़) को विकसित किया जाएगा। सिटी ड्रेनेज योजना – चरण 1 (62 .11 करोड़) में शहरी जल निकासी प्रणाली को सुदृढ़ कर बाढ़ की रोकथाम व वर्षा जल प्रबंधन को व्यवस्थित किया जाएगा। इसके अलावा थाक गांव तक वैकल्पिक मार्ग (5 .34 करोड़) को तीर्थयात्रियों के लिए सुरक्षित और सुगम बनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त कई अन्य कार्य भी इसमें शामिल हैं।

कनारीछीना के पास खाई में गिरी कार, एक की मौत

संवाददाता, अल्मोड़ा

अमृत विचार: बाडेछीना-सेराघाट मोटर मार्ग में शुक्रवार को एक सड़क हादसे में युवक की मौत हो गई। वहीं, एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना मिलने पर धौलछीना पुलिस मौके पर पहुंची। घायल को ग्रामीणों की मदद से अस्पताल पहुंचाया।

मिली जानकारी के अनुसार महिपाल नेगी निवासी जमराड़ी अपने भांजे नीरज कैड़ा निवासी पारखेत झिरौली के साथ कार से मंगलता के पास सवारी छोड़ने के बाद वापस बागेश्वर को लौट रहे थे। इसी बीच कनारीछीना के समीप चालक महिपाल नेगी वाहन पर से अपना नियंत्रण खो बैठे और वाहन खाई में गिर गया। हादसे की सूचना स्थानीय लोगों ने धौलछीना थाना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों के साथ रेस्क्यू अभियान चलाया। दुर्घटना में घायल हुए दोनों युवकों को नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। लेकिन अस्पताल पहुंचे से पहले ही घायल महिपाल नेगी ने दम तोड़ दिया। धौलछीना अस्पताल के चिकित्सक ने महिपाल को मृत घोषित किया। थानाध्यक्ष धौलछीना सुनील बिष्ट ने बताया कि घटना के कारणों की जांच की जा रही है। मृतक और घायल के परिजनों को भी जानकारी दे दी है।

बाइक सवार ने राहगीर को मारी टक्कर, घायल

बागेश्वर : नगर में बाइकर्स गैंग का आतंक कम होता नहीं दिख रहा है। शुक्रवार की दोपहर एक तेज गति से आ रहे बाइक सवार ने एक व्यक्ति को टक्कर मार कर घायल कर दिया। जानकारी के अनुसार तहसील रोड स्थित पंत साइकिल स्टोर में काम करने वाला मिस्त्री किशन राम साइकिल चेक कर रहा था तभी तेज गति से आ रहे बाइक सवार ने उसे टक्कर मार दी। जिससे वह घायल हो गया। आसपास के दुकानदारों ने उसे जिला अस्पताल पहुंचाया जहां उनका इलाज चल रहा है।

डीएम ने खनन स्थलों की स्थिति कार्यवाही व रणनीति पर की चर्चा

- जिला अवैध खनन निरोधक दल की बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा
- डीएम ने अनुपस्थित जल संस्थान के अफसरों पर कार्रवाई के निर्देश दिए

संवाददाता, बागेश्वर

अमृत विचार: जिलाधिकारी आकांक्षा कोंडे की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिला अवैध खनन निरोधक दल की बैठक आयोजित हुई। बैठक में जनपद के खनन स्थलों की स्थिति, की गई कार्यवाहियों एवं आगे की रणनीति पर चर्चा हुई। जल संस्थान के अधिकारियों की अनुपस्थिति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कार्रवाई के आदेश दिए।

बैठक में जिला खान अधिकारी नाजिया हसन ने जिलाधिकारी को जिले में खनन संबंधी संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। जिलाधिकारी ने कहा कि खनन स्थलों का समयबद्ध निरीक्षण सुनिश्चित किया जाए तथा उच्च न्यायालय के आदेशों का पूर्ण अनुपालन किया जाए। उन्होंने ड्रोन सर्वे हेतु समिति गठन के निर्देश दिए ताकि निगरानी अधिक प्रभावी व साक्ष्य आधारित हो सके। उन्होंने सभी विभागों को खनन से होने वाले नुकसान की नियमित रिपोर्टिंग करने और पीएमजीएसवाई विभाग को सड़कों की क्षति संबंधी रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। कहा कि खनन कार्यों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि मानकों की अनदेखी न हो तथा क्षेत्र का प्राकृतिक धरोहरों को किसी तरह की क्षति न पहुंचे। कहा कि इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि लोगों को असुविधा न हो।

बैठक में जल संस्थान विभाग के अनुपस्थित अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश भी दिए गए। बैठक में पुलिस अधीक्षक चंद्रशेखर घोड़खे, एडीएम एनएस नबियाल, एसडीएम प्रियंका रानी, एआरटीओ अमित कुमार, जिला खान अधिकारी नाजिया हसन सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बागेश्वर में जिला अवैध खनन निरोधक दल की बैठक लेती डीएम आकांक्षा कोंडे।

चरस और स्मैक तस्कर गिरफ्तार

बागेश्वर: पुलिस ने यहां एक व्यक्ति से लगभग डेढ़ किलो चरस व एक अन्य युवक से साढे.चार ग्राम स्मैक बरामद की है।

पुलिस अधीक्षक चंद्रशेखर घोड़के ने एक पत्रकार वार्ता में बताया कि बागेश्वर पुलिस व एसओजी की चेकिंग के दौरान दौरान कपकोट मार्ग के पंद्रह पाली तिराहे में एक व्यक्ति को बागेश्वर आते समय शक होने पर रोका तथा उसकी चेकिंग की तो उसने बताया कि उसके पास चरस है तथा उसने अपना नाम खीम सिंह पुत्र मलक सिंह निवासी सापुलि तोक के कर्मी थाना कपकोट बताया। चेकिंग में उसके कब्जे से एक किलो 40 ग्राम चरस मिली। उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। एक अन्य मामले में शुक्रवार सुबह कोतवाल अनिल उपाध्याय और एसओजी प्रभारी सलाउद्दीन के नेतृत्व में चले अभियान में कांडा रोड के छतीना के समीप 4.34 ग्राम स्मैक तश्करी करते हुए कांडा निवासी अभिषेक वर्मा पुत्र दीपक वर्मा उम्र 22 वर्ष को अवैध स्मैक के साथ गिरफ्तार किया गया।

अल्मोड़ा में पुलिस ने यातायात चेकिंग अभियान चलाया। ● अमृत विचार

ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर 113 लोगों पर कार्रवाई

संवाददाता, अल्मोड़ा

अमृत विचार: त्योहारी सीजन के बीच जिलेभर में पुलिस ने यातायात चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान नियमों के उल्लंघन पर 113 लोगों पर चालानी कार्रवाई की गई। वहीं, वाहन चालकों को सुरक्षित ड्राइविंग के लिए जागरूक किया गया।

एसएसपी देवेंद्र पींचा के निर्देश पर पुलिस टीम ने जिलेभर में दोषपूर्ण नंबर प्लेट, वाहन के खिड़कियों के शीशों पर काली फिल्म लगाने वालों व यातायात नियमों का उल्लघंन करने वाले कुल 113 वाहन चालकों के विरुद्ध मोटर वाहन अधिनियम के तहत चालानी कार्रवाई की गई। साथ ही सभी टैक्सी, बस चालकों को क्षमता से अधिक सवारी न बिठाने, नशे में वाहन न चलाने की हिदायत दी गई। यात्रियों से अपील की गई कि कोई वाहन चालक ओवर लोडिंग, नशे में वाहन चलाता है या खतरनाक तरीके से वाहन चलाता है तो उसकी शिकायत तत्काल डायल 112 में करें। यहां अभियान में सीओ सदर गोपाल दत्त जोशी समेत अन्य पुलिस अधिकारी मौजूद रहे।

हालात | रिक्त पदों पर नियुक्ति को साक्षात्कार के बाद भी जारी नहीं किया गया रिजल्ट

चिकित्सकों की कमी से जूझ रहा मेडिकल कॉलेज

संवाददाता, अल्मोड़ा

अमृत विचार: पर्वतीय क्षेत्र का एक मात्र मेडिकल कॉलेज अल्मोड़ा फैकल्टी की कमी से जूझ रहा है। यहां रिक्त पदों को भरने के लिए एक माह पूर्व साक्षात्कार कराए गए, लेकिन अब तक शासन की ओर से इनका रिजल्ट जारी नहीं किया गया है। जिस कारण यहां नए चिकित्सकों की अब तक नियुक्ति नहीं हो सकी है।

दरअसल, मेडिकल कॉलेज अल्मोड़ा लंबे समय से स्वास्थ्य सेवाओं समेत फैकल्टी की कमी का दंश झेल रहा हैं। मेडिकल कॉलेज में 178 पदों के सापेक्ष मात्र 53 चिकित्सकों की ही तैनाती है। जबकि यहां 90 चिकित्सों की जरूरत है। ऐसे में चिकित्सकों के रिक्त पदों के चलते इसका असर यहां के स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ रहा है। कॉलेज प्रशासन की ओर से बीते सितंबर माह में यहां चिकित्सकों के रिक्त पदों के लिए साक्षात्कार कराए गए थे। जिसमें कम्यूनिटी मेडिसिन में एसोसिएट प्रोफेसर पद पर एक, एसिस्टेंट प्रोफेसर के पदों में बायो कैमेस्ट्री, बाल रोग विभाग, पैथेलॉजी, एनेस्थीशिया और रेडियोथैरेपी शामिल रहे। लेकिन एक माह बीते जाने के बाद भी शासन की ओर से अब तक इन चिकित्सकों को तैनाती नहीं दी गई है। जिसका असर यहां की स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ रहा है।

मेडिकल कॉलेज अल्मोड़ा। ● अमृत विचार

मेडिकल कॉलेज में फैकल्टी में चिकित्सकों की तैनाती को लेकर पूर्व में साक्षात्कार कराए गए थे। जिसका रिजल्ट शासन की ओर से जारी नहीं किया गया है। चिकित्सकों की नियुक्तों को लेकर लगातार प्रशासन किए जा रहे हैं। -डॉ. सीपी भैसोड़ा, प्राचार्य मेडिकल कॉलेज अल्मोड़ा

लोगों को भुगतना पड़ रहा खामियाजा

मेडिकल कॉलेज में चिकित्सकों की नियुक्ति नहीं होने का खामियाजा लोगों को भुगतना पड़ रहा है। कई बार समय पर नियुक्ति नहीं मिलने से चिकित्सक दूसरी जगहों पर तैनाती ले लेते हैं। इस कारण मेडिकल कॉलेज को साक्षाक्तार में आने के बाद भी चिकित्सक नहीं मिल पाते हैं। पहले के साक्षाक्तारों में कई बार ऐसा हुआ है कि चिकित्सक साक्षात्कार तो देने आए, लेकिन समय पर नियुक्ति ना मिलने से दूसरी जगह तैनाती ले ली।

आईटीबीपी ने उल्लास से मनाया स्थापना दिवस

संवाददाता,टनकपुर /लोहाघाट

अमृत विचार: लोहाघाट के छमनियां चौड़ स्थित 36वीं वाहिनी आइटीबीपी में 64वां स्थापना दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कमांडेंट संजय कुमार ने परेड की सलामी ली। उन्होंने हिमवीर जवानों व अधिकारियों सहित उनके परिवारजनों को बधाई दी। कहा कि आइटीबीपी के जवान देश की सीमाओं की सुरक्षा के साथ आंतरिक सुरक्षा के लिए मुस्तैद होकर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने आइटीबीपी के इतिहास पर भी प्रकाश डाला। इस मौके पर वाहिनी परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ विभिन्न खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। बच्चों ने जलेबी दौड़, महिलाओं ने म्यूजिकल चेयर और जवानों ने रस्साकशी प्रतियोगिता में भाग लिया। मुख्य अतिथि चीफ पैट्रन हावा अनुराधा ने प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर बल के सेवानिवृत्त पदाधिकारियों को भी कमांडेंट ने सम्मानित किया।

लोहाघाट में आईटीबीपी के स्थापना दिवस पर मौजूद अधिकारी और जवान। ● अमृत विचार

धूमधाम से मनाया आईटीबीपी का स्थापना दिवस

अल्मोड़ा : बिमौला में आईटीबीपी का 64 वां स्थापना दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। इस दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जिसमें कलाकारों ने शानदार प्रस्तुति देकर रंग जमा दिया। स्थापना दिवस समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि आईटीबीपी के महानिरीक्षक रिंव कुमार पंडिता ने किया। उन्होंने कहा कि 1962 को आईटीबीपी की स्थापना हुई। आईटीबीपी के जवान आज भी भारत-चीन सीमा पर पूरी मुस्तैदी के साथ अपनी सेवा दे रहे हैं। बल नौ हजार से 18700 फीट की ऊंचाई में घटते बढ़ते तापमान के बीच देश की रक्षा को तैनात हैं। उन्होंने जवानों और उनके परिजनों को स्थापना दिवस की बधाई दी। इस दौरान जवानों व उनके परिजनों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जवानों ने अपनी प्रतिभा और कला का प्रदर्शन कर सभी का खूब मनोरंजन किया।

अमृत विचार

शनिवार, 25 अक्टूबर 2025

जिस दिन आपके सामने कोई समस्या न आए, आप यकीन कर सकते हैं कि आप गलत रास्ते पर चल रहे हैं।
–**विवेकानंद**, विचारक

तेल की धार

भारत की तेल नीति एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय भू-राजनीति के केंद्र में आ गई है। रूस से तेल खरीदारी के मामले ने देश की कूटनीति के क्षेत्र में स्वायत्तता बनाम वैश्विक दबाव को ले कर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। ट्रंप के इस दावे के जवाब में कि उनके कहने पर भारत, रूस से तेल खरीदना धीरे-धीरे बंद कर देगा, भारतीय विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया थी कि भारत किसी भी दबाव में नहीं झुकेगा और उसकी ऊर्जा नीति का आधार सिर्फ राष्ट्रीय हित एवं उपभोक्ता सुरक्षा है, परंतु जमीनी हकीकत है कि निजी व सरकारी रिफाइनरियों द्वारा रूसी तेल आयात में भारी कटौती शुरू हो चुकी है, तो स्पष्ट है कि इस मामले में सरकार अमेरिकी प्रतिबंधों से तालमेल बैठाने की तैयारी में है।

आज सरकारी कंपनियां अपने दस्तावेजों की समीक्षा करने के साथ यह तय कर रहीं हैं कि रूसी तेल कंपनी रोजनेफ्ट या लुकोइल से कोई शिपमेंट सीधे न आए। यह आसानी से समझा जा सकता है, क्योंकि अमेरिका द्वारा रूस की दो सबसे बड़ी तेल कंपनियों, रोजनेफ्ट और लुकोइल पर कड़े प्रतिबंध लगाने के चलते भारतीय निजी रिफाइनरी कंपनियां- रिलायंस इंडस्ट्रीज और नायरा एनर्जी को कारोबारी संकट झेलना पड़ सकता है, क्योंकि इन कंपनियों को अब तक जो अरबों गैलन सस्ता रूसी कच्चा तेल मिलता था, वो अब खासा महंगा पड़ेगा। इसके अलावा रूसी तेल खरीद से जुड़े अमेरिकी द्वितीयक प्रतिबंधों का खतरा भारतीय बैंकों और बीमा कंपनियों तक पहुंच सकता है, भीषण टैरिफ थोपने से वैसे भी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हो ही रहा है।

सच यह है कि रूसी तेल खरीद में बड़ी कटौती का सबसे बड़ा आर्थिक नुकसान रूस को होगा, क्योंकि भारत उसका सबसे बड़ा ग्राहक है। देश सीधे बहुत कम तेल खरीदता है, ज्यादातर तेल देश के रिलायंस, नायरा एनर्जी सरीखी निजी रिफाइनरियां ही खरीदती हैं। नायरा एनर्जी जैसी कंपनियों का मुनाफा रूसी सस्ते तेल पर निर्भर था, महंगा तेल खरीदने से उनको भारी घाटा हो सकता है। भारतीय उपभोक्ताओं को इन सबके चलते महंगा तेल खरीदना पड़ सकता है, क्योंकि रूसी तेल की भरपाई के लिए भारत को खाड़ी देशों, सऊदी अरब, ईराक, संयुक्त अरब अमीरात से तेल आयात बढ़ाना होगा। इन स्रोतों से कच्चा तेल औसतन 10 से 15 डॉलर प्रति बैरल महंगा होगा। सरकार का नुकसान इसमें बहुत ज्यादा नहीं है। हां, सस्ते तेल का लाभ न मिलने से उसका आयात बिल बढ़ सकता है, पर अमेरिका अगर संभावनाओं के मुताबिक अपना टैरिफ 50 प्रतिशत से घटा कर 15 फीसदी कर देता है, तो यह उसके लिए फायदेमंद रहेगा। अमेरिका को रणनीतिक लाभ मिलेगा तो वह कुछ और कारोबारी छूट दे सकता है। नये हालात में अगर भारत रूसी तेल खरीदना बंद करता है, तो संभव है कि भारत और रूस के संबंध पर इससे असर पड़े। रूस की क्या प्रतिक्रिया होगी, इसको संवाद के जरिए संतुलित बनाए रखना होगा। फिलहाल सरकार को पारदर्शिता के साथ जनता को समझाना चाहिए कि यह फैसला देश की स्वायत्तता और रणनीतिक स्वतंत्रता से कोई समझौता नहीं है। इसे देश की वैश्विक स्थिति, ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को ध्यान में रखकर लिया गया है।

प्रसंगवश

प्रकृति, पवित्रता व प्रार्थना का अनूठा लोकपर्व छठ

भारत की सांस्कृतिक चेतना में कुछ पर्व ऐसे हैं, जिनमें लोक, धर्म, प्रकृति और तपस्या का अद्भुत संगम दिखाई देता है। छठ महापर्व उन्हीं में से एक है। यह एक ऐसा पर्व है, जो अब किसी एक क्षेत्र की सीमाओं में नहीं बंधा बल्कि भारतीय आस्था के विशाल सागर में अपनी गहरी जड़ें जमा चुका है। वास्तव में यह आत्मशुद्धि, संयम और कृतज्ञता की वह साधना है, जिसमें मनुष्य सूर्य और प्रकृति के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करता है। बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों से शुरू होकर अब यह पर्व देश-विदेश के असंख्य भारतीयों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

चार दिनों तक चलने वाला यह महापर्व कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से आरंभ होकर षष्ठी और सप्तमी को चरम पर पहुंचता है। 25

श्वेता गोयल
शिक्षिका

अक्तूबर से शुरू हो रहे इस वर्ष के छठ पर्व की शुरुआत 'नहाय-खाय' से हो रही है। इस दिन व्रती स्नान कर सात्विक भोजन बनाते हैं, जिससे शरीर और मन की शुद्धि होती है। यह भोजन केवल प्रसाद नहीं बल्कि एक प्रतीक है कि व्रती अब अपने जीवन के सारे विकारों को त्यागकर पूरी निष्ठा से साधना में प्रवृत्त होंगे। अगले दिन 'खरना' का विधान है। इस रोज दिनभर निराहार रहने के बाद व्रती संध्या के समय छठी मैया को खीर, रोटी और गुड़ का प्रसाद चढ़ाकर उसका सेवन करते हैं और प्रसाद बांटते हैं। माना जाता है कि खरना के बाद ही छठ की साधना की ऊर्जा जागृत होती है।

तीसरे दिन यानी 27 अक्टूबर को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। यह दृश्य पूरे भारत की लोकआस्था का सबसे अनुपम रूप होता है। घाटों पर उतरती हुई स्त्रियां, सिर पर बांस के सूप में ठेकुआ, केला, नारियल और अन्य प्रसाद रखे हुए, जल में कमर तक डूबी हुई, सूर्य की ओर हाथ जोड़े श्रद्धा के साथ झुकी हुई, यह दृश्य केवल श्रद्धा नहीं बल्कि प्रकृति के प्रति समर्पण का जीवंत प्रतीक है। चौथे दिन यानी 28 अक्तूबर की प्रातःकालीन बेला में उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देकर छठ पर्व का समापन होगा। यह क्षण केवल सूर्योदय का नहीं बल्कि मनुष्य की आशा, नूतन ऊर्जा और नवजन्म का प्रतीक माना जाता है।

छठ पर्व की सबसे बड़ी विशेषता इसका अत्यंत पवित्र और कठोर अनुशासन है। व्रती न केवल उपवास रखता है, बल्कि चारों दिनों तक अत्यंत सात्विकता, संयम और आत्मसंयम का पालन करता है। इस पर्व में किसी पुजारी की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि प्रत्येक व्रती स्वयं पूजा करता है। यह परंपरा दर्शाती है कि श्रद्धा का सबसे शुद्ध रूप वही है, जिसमें मनुष्य स्वयं को ही मंदिर, स्वयं को ही साधक और स्वयं को ही साध्य बना ले। छठ पर्व इसी आत्मानुशासन की साधना है, जहां आडंबरों की नहीं, आस्था की शक्ति बोलती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार छठी मैया या षष्ठी देवी सूर्यदेव की बहन मानी जाती हैं, जो संतान की रक्षा करती हैं और परिवार में सुख, समृद्धि तथा स्वास्थ्य प्रदान करती हैं। छठ पर्व में सूर्य, उनकी पत्नी उषा और प्रत्यूषा, तथा छठी मैया, इन सभी की संयुक्त उपासना की जाती है। उषा और प्रत्यूषा क्रमशः सूर्य की प्रथम और अंतिम किरण का प्रतीक हैं, इसीलिए व्रती सूर्य को दोनों समय (अस्त और उदय) अर्घ्य अर्पित करते हैं। यह परंपरा जीवन के उस संतुलन का प्रतीक है, जिसमें आरंभ और अंत दोनों ही समान रूप से पवित्र हैं। छठ पर्व की उत्पत्ति को लेकर कई किंवदंतियां हैं। एक कथा के अनुसार, सूर्यपुत्र कर्ण ने सबसे पहले सूर्यदेव की उपासना प्रारंभ की थी। वे प्रतिदिन कमर तक जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देते थे।

देश में बदलने वाला है उच्च शिक्षा का परिदृश्य

अनिल यादव
वरिष्ठ पत्रकार

अपने देश में जल्द ब्रिटेन के आठ नामी विश्वविद्यालयों के कैंपस खुलने जा रहे हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ साउथंपटन की स्थापना पहले ही गुड़गांव में हो चुकी है। हाल ही में भारत और ब्रिटेन के प्रधानमंत्रियों की मुलाकात हुई थी, जिसमें यह फैसला लिया गया था। एलान अब किया गया है। इसी के साथ ब्रिटेन, भारत में उच्च शिक्षा देने वाला सबसे बड़ा देश बन गया है। इसका मतलब यह है कि किसी और देश के इतने अधिक विश्वविद्यालय भारत में अभी नहीं खुले हैं। कल को कोई और देश भी यह दावा कर सकता है। बताया जा रहा है कि इन उच्च शिक्षा परिसरों से ब्रिटेन को सालाना करीब पचास मिलियन पाउंड की आमदनी होगी। नए खुलने जा रहे विश्वविद्यालय हैं- बंगलुरू में यूनिवर्सिटी ऑफ लिवरपूल और लंकास्टर यूनिवर्सिटी, मुंबई में यूनिवर्सिटी ऑफ यार्क, यूनिवर्सिटी ऑफ एबरडीन और यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल, गांधीनगर (गुजरात) में क्वीन्स यूनिवर्सिटी बेलफास्ट, कोवेंट्री यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ सरे। इन्हें सरकार की अनुमति मिल चुकी है।

भारत सरकार का दावा है इससे हमारा देश शैक्षिक हब बन जाएगा, लेकिन ऐसा तो तब होता जब हमारे विश्वविद्यालयों की रैंकिंग दुनिया में अव्वल होती, यहां दाखिला पाने के लिए यूरोप न सही एशिया के ही छात्रों में होड़ लगी रहती और हमारे यहां की डिग्रियों की कुछ क्षेत्रों में रोजगार मिलने में खास अहमियत होती। दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है। ये विश्वविद्यालय मुख्यतः ब्रिटेन की नई प्रवासी नीति के तहत खोले जा रहे हैं, जिसका उद्देश्य ब्रिटेन में तीसरी दुनिया खासतौर से भारत से आने वाले लोगों की भीड़ को कम करना है। पिछले कई सालों से ब्रिटेन में बाहर से आने वाले लोगों को लेकर भय और बेचैनी का माहौल देखने को मिल रहा है और सरकार उनकी संख्या को हर संभव तरीके से नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है।

देश में जल्द ब्रिटेन के आठ नामी विश्वविद्यालयों के कैंपस खुलने जा रहे हैं। इसके साथ ही ब्रिटेन भारत में उच्च शिक्षा देने वाला सबसे बड़ा देश बन जाएगा। इससे ब्रिटेन को सालाना करीब पचास मिलियन पाउंड की आमदनी होगी।

भारत से ब्रिटेन जाने वाले छात्रों की बड़ी संख्या है, जो वहां पढ़ाई करने के लिए जाती है, लेकिन रोजगार की तलाश में वहीं रह जाती है। वहां वर्क वीजा की मांग करने वाले भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिसका कारण सिर्फ रोजगार ही नहीं, यह भी है कि इन युवाओं को ब्रिटेन का जीवन स्तर और माहौल यहां से बेहतर लगता है। प्रवासियों की भीड़ रोकने के लिए एक तरफ तो वीजा नियमों को सख्त किया गया है और अब शिक्षा का ही निर्यात शुरू कर दिया गया है, जिसके बहाने से बड़ी संख्या में युवा वहां पहुंचते थे।

भारत के संपन्न और नवधनिक तबके में अभी भी विदेशी विश्वविद्यालयों की डिग्रियों का क्रेज है। पूरी संभावना है कि ये परिसर ऐसे ही युवाओं के हब बनेंगे। उन्हें ध्यान में रखते हुए इन ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम प्रस्तावित किए हैं, जिनकी फीस काफी है, लेकिन अकादमिक वैल्यू बहुत कम है। इन विश्वविद्यालयों के संचालन में कामयाबी मिलना तय है, क्योंकि यहां शिक्षक और बाकी स्टॉफ को ब्रिटेन की तुलना में बहुत कम सैलरी पर रखा जा सकेगा और संचालन का कुल खर्च भी कम आएगा। फिर भी इसके भारतीय रोजगार बाजार या जॉब मार्केट के प्रचलित मानदंडों से बेहतर रहने के आसार हैं।

इतनी बड़ी संख्या में विदेशी विश्वविद्यालयों के खुलने से एक चीज यह होने जा रही है कि भारतीय विश्वविद्यालयों को भी अपनी गुणवत्ता में सुधार करना पड़ेगा, क्योंकि उनकी तुलना अब इन संस्थानों से की जाएगी। इस मामले में जो करार हुआ है, उसके मुताबिक भारत सरकार ने वादा किया है कि स्थानीय कानूनों के तहत हर तरह की स्वायत्तता इन विश्विद्यालयों को मिलेगी। ऐसी स्वायत्तता कुछ हद तक अभी निजी ईलीट किस्म के शैक्षिक संस्थानों को हासिल है, जो अपने पाठ्यक्रम खुद बना सकते हैं और फैकल्टी का चयन कर सकते हैं। ऐसी स्वायत्तता निजी संस्थानों को तो हासिल है, लेकिन केंद्रीय विश्वविद्यालयों को नहीं है।

जल्दी ही विदेशी, प्राइवेट और सरकारी तीन तरह के विश्वविद्यालय और उनके बीच का प्रतिस्पर्धात्मक माहौल देखने को मिलेगा। यहां एक प्रश्न उठता है कि हमारे यहां के विश्वविद्यालयों के हर विभाग में भारतीय ज्ञान परंपरा लागू करने का सरकार की ओर से आग्रह और दबाव रहता है, क्या इन शैक्षिक परिसरों में भी इस तरह की परंपरा के पालन का आग्रह किया जाएगा या उन्हें इससे मुक्त रखा जाएगा। अभी तक इन विश्वविद्यालयों ने शायद जानबूझ कर प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी और ऐसे अन्य तकनीकी पाठ्यक्रम घोषित किए हैं, जिनमें भारतीय परंपरा की खोज करना संभव नहीं है। जब वे इतिहास, मानविकी, समाज विज्ञान के पाठ्यक्रमों को सामने रखेंगे तब पता चलेगा कि वे सरकारी दबाव से कितना मुक्त हैं। एक बात तय है कि ये विश्वविद्यालय अपनी स्वायत्तता पर देशी संस्थानों जितनी आसानी से समझौता नहीं करेंगे।

पिछले दस सालों में उच्चशिक्षा परिसरों में शिक्षकों की नियुक्तियों में योग्यता और अनुभव के बजाय एक खास विचारधारा से जुड़े होने को तरजीह देने के आरोप सामने आते रहे हैं। इस आरोप के जवाब में कहा जाता है कि पहले की सरकारें भी अपनी विचारधारा वालों को नियुक्त करती थीं, तो अब दूसरों की बारी आने पर किसी को एतराज नहीं होना चाहिए। शिक्षा जगत में आशा जताई जा रही है कि जिन लोगों को भिन्न विचारधारा का होने के कारण बीते वर्षों में अवसर नहीं मिले, इतनी बड़ी संख्या में विदेशी परिसरों के खुलने से उनकी लाटरी लग सकती है। नतीजा चाहे जो निकले, ईलीट शिक्षा के नए टापू बनने जा रहे हैं।

आमने

सामान खरीदते समय एक चीज जरूर देखिए- क्या उसमें हलाल सर्टिफिकेशन तो नहीं लिखा हुआ है? यानी हर वस्तु में हलाल सर्टिफिकेशन। हमने यूपी में इसे बैन किया है। मुझे लगता है कि यूपी में कोई उसे खरीदने या बेचने का दुस्साहस नहीं करेगा।

–**योगी आदित्यनाथ**
मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश

सामने

भारत एकता में विविधता पर विश्वास रखता है और जब तक यह विविधता बनी रहेगी, भारत मजबूत रहेगा। कोई भी हमेशा सत्ता में नहीं रहता। एक समय आएगा जब उन्हें सत्ता से हटा दिया जाएगा।

–**फारूख अब्दुल्ला**
अध्यक्ष, जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस

नवाचार की राह से ही बनेगा विकसित भारत

शिवालिक अवस्थी
लेखक

किसी भी देश का यही सपना होता है कि जितना संभव हो, उतना विकासात्मक कार्यों की प्रगति की जाए, ताकि देश का नाम शीर्ष पर रहे। इसके लिए उक्त देश हर क्षेत्र में विकास को गति प्रदान करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। आजकल वैसे भी ज्यादातर देशों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ लगी हुई है। कोई देश आर्थिक रूप से सशक्त है, तो कोई विकास के क्षेत्र में अपनी पहचान वैश्विक स्तर पर बनाए हुए है। भारत देश भी समूचे विश्व में अपनी छवि विश्व गुरु के तौर पर सम्मिलित करने के लिए प्रयासरत है। इसके लिए भारत हर क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित करके आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा है। विकसित भारत के निर्माण की नींव बहुत पहले ही रखी जा चुकी है। अब समय है तो विकसित भारत के सपने को साकार करने का। फिर चाहे बात स्वास्थ्य की हो, शिक्षा की हो, कृषि की हो या नई तकनीक के समावेश की हो। भारत को हर क्षेत्र में अब आगे बढ़ना है, जिसके लिए सरकार व समाज दोनों की महत्वपूर्ण भागीदारी सामने निकल कर आती है।

विकास दर तभी आगे बढ़ पाएगी, यदि विकास में नई योजनाओं की संलिप्तता बढ़ाई जाएगी। नई योजनाएं एवं नए विचारों के समावेश से विकास गति में तेजी लाई जा सकती है। आधुनिक निर्माण के लिए आधुनिक विचारों का प्रयोग अति आवश्यक है। उद्यमिता के क्षेत्र को गति प्रदान करना, आधुनिक निर्माण में एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। न केवल व्यावसायिक अपितु सामाजिक उद्यमिता का बढ़ता दायरा, विकास को बढ़ावा देने में कार्य कर सकता है। आजकल हर मंच से सिर्फ विकास की ही बात होती है। समय के साथ विकासात्मक आंकड़ों में सुधार भी हुआ है, लेकिन अभी भी कई पहलू हैं, जहां विकास मात खा रहा है।

केवल विकास-विकास कहने से विकास को गति नहीं मिलेगी, यह सभी को मालूम होना चाहिए। इसके लिए कई सुधारों की आवश्यकता है। नई योजनाओं का प्रयोग हर क्षेत्र में करना चाहिए, जिससे आधुनिक निर्माण को बल मिल सके। आज क्यों हम नई योजनाओं, नए प्रयोगों की बात कर रहे हैं? दरअसल, वीपो यानी विश्व बौद्धिक संपदा संगठन द्वारा हाल ही में वैश्विक नवाचार सूचकांक 2025 की रिपोर्ट विश्व भर में जारी की गई है, जिसमें विश्व भर की 139 अर्थव्यवस्थाओं की रिपोर्ट साझा की गई है। यह रिपोर्ट वीपो द्वारा हर वर्ष जारी की जाती है। किस देश की अर्थव्यवस्था किस दिशा जा रही है, यह सब इसमें दर्शाया जाता है। वैश्विक नवाचार सूचकांक से किसी भी देश की निर्भरता का पता चलता है कि कौन सा देश अन्य देशों पर अभी कितना निर्भर है। किस क्षेत्र में किस देश को सुधार करने की जरूरत है और कौन सा देश प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ता नजर आने लगा है।

भारत की बात करें तो पिछले कुछ वर्षों से भारत ने निरंतर बढ़त बनाई हुई है। इस वर्ष भारत ने 38.2 स्कोर के साथ 38वां रैंक हासिल किया है। जो बीते वर्ष की तुलना में एक रैंक का उछाल है। बीते वर्ष भारत की रैंकिंग 39 आंकी गई थी। इस बार जीआईआई रैंकिंग में 66.0 स्कोर के साथ प्रथम स्थान पर स्विट्जरलैंड, 62.6 स्कोर के साथ दूसरे पर स्वीडन और 61.7 स्कोर के साथ तीसरे स्थान पर अमरीका रहा है, जबकि 56.6 स्कोर के साथ चीन ने 10वां रैंक हासिल करके पहली दफा टॉप 10 में अपनी जगह बनाई है। आय समूह के आधार पर निम्न मध्य आय वाली अर्थव्यवस्थाओं की बात करें, तो भारत ने इसमें पहला स्थान प्राप्त किया है। एक ओर जहां 2020 में भारत का रैंक 48वां था, वहीं दूसरी ओर पिछले पांच वर्षों में भारत की रैंकिंग में 10 पायदान का भारी उछाल देखा गया है। इतना तो तय है कि नवाचार के क्षेत्र में भारत निरंतर आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है।

अब बात करते हैं विभिन्न क्षेत्रों में भारत के प्रदर्शन की। बात करें उद्यमिता नीतियां और संस्कृति के क्षेत्र की, तो इसमें 12वां रैंक हासिल कर भारत ने बेहतर प्रदर्शन किया है। वैश्विक कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास निवेशक में 16वां रैंक, सकल पूंजी निर्माण में 14वां रैंक, स्टार्टअप और स्केलअप के लिए वित्त में 9वां रैंक, अंतिम चरण वेंचर कैपिटल सौदों की संख्या में चौथा रैंक, घरेलू बाजार पैमाने में तीसरा रैंक, आईसीटी सेवाओं का निर्यात में पहला रैंक, ज्ञान के प्रभाव में और यूनिकॉर्न मूल्यांकन में 11वां रैंक प्राप्त कर अपनी बेहतरीन शक्ति का प्रदर्शन किया है। यह कुछ वही क्षेत्र हैं जिनके आधार पर सभी देशों की गतिविधियां आंकी जाती हैं। मूलतः जीआईआई रिपोर्ट का मुख्य पहलू निवेश, तकनीकी और उसे अपनाने के स्तर के कार्य को दर्शाती है। यह किसी देश के सामाजिक व आर्थिक प्रभाव को भी दर्शाता है।

इस रिपोर्ट से किसी देश की निर्भरता का आंकलन किया जा सकता है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भी देश को आत्मनिर्भर बनाने का आह्वाहन किया गया। जो इसी दिशा की ओर इशारा करता है। प्रधानमंत्री ने साफ कहा कि हमारा कोई बड़ा दुश्मन नहीं है। यदि कोई दुश्मन है तो वह है दूसरे देशों पर हमारी निर्भरता। इसी निर्भरता को खत्म करके हमें आत्मनिर्भर बनना है और जीआईआई की रिपोर्ट एक हिसाब से आत्मनिर्भरता के प्रदर्शन को ही दर्शाती है, कहना गलत नहीं होगा।

विकास के लिए जरूरी है कि इसमें नई योजनाओं की संलिप्तता को बढ़ाया जाए। नवाचार के समावेश से विकास में तेजी लाई जा सकती है।

सोशल फोरम

फ्रेंच लेखक विक्टर ह्यूगो की बेटी की खामोशी

1850 में एक बरसात के दिन, न्यूयॉर्क पुलिस को एक युवती मिली जो खोई हुई और अस्त-व्यस्त लग रही थी। वह एक ऐसी भाषा बोल रही थी, जो उन्हें समझ नहीं आ रही थी। उसे अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में डॉक्टरों ने कहा कि वह अपनी याददाश्त खो चुकी है। कुछ वक्त बाद में, उन्हें पता चला कि वह लड़की कौन थी! वह लड़की थी एडेल ह्यूगो, प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक विक्टर ह्यूगो की बेटी।

नॉलेज अड्डा
फेसबुक

एडेल की कहानी ने कई लोगों के दिलों को छू लिया। उसे अल्बर्ट पिंसन नाम के एक अंग्रेज सैनिक से प्यार हो गया था, लेकिन वह उससे प्यार नहीं करता था। फिर भी, वह उसके पीछे नोवा स्कोटिया तक गई। वहां, उस सैनिक ने उसका इस्तेमाल किया और उसे कुछ भी नहीं दिया। वह उन्हें छोड़कर चला गया। वह न्यूयॉर्क में अकेली और बिना किसी मदद के रह गईं।

जब उसे वापस फ्रांस भेजा गया, तो एडेल का दिल टूट गया और वह शर्म से भर गईं। अलबत्ता उनका कोई दोष नहीं था। उसने खुद से वादा किया कि वह फिर कभी नहीं बोलेगी। उसके पिता, विक्टर ह्यूगो ने उसके बोलने के लिए 35 साल तक लगातार कोशिश की। ह्यूगो के लिए यह बड़ा सदमा था, लेकिन वह कभी नहीं बोली।

1850 से लेकर 1915 में अपनी मृत्यु तक, 65 वर्षों तक एडेल लगातार चुप रहीं, ताकि वह स्वयं को याद दिलाती रहें कि उन्हें फिर कभी किसी से भी प्यार नहीं करना है।

सामयिकी

नकली दवा कारोबार को चाहिए 'सख्ती की दवाई'

दवा जीवन बचाती है, लेकिन देश में अब इसका जानलेवा कारोबार हो रहा है। जो बेहद घातक है। इससे लोगों के जीवन पर ही नहीं समाज और स्वास्थ्य व्यवस्था पर भी गंभीर खतरा मंडराने लगा है। नकली और अवैध दवाओं का धंधा संगठित अपराध, भ्रष्टाचार और आतंकवाद को भी बढ़ावा देता है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया में नकली दवाओं के कारोबार में चौथे नंबर पर है। देश में बिकने वाली लगभग 25 फीसदी दवाएं नकली या घटिया हैं। कफ सिरप से बच्चों की मौत के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भारत में बनी तीन मिलावटी दवाओं की पहचान की है। डब्ल्यूएचओ की जांच में पाया गया कि कोल्ड्रिफ सिरप में

विवेक सक्सेना
अयोध्या

एक जहरीला रसायन डायथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) बहुत अधिक मात्रा में मिला है।

डीईजी एक ऐसा केमिकल है, जो शरीर के लिए बेहद नुकसानदेह होता है। यह किडनी और लिवर को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है और बच्चों के लिए यह जानलेवा साबित हो सकता है। कोल्ड्रिफ सिरप में इस रसायन की मात्रा 48 प्रतिशत से भी ज्यादा पाई गई, जबकि सुरक्षित मात्रा केवल 0.1 प्रतिशत तक होनी चाहिए। इसके अलावा दो और सिरप रेडनेक्स फार्मास्युटिकल्स की रेस्पिफ्रेश टीआर और फार्मा की रीलाइफ भी डब्ल्यूएचओ की चेतावनी में शामिल हैं।

ऐसे मामले 'दुनिया की फार्मेसी' के रूप में पहचान बनाने वाले भारत की प्रतिष्ठा भी धूमिल करते हैं। करीब 200 से अधिक देशों को किफायती दवाएं उपलब्ध कराकर भारत वैश्विक जेनेरिक दवा बाजार का अग्रणी खिलाड़ी है। पीएम जन औषधि योजना की सफलता में जेनेरिक दवाओं की अहम भूमिका है, लेकिन गुणवत्ता सुनिश्चित किए बिना ऐसी किफायती दवाएं राहत देने की जगह ऑफत बन जाती हैं। कफ सीरप से बच्चों की मौतें इस कड़वी सच्चाई को ही उजागर करती हैं कि भारत में सस्ती दवाएं तो उपलब्ध हुई हैं, पर उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

चंडीगढ़ स्थित पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च के डॉक्टरों ने 2024 के एक अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि असमान निर्माण मानक और कमजोर निगरानी परिणामों को कैसे प्रभावित करती है। दवा निर्माण के लिए भारत का केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ही व्यापक रूप से नियम निर्धारित करता है, पर कारखानों को लाइसेंस देना, इकाइयों का निरीक्षण करना, नमूनों के परीक्षण जैसी अधिकांश शक्तियां राज्य औषधि नियामक प्राधिकरणों (एसडीआरए) के पास हैं। निगरानी के लिए कुछ राज्यों के पास सुदृढ़ प्रयोगशालाएं और प्रशिक्षित निरीक्षक हैं, जबकि कई राज्यों में अत्यंत सीमित संसाधन हैं। निर्माता इसी का फायदा उठाते हैं।

भाटिया समिति (1954) से लेकर माशेलकर समिति (2003) ने यही सुझाया कि लाइसेंसिंग और गुणवत्ता नियंत्रण को एक राष्ट्रीय ढांचे के तहत लाया जाए, पर देश में आज तक इस पर पूरी तरह अमल नहीं हो पाया है। देश में कानूनों की कमी नहीं है। कमी है तो उन्हें ढंग से लागू करने की और जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह बनाने की। समय आ गया है कि भारत में सीडीएससीओ के तहत एक केंद्रीकृत लाइसेंसिंग और निरीक्षण प्रणाली बनाई जाए, जो प्रत्येक उत्पाद, परीक्षण और रिकाल को जोड़ने वाले राष्ट्रीय डिजिटल ड्रग रजिस्ट्रार द्वारा संचालित हो। सभी नई-पुरानी दवाओं के लिए सालाना परीक्षण भी अनिवार्य करना होगा। मानकों के अनुपालन और सजा के प्रविधान पूरे देश में एकसमान हों।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं मकान नं.197/1, समता आश्रम गली, रामपुर रोड, हल्द्वानी, जिला नैनीताल, उत्तराखंड-263139 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक - अमित शर्मा*** 05946292618 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UTTHIN/2021/79698, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नैनीताल होगा)।

हम इस समय एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहां जीवन का बड़ा हिस्सा स्क्रीन पर घट रहा है। बातें, रिश्ते, राय, विरोध और यहां तक कि हंसी और दुख भी अब एक डिजिटल फॉर्मेट में फिट होकर चल रहे हैं। यह बदलाव अचानक नहीं आया, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इसकी रफ्तार कुछ ऐसी रही कि अब यह नया सामान्य बन चुका है। इंटरनेट और स्मार्टफोन ने लोगों को अभिव्यक्ति के नए माध्यम दिए हैं, लेकिन उन माध्यमों की प्रकृति ने सोचने के तरीके को भी बदल दिया है। खासकर युवाओं के लिए आज दुनिया को देखने और समझने का जरिया अब ज्यादातर वही है, जो मोबाइल स्क्रीन पर दिखता है।

मीम-रील के कैदी लाइक्स-कमेंट्स के गुलाम

डॉ. शिवम भारद्वाज
मथुरा

रील्स-शॉर्ट्स ने इस पूरे दृश्य को और तेज कर दिया है। पहले जहां कोई बात कहने के लिए एक लेख, एक भाषण या एक लंबा वीडियो चाहिए होता था, अब 15-30 सेकेंड्स की छोटी सी वीडियो में सब कुछ समा सकता है-भाव, शैली, संगीत और संदर्भ। यह टुकड़ों में बंटा मनोरंजन अब विचार की जगह लेता जा रहा है, जो जितना छोटा है, उतना ही आकर्षक है। गहराई अब ध्यान खींचने में बाधा बन गई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर लोग वही देखते हैं, जो उनके हिसाब से 'रिलेटेबल' हो यानी जो पहले से ही सोचा हुआ हो या जो देखकर सोचने की जरूरत न पड़े। यही वजह है कि रील्स अब विचार नहीं बनाते, बल्कि पुष्टि करते हैं। वही दिखाते हैं, जो पहले से लोकप्रिय है।

इसके साथ ही एक नया और चुपचाप बढ़ता हुआ असर यह है कि अब लोगों का आत्मसम्मान भी स्क्रीन से जुड़ गया है। पहले किसी बात पर गर्व या आत्मविश्वास निजी अनुभवों से आता था। अब वह लाइक्स, व्यूज और फॉलोअर्स की संख्या पर टिका हुआ दिखता है। कितनी बार किसी ने तारीफ की, कितने कमेंट्स आए, किस क्लिप को कितने लोगों ने शेयर किया। ये सब अब सिर्फ आंकड़े नहीं हैं, बल्कि व्यक्ति की डिजिटल पहचान का हिस्सा बन चुके हैं। इसमें जो नहीं है, वह कमजोर समझा जाता है, जो दिख नहीं रहा, उसका कोई मूल्य नहीं रह गया है। यह मानसिकता नजरअंदाज नहीं की जा सकती, क्योंकि धीरे-धीरे यह व्यक्तिगत पहचान और आत्ममूल्य के केंद्र में आ गई है।

इस पूरे बदलाव की दिशा में जो सबसे खास बात है, वह यह कि अब सोचने का तरीका अनुभव पर नहीं, बल्कि प्रस्तुति पर आधारित हो गया है, जो बेहतर तरीके से पेश किया गया, वही ज्यादा असर करता है। भले उसमें कितनी भी सतही बात क्यों न हो। पहले तर्क, प्रमाण और अनुभव से बात बनती थी, अब 'फॉर्मेट' ज्यादा असरदार हो गया है। मीम हो या रील, ओटीटी हो या इंस्टाग्राम पोस्ट सभी में यह साझा बात है कि 'क्या कहा गया' से ज्यादा जरूरी हो गया है 'कैसे कहा गया'।

मीम संस्कृति

मीम संस्कृति इसी बदलाव का एक स्पष्ट उदाहरण है। अब विचारों को लंबे वाक्यों में समझाना जरूरी नहीं रहा। एक तस्वीर, उस पर एक व्यंग्यात्मक लाइन और कुछ रंग-बिरंगे इमोजी, यही आज की बातचीत का नया फॉर्मेट है। यह शैली तेज है, सरल है और तुरंत असर करती है, लेकिन जिस रफ्तार से यह शैली पॉपुलर हुई है, उसी रफ्तार से गंभीरता और संदर्भ भी हाशिए पर चले गए हैं, जो बात पहले बहस का विषय होती थी, वो अब चुटकुला बनकर वायरल होती है। यही 'वायरल होना' अब किसी बात के प्रासंगिक होने की पहचान बन चुका है। युवाओं की सोच में यह बदलाव साफ देखा जा सकता है। मीम सिर्फ हंसी की चीज नहीं रह गया है, वह एक नजरिया बन चुका है। कुछ भी कहना हो, विरोध करना हो, समर्थन करना हो, सब कुछ अब मीम की शक्ल में आसानी से समझाया जाता है। यह सहजता कई बार उपयोगी भी होती है, लेकिन अक्सर बातों की जटिलता इस प्रक्रिया में गुम हो जाती है। समस्या यह नहीं कि हंसी आ रही है, असल बात यह है कि हंसी में जो कहना है, वो कितना सही समझा जा रहा है। बहुत बार यह हंसी कुछ नहीं कहती, सिर्फ अगला मीम देखने की इच्छा पैदा करती है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स

इन सभी अनुभवों के बीच, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स का उभार एक नई दिशा में असर डाल रहा है। फिल्मों और वेब सीरीज के जरिए अब दुनियाभर की कहानियां हर किसी की पहुंच में हैं। यह एक जबरदस्त सांस्कृतिक अवसर है। समाज के अलग-अलग हिस्सों, भाषाओं और सोच को समझने का मौका, लेकिन यह समझ तभी पनपती है, जब देखी गई चीजों पर ठहरकर सोचा जाए। अक्सर होता यह है कि वेब सीरीज की बिंज-वाचिंग करते हैं, किरदारों से प्रभावित होते हैं, लेकिन उनके विचारों की परतों में नहीं जाते। हम सिर्फ कहानी के प्रवाह में बहते हैं और फिर अगली कहानी पर शिफ्ट कर जाते हैं। इस तरह से जो कुछ देखा गया, वह भीतर कहीं ठहरता नहीं, बस गुजर जाता है।

सोचने का ढंग, समझने का तरीका

हमारे सोचने का ढंग, समझने का तरीका और संवेदनाओं की परतें धीरे-धीरे उसी रूप में ढल रही हैं, जिसे स्क्रीन पर दिखाया जा रहा है। यह बदलाव अचानक नहीं है, लेकिन अब इतना स्थिर हो चुका है कि हमें असुविधा महसूस नहीं होती। हम उसमें सहज हो चुके हैं। हंसी, नाराजगी, दुख, सहमति हर भाव अब डिजिटल फार्मेट में ढल चुका है। कोई बात मीम में आई तो मजेदार है, रील में आई तो आकर्षक है और ट्रेंडिंग में आई तो 'जरूरी' है। जो बात इन फॉर्मेट्स में फिट नहीं बैठती, वो नजर से भी फिसल जाती है।

भाषा शब्द कम और संकेत ज्यादा

हर पीढ़ी का एक अपना टेम्पो होता है, एक अपनी भाषा और अपना भ्रम। इस समय की भाषा में शब्द कम और संकेत ज्यादा हैं, जो कहा नहीं गया, वो अक्सर ज्यादा सुना जाता है और जो सचमुच कहा जाना चाहिए, वो अक्सर लोगों को रोचक नहीं लगता। इसलिए धीरे-धीरे किनारे हो जाता है। लोगों की प्रतिक्रियाएं पहले से ज्यादा तेज और तुरंत हो गई हैं, जो तेज है, वह प्रभावी है। यह धारणा बन चुकी है। इसी वजह से विचारों की लंबाई, अनुभव की गहराई और संवाद की प्रक्रिया अब बाधा जैसी लगती है। बहुत कुछ कहा जा रहा है, लेकिन कितनी देर के लिए सुना जा रहा है। इसका हिसाब रखना अब पुराना तरीका माना जाता है। यह सब बातें न अच्छी हैं, न बुरी-बस आज के समय की प्रकृति का हिस्सा हैं।

संस्मरण

चाय

एक दिन एक कार्यक्रम से लौट रहा था। दोपहर के दो बज गए थे। सूरज मानो आग उगल रहा था। गर्मी के मारे बुरा हाल था। मैं जल्दी से घर पहुंच जाना चाहता था। तभी मोटर साइकिल का पिछला पहिया हल्का-हल्का हिलने सा लगा। मैंने मोटर साइकिल खड़ी की। देखा मोटर साइकिल का पिछला पहिया पंक्चर हो गया था। मैंने चारों तरफ नजर दौड़ाई। दूर-दूर तक पंक्चर जोड़ने की कोई दुकान नहीं थी।

घर अभी दो किलोमीटर दूर रह गया था। मरता क्या न करता, मैं मोटर साइकिल को घसीटते हुए घर की ओर चल दिया। कुछ दूर चलने पर ही मेरा सारा शरीर पसीने से तर-बतर हो गया। अभी मैं आधा किलोमीटर दूर ही पहुंचा था कि मुझे सड़क के किनारे एक बड़े से छाते के नीचे एक पंक्चर जोड़ने वाला दिखाई दिया। मैंने राहत की सांस ली। उसके पास जाकर मैंने मोटर साइकिल खड़ी कर दी और उससे पंक्चर जोड़ने को कहा। उस समय उसके छाते के नीचे पड़े स्टूल पर एक लेडी बैठी हुई थी और वह तपती धूप में बैठा हुआ, उसकी स्कूटी का पंक्चर जोड़ रहा था। जब वह लेडी चली गई तो उसने मुझे छाते के नीचे बैठने के लिए कहा। मैं बैठ गया और वह अपने काम में लग गया। मैंने देखा कि उसकी उम्र साठ वर्ष के आसपास रही होगी। धूप के मारे उसके माथे से पसीना टपक रहा था।

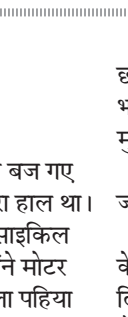

सुरेश बाबू मिश्रा
बरेली

मैंने उससे पूछा, "तुमने इतना बड़ा छाता लगा रखा है, मगर तुम्हें तो पूरे दिन धूप में ही काम करना पड़ता है।" "अगर मैं छाते के नीचे बैठा रहूंगा, तो मेरा और मेरे बच्चों का पेट कैसे भरेगा साहब। वह मेरी ओर देखते हुए बोला, उसके प्रश्न ने मुझे निरुत्तर कर दिया था।

वह अपने काम में लगा रहा और कुछ ही देर में उसने पंक्चर जोड़ दिया।

मैंने उसकी मजदूरी के पैसे देने के बाद उसे दस रुपये चाय के लिए देने चाहे, मगर उसने रुपये लेने से साफ इंकार कर दिया। वह बोला-"साहब! मैं केवल अपनी मेहनत के ही पैसे लेता हूं।" मैंने दस का नोट जेब में रख लिया और मोटर साइकिल स्टार्ट करने लगा। तभी वह मेरे पास आया और बोला-"साहब! मैं एक शर्त पर आपके रुपयों की चाय पी सकता हूं।"

"वह क्या?" मैंने उसकी ओर देखते हुए पूछा। "आपको भी मेरे साथ चाय पीनी पड़ेगी।" वह बोला। मैं मोटर साइकिल से नीचे उतर आया और उसे दस-दस के दो नोट देते हुए कहा-"ठीक है, जाओ दो चाय ले आओ।"

"नहीं साहब, एक की ही दो हो जाएंगी।" यह कहकर वह उनमें से एक नोट लेकर तीर की तरह चाय के खोखे की ओर दौड़ पड़ा।

थोड़ी देर में ही वह दो कपों में चाय ले आया। मैं स्टूल पर बैठकर उसके साथ चाय पीने लगा।

"एक बात कहूं साहब?" उसने मेरी ओर देखते हुए पूछा। "हां-हां कहो।" मैंने स्वीकृति में सिर हिला दिया। वह बोला-"आज मुद्दतों बाद आप जैसे किसी साहब ने मेरे साथ बैठकर चाय पी है। आपकी इस छोटी-सी बात ने मेरे दिल को कितनी बड़ी खुशी दी है, मैं बता नहीं सकता।" मैं हैरानी से उसके चेहरे की ओर देख रहा था।

एहसास

व्हील चेयर

एक लड़की थी। उसके मन में जीवन को मेरु शिखर तक ऊंचा उठा लेने का साहस और सामर्थ्य था। सीमित संसाधनों में उसने उपलब्धियों की छोटी सी चमकती मोती माला बना ली थी। इतना कि जितने में एक छोटी सी उम्र को मूल्यवान कहा जा सकता था। धरती पर जीवन इतना सरल होता तो दुःख और पीड़ा का कहीं कोई निशान न होता। मन में बस लक्ष्यों का ढेर होता और इंसान उन्हें चुटकियों में पा भी लेता। पर नहीं, जीवन इतना भी सहज और स्वाभाविक नहीं है। संघर्षों की लंबी श्रृंखलाओं का कंठहार है जिंदगी।

अंजलि ओझा
प्रतापगढ़

उस लड़की के जीवन ने उसे गर्त में ला पटका था। उसके स्वसिद्धि के सभी आयाम शून्य पर जा रुके थे। एक गहरा सूखा कुंआ था, उसके सामने अब। उसकी तमाम शैक्षिक प्राप्तियां धरी की धरी रह गईं थीं। कोई भी परीक्षा शरीर के बल पर ही पास की जा सकती है। शरीर के स्वास्थ्य से मस्तिष्क की चेतना में बढ़ोतरी होती है। उस लड़की के सारे सपने उसे उसी क्षण टूटे नजर आए, जब उसे पता चला कि उसकी बैकबोन ने उसका साथ छोड़ दिया है। उसकी स्पाइनल डिस्क में दबाव हो गया था।

अब किसके भरोसे वह बैठकर घंटों किताबों के अक्षर-अक्षर पर मनन करती? कैसे वह हाथ में कलम और कागज लेकर बैठती? कैसे वह अपने सपनों को उड़ान देती? कैसे अपने जकड़े हुए कदमों को चलना बताती? कैसे वह जमी हुई रक्तशिराओं को तरलता देती? कैसे अपनी अक्षमता को उपयोगी बनाती? अंधकार ही अंधकार था... स्वस्थ हो पाने की कोई आशा भी नहीं। बिस्तर पर पड़े-पड़े अब तो उसे इस भयंकर पीड़ा से जूझना था। बिना उफ किए, किंतु सहने की भी एक सीमा होती है, जिसके बाद शरीर और धैर्य दोनों मौन धर लेते हैं और कहते हैं "अब नहीं!" इतना ही चल सकते थे हम तुम्हारे साथ। अब तुम खुद चल सको तो चलो। वर्षों के मर्मांतक कष्ट से वह हार रही थी। उसकी धैर्य परिधि खत्म हो रही थी। वह कर सकती थी, पर नहीं कर पा रही थी। वह असहाय अनुभव करने लगी थी। निराशा, हताशा, दुःख और अवसाद की ओर खिसकती जा रही थी उसकी जिंदगी।

उसकी पूर्व चिकित्सक की दवाएं उसके दर्द का तृणमात्र भी इलाज नहीं कर पा रही थी। फिर किसी के सुझाव पर वह दूसरे नामी चिकित्सक के पास गई। वहां के प्रतीक्षालय में वह अपनी बारी का इंतजार कर रही थी। तभी उसने अपने सामने व्हील चेयर पर बैठी एक हमउम्र लड़की को देखा। उस व्हील चेयर वाली लड़की को देखकर उसके मन रोना हो आया। उसकी बगल की सीट पर उस व्हील चेयर वाली लड़की की मां बैठी हुई थी। उसने आदतन उनसे बात करनी शुरू कर दी। जब उसने पूछा, "आपकी बेटी को क्या हुआ है?" तो उत्तर मिला, " बैकबोन में दबाव है।" वह सन्न रह गई।

उसकी भी तो बैकबोन ही डैमेज थी। फिर उसने जानना चाहा, "क्या वह अपने पैर उठा पाती है?" उत्तर नहीं में मिला। उसकी मां ने बताया कि उसके पांव हिलते तक नहीं। वह शौच तक बिस्तर पर ही करती है। अब वह लड़की कुछ क्षण के लिए निःरक्त सी हो गई, जिसे काटो तो खून नहीं। उसने उस व्हील चेयर वाली लड़की को देखा फिर खुद को देखा। कितना अंतर था दोनों में। एक जैसा रोग, एक जैसी समस्या और वह अभी भी अपने कदमों से चल सकती है। उसकी दैनिक आवश्यकताओं के लिए किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। वह अपने दर्द से लड़कर जिंदगी के कुछ कदम रख तो पा रही है। अभी वह व्हील चेयर से बहुत दूर है।

डॉक्टर ने कहा कि अगर ठीक होना चाहती हो तो पैदल चलो। रोओ, तड़पो, दर्द को चबाओ, पर चलो! नहीं तो ऐसे ही जकड़ जाओगी। घर आने के बाद उसे बार-बार व्हील चेयर पर बैठी निस्सहाय लड़की का चेहरा याद आ रहा था। उसने निश्चय किया कि वह इतनी अशक्त अभी नहीं होगी। व्हील चेयर उसका भाग्य नहीं है। उसे चलना है, दौड़ना है, उड़ना है। उसने साष्टांग हो ईश्वर को धन्यवाद किया कि कम से कम अभी उस पर इतनी तो कृपा उन्होंने बनाई हुई है कि संघर्ष करके ही सही वह कुछ कदम नाप सकती है।

अब उसके मन में आशा की एक घनी किरण आ बसी है कि वह एक दिन सबसे आगे होगी। उसका जीवन मेरु शिखर सा श्लाघ्य होगा। उसके हिस्से सफलताएं आएंगी। उसकी रुकी हुई जिंदगी एक दिन दौड़ पड़ेगी मिल्खा सिंह की तरह, फिर कभी न रुकने के लिए।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	84,211.88	25,795.15
गिरावट	344.52	96.25
प्रतिशत में	0.41	0.37

सोना 1,25,600 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,52,600 प्रति किलो

अमृत विचार
हल्द्वानी, शनिवार, 25 अक्टूबर 2025
www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

कर्नाटक : 27,600 करोड़ रुपये के 13 निवेश प्रस्ताव मंजूर

बेंगलुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई राज्य उच्चस्तरीय मंजूरी समिति की बैठक में 27,607.26 करोड़ रुपये के 13 निवेश प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। इन स्वीकृत परियोजनाओं से लगभग 8,704 प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। राज्य के विशाल एवं मध्यम उद्योग मंत्री एम बी पाटिल ने कहा कि इनमें 11 नए और दो अतिरिक्त निवेश के प्रस्ताव हैं। प्रस्तावों में 27,228.51 करोड़ के नए निवेश शामिल हैं, जबकि विस्तार परियोजनाओं के लिए 378.75 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा।

टोल प्लाजा पर मासिक और वार्षिक पास की जानकारी होगी प्रदर्शित

नई दिल्ली। एनएचएआई ने कहा कि मासिक और वार्षिक टोल पास के बारे में राष्ट्रीय राजमार्ग उपयोगकर्ताओं को जानकारी देने के लिए टोल प्लाजा पर सूचना प्रदर्शित की जाएगी। एनएचएआई ने कहा कि उसने अपने क्षेत्रीय कार्यालयों को निर्देश जारी किए हैं कि वे अपने अधिकार क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्गों पर स्थित सभी टोल प्लाजा पर इन 'टोल पास' के बारे में विस्तृत जानकारी प्रमुखता से प्रदर्शित करें। उद्देश्य यह है कि उपयोगकर्ताओं को स्थानीय मासिक और वार्षिक 'पास' सुविधा की उपलब्धता, दरों और प्रक्रियाओं के बारे में उचित जानकारी हो।

अतिरिक्त एजीआर मांग रद्द करने की याचिका पर सुनवाई 27 को

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट सोमवार को दूरसंचार कंपनी वोडाफोन आइडिया लिमिटेड की उस याचिका पर सुनवाई करेगा, जिसमें 2016-17 तक के लिए दूरसंचार विभाग द्वारा मांगे गए एजीआर को रद्द करने का अनुरोध किया गया है। एजीआर वह आय है, जिसका उपयोग लाइसेंस शुल्क और स्पेक्ट्रम शुल्क की गणना के लिए किया जाता है। इसे दूरसंचार कंपनियों की ओर से देय होता है। वेबसाइट के मुताबिक सीजेआई बीआर गवई, न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन, न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली की पीठ इस याचिका पर सुनवाई करेगी।

ब्रिटेन-जर्मनी को छूट तो भारत पर निशाना क्यों

गोयल ने अमेरिकी प्रतिबंधों पर उठाया सवाल, कहा- दबाव में आकर व्यापार समझौता नहीं करेगा भारत

बर्लिन/नई दिल्ली, एजेंसी

रूस से तेल खरीद बंद करने के लिए बढ़ते अमेरिकी दबाव के बीच वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को जर्मनी में आयोजित एक कार्यक्रम में सवाल उठाते हुए कहा कि अमेरिकी प्रतिबंधों से ब्रिटेन को छूट मिल गई है, अब जर्मनी भी छूट मांग रहा है तो फिर भारत को ही क्यों निशाना बनाया जा रहा है। गोयल ने साफ किया कि भारत जल्दबाजी या किसी तरह के दबाव में आकर व्यापार समझौते नहीं करता है।

गोयल ने जर्मनी में आयोजित 'बर्लिन संवाद' में कहा, भारत की यूरोपीय संघ सहित विभिन्न देशों एवं समूहों के साथ व्यापार समझौतों पर सक्रिय रूप से बातचीत जारी है। हम अमेरिका से भी बात कर रहे हैं लेकिन हम जल्दबाजी में कोई समझौता नहीं करते और न ही कोई समयसीमा तय करके या फिर किसी तरह के दबाव में आकर कोई समझौता करते हैं। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री इस संवाद कार्यक्रम में शिरकत करने के लिए बर्लिन में हैं। यह द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए नेताओं और जर्मन व्यवसायों की एक बैठक है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि किसी भी व्यापार समझौते को दीर्घकालिक दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए।

वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को बर्लिन संवाद में भारत का पक्ष रखा।

गोयल ने कहा कि भारत कभी भी जल्दबाजी या उकसावे में आकर कोई निर्णय नहीं लेता है। इसके साथ उन्होंने कहा कि भारत अमेरिका में लगाए गए उच्च सीमा शुल्क से निपटने के लिए नए बाजारों की तलाश कर रहा है।

भारत के साथ दीर्घकालिक निष्पक्ष व्यापार समझौता शर्तों पर किए जाने के सवाल पर गोयल ने कहा, मुझे नहीं लगता कि भारत ने कभी भी राष्ट्रीय हित के अलावा किसी अन्य आधार पर यह निर्णय लिया है कि उसके मित्र कौन होंगे। यदि कोई मुझसे कहता है कि आप यूरोपीय संघ के मित्र नहीं हो सकते, तो मैं इसे स्वीकार नहीं करूंगा या कोई कल मुझसे कहता है कि मैं केन्या के साथ काम नहीं कर सकता, तो यह भी स्वीकार्य नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी देश से कोई भी विशेष उत्पाद खरीदने का निर्णय पूरी दुनिया का होगा। गोयल ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, मैं आज के अखबार में पढ़ रहा था कि जर्मनी तेल पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट मांग रहा है, ब्रिटेन ने पहले ही अमेरिका से तेल खरीदने के लिए छूट हासिल करने का तरीका तलाश लिया है या शायद उसे छूट मिल भी गई है तो फिर भारत को ही क्यों निशाना बनाया जा रहा है।

अधिकारियों ने किया दावा- कोई नया मुद्दा बाधा नहीं व्यापार समझौते के बेहद करीब हैं भारत-अमेरिकी

नई दिल्ली। भारत और अमेरिका प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को अंतिम रूप देने के 'बेहद करीब' हैं, क्योंकि दोनों पक्ष अधिकांश मुद्दों पर सहमति की तरफ बढ़ रहे हैं। एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते के प्रावधानों और शर्तों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। उन्होंने कहा, जहां तक अमेरिका के साथ समझौते की बात है तो हम इसे अंतिम रूप देने के बेहद करीब हैं। अधिकारी ने कहा, समाधान के लिए अब अधिक मसले नहीं बचे हैं। समझौते पर बातचीत प्रगति पर है और अब कोई नया मुद्दा वार्ताओं में बाधा नहीं बन रहा है। उन्होंने कहा, हम अधिकांश मुद्दों पर सहमति की तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। अमेरिका और भारत के बीच इस द्विपक्षीय व्यापार समझौते के पहले चरण के लिए अब तक पांच दौर की बातचीत पूरी हो चुकी है।

छह दिन बाद गिरा शेयर बाजार सेंसेक्स 344 अंक फिसला

मुंबई, एजेंसी

विदेशी पूंजी की निकासी और बैंकों एवं एफएमसीजी शेयरों में मुनाफावसूली के बीच घरेलू शेयर बाजार लगातार छह कारोबारी सत्रों की तेजी के बाद शुक्रवार को गिरावट के साथ बंद हुए।

बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 344.52 अंक यानी 0.41 प्रतिशत गिरकर 84,211.88 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 599.25 अंक की गिरावट के साथ 83,957.15 अंक पर आ गया था। एनएसई का मानक सूचकांक निफ्टी 96.25 अंक यानी 0.37 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,795.15 अंक पर बंद हुआ। इसके 50 में से 34 शेयरों में गिरावट रही। सेंसेक्स के समूह में शामिल कंपनियों में हिंदुस्तान यूनिलीवर के शेयर में सर्वाधिक 3.20 प्रतिशत की गिरावट आई। अल्ट्राटेक सीमेंट, कोटक महिंद्रा बैंक, अदाणी पोर्ट्स, टाइटन, एचडीएफसी बैंक और एक्सिस बैंक के शेयरों में गिरावट रही।

● विदेशी पूंजी निकासी और मुनाफा वसूली बनी गिरावट का कारण

आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और सन फार्मा के शेयर लाभ में रहे। घरेलू शेयर बाजार लगातार छह सत्रों की तेजी के बाद नुकसान में रहे। इसके पीछे ऊंचे स्तरों पर मुनाफावसूली हावी होने के अलावा अमेरिका के साथ व्यापार समझौते को लेकर वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल की टिप्पणी का भी हाथ रहा। गोयल ने जर्मनी में कहा कि भारत जल्दबाजी में सौदे नहीं करता है और न ही दबाव में आकर समझौते करता है।

विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा, स्वर्ण भंडार 6.18 अरब डॉलर उछला

मुंबई। स्वर्ण भंडार में बड़े उछाल के कारण देश का विदेशी मुद्रा भंडार 17 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में 4.496 अरब डॉलर बढ़कर 702.28 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

रिजर्व बैंक की ओर से जारी आंकड़े के अनुसार, इस सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार का दूसरा सबसे बड़ा घटक स्वर्ण भंडार 6.181 अरब डॉलर की रिकॉर्ड वृद्धि के साथ 108.546 अरब डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। स्वर्ण भंडार लगातार आठवें सप्ताह बढ़ा है। कुछ समय से सोने की कीमतों में जारी तेजी और केंद्रीय बैंक के सोना खरीदने से भंडार लगातार बढ़ रहा है। वहीं, 17 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 1.692 अरब डॉलर घटकर 570.411 अरब डॉलर रह गई। इसमें अमेरिकी डॉलर के अलावा ब्रिटिश पाउंड, जापानी येन और यूरो शामिल हैं।

● विदेशी मुद्रा भंडार में सर्वकालिक रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा भारत

डॉलर को छोड़कर अन्य मुद्राओं का मूल्य डॉलर के मुकाबले उनके विनिमय दर से तय होता है। अन्य घटकों में विशेष आहरण अधिकार 3.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.722 अरब डॉलर और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास आरक्षित निधि तीन करोड़ डॉलर घटकर 4.602 अरब डॉलर पर रही। विदेशी मुद्रा भंडार के मामले में भारत की स्थिति इस समय काफी मजबूत है।

जीएसटी अधिकारी ईमानदार करदाताओं के साथ विनम्र और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें

गाजियाबाद, एजेंसी

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को कहा कि जीएसटी अधिकारियों को ईमानदार करदाताओं के साथ विनम्र एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। गाजियाबाद में सीजीएसटी भवन के उद्घाटन के अवसर पर सीतारमण ने कर अधिकारियों से तेजी से पंजीकरण मंजूरी एवं शिकायत निवारण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने और क्षेत्रीय इकाइयों से सक्रिय रूप से व्यापार करने में सुगमता लाने का भी आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि ऐसा करने से केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) स्पष्ट संदेश देगा कि कदाचार, कर्तव्य की उपेक्षा या अनैतिक व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा, आपके और व्यापारी के बीच कोई लोहे की दीवार नहीं है, बस हवा का एक झोंका है। आप समझ सकते हैं कि समस्या कहां है, बजाय इसके कि उसे और उलझाएं। उन्होंने कहा कि जीएसटी अधिकारियों को ईमानदार करदाताओं के साथ व्यवहार करते समय अधिक सहानुभूति एवं शिष्टाचार दिखाना चाहिए और उन्हें यह एहसास दिलाना चाहिए कि अगली पीढ़ी के जीएसटी के तहत उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जा रहा है।

● गाजियाबाद में सीजीएसटी भवन के उद्घाटन के बाद बोलीं वित्तमंत्री

मंत्री ने कहा, अगर करदाताओं में कुछ लोग बुरे लोग हैं तो उन्हें पकड़ने के लिए नियमों का पालन करें लेकिन हर किसी को संदेह की नजर से न देखें। केंद्रीय मंत्री ने कहा, यह महत्वपूर्ण है कि आप विनम्र बने रहें। अगली पीढ़ी का जीएसटी केवल दरों, श्रेणियों, सरलीकरण के बारे में नहीं है। इससे करदाता को बेहतर महसूस होना चाहिए।

दूसरी तिमाही में रियल्टी क्षेत्र को पूंजी बाजार से मिला 1.15 अरब डॉलर का वित्तपोषण

नई दिल्ली। इस साल जुलाई-सितंबर के दौरान भारतीय रियल एस्टेट क्षेत्र में पूंजी बाजार के जरिए वित्तपोषण पिछली तिमाही के मुकाबले दोगुने से अधिक होकर 1.15 अरब डॉलर हो गया। ग्रांट थॉर्नटन भारत की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

रियल एस्टेट क्षेत्र में जुलाई-सितंबर तिमाही के दौरान तीन श्रेणियों- विलय एवं अधिग्रहण, निजी इक्विटी और पूंजी बाजार में 42 सौदे हुए, जिनका मूल्य 2.85 अरब डॉलर था। रिपोर्ट कहती है कि दूसरी तिमाही में 84.3 करोड़ डॉलर के 21 विलय एवं अधिग्रहण सौदे हुए, इससे पिछली तिमाही में 19.5 करोड़ डॉलर के छह सौदे हुए थे। सितंबर तिमाही में निजी इक्विटी गतिविधियों में जोरदार उछाल आया और 85.9 करोड़ डॉलर के 12 सौदे हुए, जबकि इससे पिछली तिमाही में कुल 58 करोड़ डॉलर मूल्य के सात सौदे हुए थे।

हरियाणा सरकार ने कर्मचारियों का महंगाई भत्ता बढ़ाकर किया 58 प्रतिशत

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने अपने कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को देय महंगाई भत्ते (डीए) एवं महंगाई राहत (डीआर) को मौजूदा 55 प्रतिशत से बढ़ाकर 58 प्रतिशत करने की शुक्रवार को घोषणा की। सातवें वेतन आयोग की संरचना के अनुसार वेतन और पेंशन या पारिवारिक पेंशन प्राप्त करने वालों को अब एक जुलाई 2025 से मूल वेतन एवं पेंशन के मौजूदा 55 प्रतिशत से बढ़ाकर 58 प्रतिशत की दर से डीए और डीआर मिलेगा। मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी द्वारा जारी पत्र के अनुसार, डीए एवं डीआर की बढ़ी हुई दर का भुगतान अक्टूबर माह के वेतन और पेंशन के साथ किया जाएगा। जुलाई से सितंबर माह के 'एरियर' (बकाया) का भुगतान नवंबर में किया जाएगा।

राष्ट्रीय

नीतीश कुमार के नेतृत्व में इस चुनाव में सभी रिकॉर्ड तोड़ेगा राजग: मोदी

प्रधानमंत्री ने तीखे हमले के साथ की बिहार में अपने चुनाव अभियान की शुरुआत

समस्तीपुर/बेगूसराय, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को बिहार में अपने चुनावी अभियान का आगाज करते हुए महागठबंधन पर तीखा हमला बोला और इसे 'महालठबंधन' करार दिया। यह भी कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन पिछले सभी चुनावी रिकॉर्ड तोड़ देगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने बिहार विधानसभा चुनाव का कार्यक्रम घोषित होने के बाद शुक्रवार को अपनी पहली जनसभा समस्तीपुर में की। इसके बाद उन्होंने बेगूसराय में भी एक जनसभा को संबोधित किया। बिहार में महागठबंधन के नाम से जाने जाने वाले विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन पर कटाक्ष करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने इसे महालठबंधन करार दिया। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि 'इंडिया' गठबंधन के दो सबसे बड़े घटक दल राजद और कांग्रेस के नेता सबसे भ्रष्ट और जमानत पर छूटे हुए लोग हैं और दशकों से सत्ता से बाहर रहने के बावजूद वे इतने अहंकारी हैं कि वे झारखंड मुक्ति मोर्चा जैसे गठबंधन सहयोगियों को नजरअंदाज कर रहे हैं और विकासशील इंसान पार्टी को धोखा दे रहे हैं।

बेगूसराय की चुनावी सभा में मोदी।

मोदी ने कहा कि वीआईपी को सीटों में उचित हिस्सा नहीं मिला, लेकिन उसके संस्थापक मुकेश सहनी को उपमुख्यमंत्री का पद देने का वादा किया गया है। महागठबंधन की ओर से मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव पर परोक्ष तौर पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, बिहार के लोग उन लोगों पर भरोसा नहीं कर सकते जो जमानत पर छूटे हुए लोग हैं। तेजस्वी यादव का नाम उनके पिता एवं राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद के साथ नौकरी के लिए जमीन घोटाले में आया है। मोदी ने दोनों जनसभाओं में मौजूद लोगों से अपने मोबाइल फोन की लाइट जलाने को कहा और फिर राजद पर कटाक्ष करते हुए कहा, जब सभी लोगों के पास ऐसे आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं तो लालटेन की कोई जरूरत नहीं है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि राजग सरकार का जोर बिहार में निवेश बढ़ाने पर है।

राजद की हार के बाद मनाएंगे असली दिवाली: शाह

सीवान। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि बिहार में असली दिवाली 14 नवंबर को तब मनाई जाएगी, जब राजद और उसके सहयोगी दल विधानसभा चुनावों में करारी हार का सामना करेंगे। सीवान में एक जनसभा को संबोधित करते हुए शाह ने लालू यादव नीत पार्टी पर जमकर निशाना साधा। कहा, राजद ने माफिया से नेता बने मोहम्मद शहाबुद्दीन के बेटे ओसामा शहाब को रघुनाथपुर सीट से उम्मीदवार बनाकर साबित कर दिया है कि वह फिर से 'जंगलराज' लौटाना चाहता है। शाह ने कहा, सीवान की जनता को सुनिश्चित करना चाहिए कि शहाबुद्दीन के बेटे की चुनाव में करारी हार हो। लालू-राबड़ी के जंगलराज को जनता ने 20 साल तक भुगता है। मुझे विश्वास है कि 14 नवंबर को जब चुनाव परिणाम आएंगे, तब बिहार की जनता असली दिवाली मनाएगी।

तमिलनाडु में अगले सप्ताह से शुरू होगा एसआईआर: आयोग

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा के वर्ष 2026 में होने वाले चुनावों से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया अगले सप्ताह से आरंभ होगी। भारत चुनाव आयोग ने यह जानकारी गुरुवार को मद्रास हाईकोर्ट को दी।

आयोग ने बताया कि यह प्रक्रिया चुनावों से पूर्व मतदाता सूची को अद्यतन करने के लिए पूरे देश में वार्षिक पुनरीक्षण कार्यक्रम का हिस्सा है। यह जानकारी हाईकोर्ट में उस याचिका की सुनवाई के दौरान दी गई, जिसे अन्नाद्रमुक के पूर्व विधायक सत्यनारायणन ने दायर किया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि चेन्नई के टी. नगर में द्रमुक के लगभग 13,000 अन्नाद्रमुक समर्थकों के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं।

पति और उसकी मां के लिए अपशब्द लिखने वाली रेलवे अफसर की तलाक के खिलाफ अपील खारिज

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली हाईकोर्ट ने तलाक मंजूर करने के परिवार न्यायालय के निर्णय के खिलाफ रेलवे की उस ए क्लास महिला अफसर की अपील खारिज कर दी जिसने पति को कमीना और कुतिया का बेटा जैसे संदेश भेजे गए थे। कोर्ट ने कहा है कि पति के अधिकार पर सवाल उठाना और उसकी मां के खिलाफ निंदनीय आरोप लगाना मानसिक क्रूरता है, जो तलाक का आधार है।

हाईकोर्ट ने परिवार अदालत के तलाक आदेश को बरकरार रखते हुए कहा कि अपमानजनक भाषा का प्रयोग, शारीरिक हिंसा और सामाजिक अलगाव समेत महिला का क्रूरतापूर्ण कृत्य अपने आप में विवाह विच्छेद के लिए पर्याप्त आधार हैं। न्यायमूर्ति अनिल क्षेत्रपाल और न्यायमूर्ति हरीश वैद्यनाथन शंकर की पीठ ने 17 अक्टूबर को पारित अपने फैसले में कहा, महिला ने पुरुष को घृणित, अपमानजनक और निंदनीय संदेश भेजे, जिसमें उसके अधिकार पर सवाल उठाना और उसकी मां के खिलाफ निंदनीय आरोप लगाना शामिल था। अदालत ने कहा, ऐसे संदेश जिनमें कमीना, कुतिया का बेटा जैसे शब्द इस्तेमाल किए गए और कहा गया कि उसकी मां को वेश्यावृत्ति करके कमाई करनी चाहिए, अपने आप में सबसे गंभीर प्रकार की मानसिक क्रूरता है।

● हाईकोर्ट ने कहा- पति के अधिकार पर सवाल उठाना, उसकी मां पर निंदनीय आरोप लगाना क्रूरता

बोली- मेरे साथ हुई क्रूरता

हाईकोर्ट ने यह आदेश महिला द्वारा दायर अपील पर पारित किया, जिसमें दावा किया गया था कि परिवार अदालत ने उसके साथ हुई क्रूरता पर विचार नहीं किया तथा पति को गलत तरीके से तलाक दे दिया। महिला भारतीय रेलवे यातायात सेवा की ग्रुप ए अधिकारी है और पुरुष पेशे से वकील है। दोनों ने जनवरी 2010 में विवाह किया था और मार्च 2011 में वे अलग हो गए। यह दोनों की दूसरी शादी थी। परिवार अदालत ने पति के पक्ष में उसकी अलग रह रही पत्नी द्वारा की गई क्रूरता के आधार पर 2023 में तलाक का आदेश दे दिया।

पनामा में रोबोटिक्स ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र सम्मानित

बेंगलुरु। दिव्याश्री ने स्टेम एजुकेशन ट्रस्ट और द इनोवेशन स्टोरी के सहयोग से रेवा विश्वविद्यालय के साथ बेंगलुरु स्थित एक सरकारी स्कूल के पांच उन छात्रों को सम्मानित किया जो पनामा में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित फर्स्ट ग्लोबल चैलेंज 'रोबोटिक्स ओलंपिक 2025' में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। भारत के नवप्रवर्तन पारिस्थितिकी तंत्र के लिए इसे एक गौरवपूर्ण क्षण बताया गया।

सम्मान समारोह रेवा विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया जहां सरकारी हाई स्कूल मल्लेश्वरम के छात्र अर्जुन के राज (रोबोट सीएडी डिजाइनर), जीएन चंदन राज (इलेक्ट्रॉनिक्स प्रमुख), गौरेश के (रोबोट प्रोग्रामर), निंगराज (मैकेनिकल प्रमुख) और परशुराम एम (रोबोट चालक) ने अपने रोबोट का प्रदर्शन किया। रेवा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. पी श्यामा राजू ने युवा नवप्रवर्तकों की सराहना की। इंडिया कोटिएंट के जनरल पार्टनर गगन गोयल ने नवाचार के तीन पी - प्रेरणा, धैर्य और दृढ़ता पर विचार साझा किए। द इनोवेशन स्टोरी की संस्थापक मीनल मजूमदार ने छात्रों को जिज्ञासा और रचनात्मकता के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

● रेवा विश्वविद्यालय दिव्याश्री और रेवा विश्वविद्यालय ने किया सम्मान

छात्रों ने अपने रोबोट का भी प्रदर्शन किया, जो इको इक्विलिब्रियम चुनौती में प्रतिस्पर्धा करेगा। यह वैश्विक कार्यक्रम 190 से अधिक देशों के युवा नवप्रवर्तकों को एक साथ लाता है, जो समस्या-समाधानकर्ताओं और परिवर्तनकर्ताओं की अगली पीढ़ी को सशक्त बनाता है। कार्यक्रम में एफसीजी टीम इंडिया के संरक्षक अखिल अरुण मेनन और संकाय सदस्यों तथा रेवा विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

लेह हिंसा की न्यायिक जांच आज से शुरू होगी

लेह/जम्मू। लेह में 24 सितंबर को हुई हिंसक झड़पों की न्यायिक जांच शनिवार से शुरू होगी और इस दौरान पीड़ितों को जांच पैनल के सदस्यों के समक्ष अपनी गवाही दर्ज कराने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। केंद्र ने लेह में हुई हिंसक झड़पों की उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में न्यायिक जांच कराए जाने की 17 अक्टूबर को घोषणा की थी। यह लद्दाख के प्रदर्शनकारी समूहों की एक प्रमुख मांग थी। लेह में हुई इस झड़प में 1999 के करगिल युद्ध में हिस्सा लेने वाले एक पूर्व सैनिक सहित चार लोगों की जान चली गई थी। विधि एवं न्याय विभाग के सलाहकार कुरैशी तारिक महमूद द्वारा शुक्रवार को जारी एक आदेश में कहा गया, लेह शहर में हुई 24 सितंबर की घटना की न्यायिक जांच 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक लेह के मेलोंगथांग स्थित वैकल्पिक विवाद निवारण केंद्र में होगी।

पुलिसकर्मी ने किया बलात्कार, हाथ पर सुसाइड नोट लिख सरकारी डॉक्टर ने की आत्महत्या

सतारा। महाराष्ट्र के सतारा जिले में एक सरकारी अस्पताल में कार्यरत महिला चिकित्सक ने फंदे पर लटककर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि महिला चिकित्सक ने अपनी हथेली पर एक 'सुसाइड नोट' छोड़ा है, जिसमें उसने एक पुलिसकर्मी पर बलात्कार और मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घटना का संज्ञान लेते हुए सतारा के एसपी तुषार दोशी से फोन पर बात की और आरोपी पुलिस उपनिरीक्षक को तत्काल बर्खास्त करने का आदेश दिया। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि बीड जिले से ताल्लुक रखने वाली 28 वर्षीय महिला चिकित्सक फलटण तहसील के एक सरकारी अस्पताल में काम करती थीं। महिला चिकित्सक का शव बृहस्पतिवार देर रात फलटण में एक होटल के कमरे में फांसी के फंदे से लटकता हुआ मिला। पुलिस के अनुसार, महिला चिकित्सक ने अपनी हथेली पर लिखे 'सुसाइड नोट' में आरोप लगाया है कि पिछले पांच महीनों में सतारा के एक पुलिस उपनिरीक्षक ने उसके साथ कई बार बलात्कार किया, जबकि एक अन्य व्यक्ति उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहा था। पुलिस ने बताया कि सुसाइड नोट में महिला चिकित्सक ने लिखा है कि उपनिरीक्षक गोपाल बदाने ने उसके साथ कई बार बलात्कार किया, जबकि पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर प्रशांत बनकर ने उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित किया।

मोदी बताएं, 65% आरक्षण का प्रावधान नौवीं अनुसूची में क्यों नहीं डाला: कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बिहार दौरे से पहले शुक्रवार को कहा कि उन्हें यह बताना चाहिए कि पिछड़ों, अति पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों के लिए 65 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान को संविधान की नौवीं अनुसूची में क्यों नहीं डाला गया। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, प्रधानमंत्री आज कर्पूरी ठाकुर जी के गांव जा रहे हैं। उनके लिए तीन सीधे सवाल हैं। उन्होंने कहा, कर्पूरी ठाकुर जी ने 1978 में पिछड़ों को 26 प्रतिशत आरक्षण देकर सामाजिक न्याय की ऐतिहासिक नींव रखी थी। क्या यह सही नहीं है कि आपकी पार्टी के वैचारिक पूर्वज जनसंघ और आरएसएस ने उनकी आरक्षण नीति का खुलकर विरोध किया था। क्या उस समय जनसंघ-आरएसएस ने सड़कों पर कर्पूरी ठाकुर जी के खिलाफ अपमानजनक और घृणा से भरे नारे नहीं लगाए थे क्या उस दौर में जनसंघ-आरएसएस खेमे के प्रमुख नेताओं ने कर्पूरी ठाकुर सरकार को अस्थिर करने और गिराने में अहम भूमिका नहीं निभाई थी। कांग्रेस नेता ने सवाल किया, क्या प्रधानमंत्री आज उस ऐतिहासिक गलती के लिए अपने वैचारिक पूर्वजों - जनसंघ और आरएसएस की ओर से माफ़ी मांगेंगे।

भाजपा ने नीतीश को हाईजैक किया, राजग जीती तो नहीं बनेंगे मुख्यमंत्री: तेजस्वी

पटना। राजद के नेता और महागठबंधन की तरफ से मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव ने शुक्रवार को भाजपा पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को हाईजैक कर लेने का आरोप लगाया और दावा किया कि अगर बिहार में एक बार फिर राजग की सरकार बनी, तो नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री नहीं बनाया जाएगा।

सहरसा जिले के सिमरी बख्तियारपुर में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए तेजस्वी ने यह भी कहा कि विपक्षी गठबंधन की सरकार बनने पर मुकेश सहनी के अलावा अन्य समाज और धर्म के लोगों को भी उप मुख्यमंत्री का दायित्व सौंपा जाएगा तथा इस बारे में जल्द घोषणा की जाएगी। राजद नेता ने दावा किया, अमित शाह पहले ही कह चुके हैं कि चुनाव के बाद विधायक तय करेंगे कि मुख्यमंत्री कौन बनेगा। स्पष्ट हो गया है कि अगर राजग को सत्ता मिली तो नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री नहीं बनाया जाएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि नीतीश कुमार को भाजपा ने हाइजैक कर लिया है और गुजरात के दो लोग संकेत रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह बिहार चला रहे हैं।

भारत की गर्जना...

भारतीय वायु सेना (आईएएफ) की सूर्य किरण एरोबैटिक टीम (एसकेएटी) शुक्रवार को गुजरात के मेहसाणा में हवाई अड्डे के ऊपर युद्धाभ्यास करती हुई।

अमेरिका-रूस के बीच विवाद

अमेरिका और रूस के बीच तनाव एक पुरानी समस्या है, जो हाल के वर्षों में और भी बढ़ गई है। यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद से अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने रूस पर कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं। जिनमें रूस के तेल और गैस क्षेत्र को निशाना बनाना शामिल है। हाल ही में, अमेरिका ने रूस की दो बड़ी तेल कंपनियों, रोसनेफ्ट और लुकोइल पर प्रतिबंध लगाए हैं। अमेरिका चाहता है कि भारत भी रूस से तेल खरीदना बंद कर दे और उसके साथ व्यापारिक संबंधों को सीमित करे।

भारत का यह कहना है : भारत सरकार ने कहा है कि उसकी ऊर्जा नीति बाजार की जरूरतों और राष्ट्रीय हितों पर आधारित है। भारत ने अमेरिका को आश्वस्त किया है कि उसके साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन वह अपनी ऊर्जा सुरक्षा के हितों को भी ध्यान में रखेगा।

भारत के लिए चुनौतियां

अमेरिका को क्या फायदा होगा?

अगर भारत रूस से तेल खरीदना बंद कर देता है, तो अमेरिका को कई फायदे होंगे। रूस की अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ेगा, जिससे वह यूक्रेन में अपने सैन्य अभियान को जारी रखने में मुश्किलों का सामना करेगा। अमेरिका को अपने ऊर्जा बाजार को मजबूत करने में मदद मिलेगी, जिससे उसकी ऊर्जा सुरक्षा बढ़ेगी। भारत-अमेरिका के बीच द्विपक्षीय संबंधों में सुधार होगा, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार और सुरक्षा सहयोग बढ़ेगा।

रूस की सख्त प्रतिक्रिया

प्रतिबंधों को लेकर रूस की प्रतिक्रिया बहुत ही सख्त और आत्मविश्वास से भरी हुई है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अमेरिकी प्रतिबंधों को अनफ्रेंडली एक्ट बताया है और कहा है कि इससे रूस और अमेरिका के बीच संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। पुतिन ने कहा है कि इन प्रतिबंधों का रूस पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा। पुतिन ने यह भी चेतावनी दी है कि अगर रूस पर अमेरिकी टोमहॉक मिसाइलों से हमला किया गया, तो जवाब बहुत मजबूत होगा। रूसी विदेश मंत्रालय ने कहा है कि प्रतिबंध रूस-यूक्रेन संघर्ष की समाप्ति को बातचीत की संभावनाओं को कम करेंगे।

अमेरिका रूस से यह चाहता है

अमेरिका रूस से चाहता है कि वह यूक्रेन पर हमला बंद करे और अपने सैनिकों को वापस बुलाए। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यूक्रेन मुद्दे पर रूस के साथ समझौता करने की इच्छा जताई है, लेकिन यूक्रेन की सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने पर जोर दिया है। ट्रंप ने कहा है कि वह यूक्रेन और रूस के बीच शांति समझौते के लिए काम कर रहे हैं, लेकिन दोनों पक्षों को अपनी सहमति देनी होगी।

भारत पर बड़ा दबाव

ट्रंप प्रशासन ने भारत को चेतावनी दी है कि वह रूस से तेल खरीदना जारी रखता है, तो उसे आर्थिक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। भारत के लिए यह एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि वह अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए रूस से तेल खरीदता है। भारत ने रूस से तेल खरीदने का फैसला अपनी ऊर्जा सुरक्षा के हित में लिया है, लेकिन अमेरिका के दबाव का सामना करना उसके लिए मुश्किल हो रहा है।

जटिल मुद्दा, कई पक्षों के हित शामिल

अमेरिका-रूस विवाद और भारत के लिए चुनौतियां एक जटिल मुद्दा है, जिसमें कई पक्षों के हित शामिल हैं। भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा के हितों को ध्यान में रखते हुए अमेरिका के दबाव का सामना करना होगा और अपनी द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने के लिए काम करना होगा।

वर्ल्ड ब्रीफ

लंदन में ईयू नेताओं से मिलेंगे जेलेंस्की

लंदन। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की शुक्रवार को 20 से अधिक यूरोपीय नेताओं के साथ वार्ता के लिए लंदन में होंगे। इन नेताओं ने तीन साल से अधिक समय से जारी युद्ध को रोकने के लिए संघर्षविराम होने पर यूक्रेन को भविष्य में रूस की आक्रामकता से बचाने के लिए सैन्य सहायता देने का वादा किया है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टार्मर द्वारा आयोजित इस बैठक में सर्दियों के आगमन के साथ रूस द्वारा लगभग हर दिन किए जाने वाले ड्रोन और मिसाइल हमलों से यूक्रेन की विद्युत ग्रिड की सुरक्षा करने में मदद के तरीकों पर भी चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही यूक्रेनी हवाई सुरक्षा को मजबूत करने और कीव को रूस के अंदर तक हमला करने में सक्षम लंबी दूरी की मिसाइलों की आपूर्ति करने पर भी चर्चा की जाएगी।

कनाडा : दिवाली पर जारी किया डाक टिकट

ओटावा। कनाडा पोस्ट ने देश के बहुसांस्कृतिक ताने-बाने का जश्न मनाने के लिए दिवाली की थीम पर आधारित एक नया डाक टिकट जारी किया है। ओटावा स्थित भारतीय उच्चायोग ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर किए गए एक पोस्ट में दिवाली के उपलक्ष्य में पारंपरिक रंगोली वाला डाक टिकट जारी करने के लिए 'कनाडा पोस्ट' का आभार जताया। 'कनाडा' पोस्ट ने कहा कि दीपावली न सिर्फ कनाडा, बल्कि दुनियाभर में हिंदुओं, सिखों, बौद्ध, जैनियों और अन्य समुदायों द्वारा मनाया जाने वाला एक प्रमुख त्योहार है तथा इस अवसर पर देश की सांस्कृतिक विविधता को मान्यता देते हुए एक डाक टिकट जारी कर हमें गर्व महसूस हो रहा है।

पाकिस्तान में आठ आतंकवादी मारे गए

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में शुक्रवार को खुफिया सूचना पर आधारित एक अभियान के दौरान टीटीपी के आठ आतंकवादी मारे गए और पांच अन्य घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि यह अभियान लक्की मारवात जिले के वांडा शेख अल्लाह इलाके में चलाया गया। जिसमें प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आठ आतंकवादी मारे गए और पांच अन्य घायल हो गए। एक अन्य घटना में, शुक्रवार को दक्षिण वजीरिस्तान की सीमा से लगे टैंक जिले में अज्ञात हमलावरों ने विस्फोट कर एक नवनिर्मित सरकारी बालिका प्राथमिक विद्यालय भवन को उड़ा दिया। घटना सियाल गुल कोरोना के गारा बुड्ढा गांव में हुई। इस विस्फोट में कोई हताहत नहीं हुआ।

अमेरिका का दावा, भारत ने रूस से तेल आयात कम करना शुरू किया

व्हाइट हाउस ने कहा-राष्ट्रपति ट्रंप के अनुरोध के बाद ही भारत ने ऐसा किया

वाशिंगटन, एजेंसी

व्हाइट हाउस ने दावा किया है कि भारत ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के अनुरोध पर रूस से तेल आयात को कम करना शुरू कर दिया है। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलीन लेविट ने गुरुवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि अगर आप रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों को देखें, तो वे काफी सख्त हैं। वह यह बात रूस की दो सबसे बड़ी तेल कंपनियों रोसनेफ्ट और लुकोइल पर बुधवार को लगाए गए अमेरिकी प्रतिबंधों के संदर्भ में कह रही थीं। ये प्रतिबंध रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच मॉस्को के प्रमुख राजस्व स्रोतों को सीमित करने के प्रयास का हिस्सा हैं। लेविट ने कहा, मैंने कुछ अंतर्राष्ट्रीय खबरें देखी हैं जिनमें कहा गया है कि चीन रूस से तेल की खरीद घटा रहा है; हमें पता है कि भारत ने भी राष्ट्रपति के अनुरोध पर ऐसा किया है।

उन्होंने बताया कि वाशिंगटन ने अपने यूरोपीय सहयोगियों से भी रूसी तेल आयात घटाने का आग्रह किया है, जिसे उन्होंने मॉस्को के युद्ध-वित्तपोषण चैनलों के खिलाफ एक पूर्ण दबाव अभियान बताया। अमेरिकी प्रशासन पिछले कुछ दिनों से दावा कर रहा है कि भारत ने रूस से तेल आयात में उल्लेखनीय कमी लाने का आश्वासन दिया है।

- वाशिंगटन का यूरोपीय सहयोगियों से भी रूसी तेल आयात घटाने का आग्रह

भारत हालांकि लगातार यह कहता रहा है कि उसकी ऊर्जा नीति उसके राष्ट्रीय हितों द्वारा निर्देशित होती है विशेष रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके उपभोक्ताओं को सस्ती और सुरक्षित ऊर्जा आपूर्ति मिले। अमेरिका का कहना है कि रूस से कच्चा तेल खरीदकर भारत, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को यूक्रेन युद्ध के लिए आर्थिक सहायता दे रहा है। भारत और अमेरिका के बीच बीच संबंध हाल के दिनों में तनावपूर्ण हो गए हैं, खासकर तब जब ट्रंप ने भारतीय उत्पादों पर शुल्क दोगुना, 50 प्रतिशत तक कर दिया, जिसमें रूस से तेल खरीदने पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क भी शामिल है। भारत ने इस अमेरिकी कार्रवाई को अनुचित, अन्यायपूर्ण और अविवेकी बताया है।

लेविट ने कहा कि ट्रंप ने पहले ही संकेत दिया था कि वह रूस के खिलाफ उचित और आवश्यक समय आने पर कार्रवाई करेंगे और कल वही दिन था। उन्होंने कहा कि ट्रंप काफी समय से पुतिन के प्रति नाराज़गी व्यक्त करते रहे हैं क्योंकि पुतिन शांति समझौते की दिशा में पर्याप्त रुचि या पहल नहीं दिखा रहे थे। ट्रंप और पुतिन की इस वर्ष के अंत में हंगरी में बैठक प्रस्तावित थी, लेकिन अब इसे अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया है। लेविट ने कहा कि बैठक पूरी तरह से टली नहीं है।

भारतीय रिफाइनरी पश्चिम एशिया से अधिक तेल खरीदेंगी, अमेरिका ले सकता है रूस की जगह

नई दिल्ली। दो रूसी तेल उत्पादक कंपनियों पर अमेरिकी प्रतिबंध लगाए जाने के बाद भारतीय रिफाइनरी कंपनियां रूस से कच्चे तेल आयात में होने वाली कमी की भरपाई के लिए पश्चिम एशिया, लातिन अमेरिका और अमेरिका से कच्चे तेल की खरीद बढ़ा सकती हैं। सूत्रों और विश्लेषकों ने यह अनुमान जताया है। अमेरिकी सरकार ने 22 अक्टूबर को रूस के दो सबसे बड़े कच्चे तेल उत्पादकों रॉसनेफ्ट और ल्यूकऑयल पर प्रतिबंध लगा दिए। सभी अमेरिकी संस्थाओं और व्यक्तियों को इन कंपनियों के साथ व्यापार करने से रोक दिया गया है। इस समय भारत के कच्चे तेल आयात में लगभग एक तिहाई हिस्सा रूस का है। रूस ने भारत को वर्ष 2025 में औसतन लगभग 17 लाख बैरल प्रतिदिन कच्चे तेल का निर्यात किया। इसमें से लगभग 12 लाख बैरल प्रतिदिन तेल सीधे रॉसनेफ्ट और ल्यूकऑयल से आया। इनमें से ज्यादातर तेल निजी रिफाइनरी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और नायरा एनर्जी ने खरीदा था। सरकारी रिफाइनरी कंपनियों की इसमें कम हिस्सेदारी ही रही है। केप्लर के प्रमुख शोध विश्लेषक सुमित रितोलिया ने कहा कि 21 नवंबर तक रूसी कच्चे तेल की आवक 16-18 लाख बैरल प्रतिदिन के दायरे में रहने की उम्मीद है, लेकिन उसके बाद रॉसनेफ्ट और ल्यूकऑयल से सीधे आयात में गिरावट आ सकती है। जाहिर है कि भारतीय रिफाइनरी कंपनियां अमेरिकी प्रतिबंधों के किसी भी जोखिम से बचना चाहती हैं।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधारों की तत्काल आवश्यकता : जयशंकर

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधारों की तत्काल आवश्यकता पर जोर देते हुए शुक्रवार को कहा कि वैश्विक निकाय का कामकाज अवरुद्ध हो गया है। भारत ने पहलगाम हमले की जिम्मेदारी लेने वाले आतंकवादी संगठन को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बचाने संबंधी पाकिस्तान के प्रयासों का हवाला देते हुए यह टिप्पणी की। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने वैश्विक रणनीति के नाम पर आतंकवाद के पीड़ितों और गुनाहगारों की तुलना करने वालों की भी आलोचना की। उन्होंने यह टिप्पणी भारत और पाकिस्तान को एक ही तराजू में तौलने की प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हुए की, खासकर हाल में हुए आतंकवादी हमले के संदर्भ में। जयशंकर ने संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की 80वीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि संयुक्त राष्ट्र में सब कुछ ठीक नहीं है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में होने वाली बहसें अब बहुत ज्यादा बंटी हुई हैं और उसका कामकाज साफ तौर पर रुका हुआ दिख रहा है।

जयशंकर ने कहा कि किसी भी सार्थक सुधार को उसकी अपनी प्रक्रिया के जरिए ही रोका जा रहा है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र को बनाए रखना तथा इसके पुनर्निर्माण की मांग करना स्पष्ट रूप से विश्व के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।

संयुक्त राष्ट्र के 80 वर्ष पूरे होने पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए विदेश मंत्री।

- विदेशमंत्री बोले-अवरुद्ध हो गया है वैश्विक निकाय का काम
- यूएन की 80वीं वर्षगांठ पर कहा-संयुक्त राष्ट्र में सब ठीक नहीं

पीड़ितों-अपराधियों को एक श्रेणी में रखना निंदनीय

जयशंकर ने कहा कि आतंकवाद के पीड़ितों और अपराधियों को एक ही श्रेणी में रखना दुनिया को और अधिक निंदनीय बना देता है। जब खुद को आतंकवादी कहने वालों को प्रतिबंधों से बचाया जाता है, तो इसमें शामिल लोगों की ईमानदारी पर सवाल उठता है। पाकिस्तान वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सदस्य है। जुलाई में वह इस शीर्ष वैश्विक संस्था का अध्यक्ष था।

जयशंकर ने कहा कि आतंकवाद के प्रति संयुक्त राष्ट्र की प्रतिक्रिया से ज्यादा, कुछ उदाहरण संयुक्त राष्ट्र के सामने मौजूद चुनौतियों को दर्शाते हैं। जब सुरक्षा परिषद का एक वर्तमान सदस्य उसी संगठन का खुलेआम बचाव करता है जिसने पहलगाम जैसे बर्बर आतंकवादी हमले की जिम्मेदारी ली है, तो इससे बहुपक्षवाद की विश्वसनीयता पर क्या असर पड़ता है? जयशंकर ने हालांकि सीधे तौर पर पाकिस्तान का नाम नहीं लिया, लेकिन उनकी टिप्पणी से यह स्पष्ट था कि वह उसी देश का उल्लेख कर रहे थे।

लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) आतंकवादी समूह से जुड़े 'द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने पहलगाम आतंकवादी हमले की जिम्मेदारी ली थी। जुलाई में यूएनएससी की रिपोर्ट में पहलगाम हमले में टीआरएफ की भूमिका का उल्लेख किया गया था। अधिकारियों के अनुसार, पाकिस्तान ने पहलगाम हमले की निंदा करने वाले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रेस वक्तव्य में टीआरएफ का उल्लेख हटाने का प्रयास किया था। जयशंकर ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ज्वलंत मुद्दों का समाधान करने में विफल रहा है।

पाकिस्तान में महिला का खुला अधिकार बरकरार

इस्लामाबाद, एजेंसी

- पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने सुनाया ऐतिहासिक फैसला

पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए 'खुला' के माध्यम से वैवाहिक संबंध समाप्त करने के एक महिला के अधिकार को बरकरार रखा और मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार को तलाक के लिए एक वैध आधार के रूप में मान्यता दी है।

खुला एक इस्लामी अवधारणा है जो विवाह विच्छेद के महिला के अधिकार को मान्यता देती है। यह तलाक के विपरीत है जो पुरुष को यह अधिकार प्रदान करता है। उच्चतम न्यायालय की दो महिला न्यायाधीशों में से एक न्यायमूर्ति आयशा ए मलिक ने यह निर्णय लिखा जिसे शुक्रवार को न्यायालय की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। यह फैसला एक महिला द्वारा दायर याचिका की सुनवाई के दौरान दिया गया जिसने पेशावर उच्च न्यायालय (पीएचसी) द्वारा उसके विवाह विच्छेद के दावे को खारिज किए जाने के निर्णय को चुनौती दी थी। पीएससी ने इस आधार पर उसके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया कि उसके पति की सहमति आवश्यक है और सुलह के सभी प्रयास अभी नहीं किए गए हैं।

गाजा शांति समझौता स्थिरता की दिशा में ऐतिहासिक कदम

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी

भारत ने हाल ही में हस्ताक्षरित गाजा शांति समझौते को पश्चिम एशिया में स्थिरता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया और पुनः दोहराया कि दो-राष्ट्र समाधान ही इजराइल और फलस्तीन के बीच स्थायी शांति स्थापित करने का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में गुरुवार को पश्चिम एशिया की स्थिति पर आयोजित त्रैमासिक खुली बहस में, विश्व निकाय में भारत के स्थायी प्रतिनिधि एवं राजदूत पार्वतनेनी हरीश ने कहा कि भारत की हार्दिक इच्छा है कि एक स्थिर और शांतिपूर्ण पश्चिम एशिया का सपना साकार हो... वंचना और अपमान किसी के दैनिक जीवन का हिस्सा नहीं होना चाहिए; संघर्ष के कारण निर्दोष नागरिकों की जान नहीं जानी चाहिए।

- दो राष्ट्र समाधान से ही इजराइल-फलस्तीन में स्थायी शांति : भारत

उन्होंने कहा कि भारत इस दिशा में अपने योगदान के लिए पूरी तरह तैयार है। हरीश ने आशा व्यक्त की कि इस महीने की शुरुआत में शर्म अल-शेख में आयोजित शांति सम्मेलन से उत्पन्न सकारात्मक कूटनीतिक गति क्षेत्र में स्थायी शांति की ओर अग्रसर होगी। उन्होंने इस ऐतिहासिक शांति समझौते का स्वागत करते हुए अमेरिका, विशेष रूप से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भूमिका की सराहना की और मिस्र तथा कतर के योगदान की भी प्रशंसा की। भारत की पुरानी नीति दोहराते हुए उन्होंने कहा कि दो-राष्ट्र समाधान ही एकमात्र व्यावहारिक मार्ग है। अब समय है कि सभी पक्ष चल रही शांति प्रक्रिया का समर्थन करें, न कि उसे बाधित करें। भारत लंबे समय से एक स्वतंत्र, संप्रभु और सक्षम फलस्तीनी राष्ट्र का समर्थन करता आया है, जो सुरक्षित और मान्यता प्राप्त सीमाओं के भीतर इजराइल के साथ शांति के साथ रहे और सुरक्षित रहे। हरीश ने कहा कि संवाद और कूटनीति ही शांति का रास्ता हैं। अमेरिका की यह ऐतिहासिक पहल शांति की दिशा में कूटनीतिक गति लेकर आई है और सभी पक्षों को अपने दायित्वों का पालन करना चाहिए। भारत किसी भी एकतरफा कदम का दृढ़ता से विरोध करता है।

फलस्तीनी जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन

फलस्तीनी जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करते हुए हरीश ने पिछले महीने दो-राष्ट्र समाधान के क्रियान्वयन पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र उच्चस्तरीय सम्मेलन का हवाला दिया, जिसमें आगे की राह पर बल दिया गया था। मानवीय मोर्चे पर उन्होंने कहा कि भारत ने अब तक 17 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की सहायता फलस्तीन को दी है, जिसमें चार करोड़ डॉलर के चल रहे प्रोजेक्ट और पिछले दो वर्षों में 135 मीट्रिक टन दवाएं एवं राहत सामग्री शामिल हैं। हरीश ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सहयोग के बिना फलस्तीनी लोग अपना जीवन नए सिरे से शुरू नहीं कर सकते हैं। उन्होंने निवेश और रोजगार के अनुकूल आर्थिक ढांचे के निर्माण का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि फलस्तीनी मोर्चे पर शांति और स्थिरता का प्रभाव व्यापक क्षेत्र पर पड़ता है... वार्ता जारी रहनी चाहिए और संवाद एवं कूटनीति की प्रभावशीलता पर अटूट विश्वास बनाए रखना आवश्यक है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 25 अक्टूबर, शनिवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-कार्तिक, पक्ष-शुक्ल पक्ष, चतुर्थी 26 अक्टूबर 03 .48 तक तत्पश्चात पंचमी।

आज का पंचांग

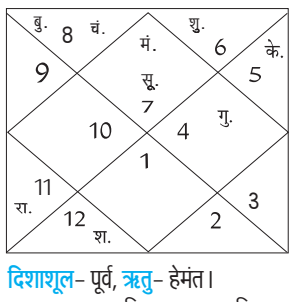

दिशाशूल- पूर्व, ऋतु- हेमंत।
चन्द्रबल- वृषभ, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- अनुराधा 07 .51 तक तत्पश्चात ज्येष्ठा।

मेष — आज सोच-समझकर ही धन संबंधी निर्णय लें। खानपान में शुद्धता का ध्यान रखना आवश्यक होगा। राजनीति से जुड़े लोगों को सावधान रहना चाहिए। अनैतिक कृत्यों की ओर प्रेरित हो सकते हैं। अपने शुभचिंतकों की सलाह को अन्यथा न लें।

वृष — आज आपकी योजना सफल होगी। विवादों को सुलझा सकते हैं। घर में कुछ मेहमानों का आगमन हो सकता है। कार्यक्षेत्र में सकारात्मक परिणाम मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। दिनचर्या थोड़ी असामान्य हो सकती है।

मिथुन — आज नकारात्मक आदतों को छोड़ने का प्रयास करें। अपनी योजनाओं को लोगों के सामने साझा न करें। लोग आपके भोलेपन का लाभ उठा सकते हैं। आप दूसरों की सहायता करने की पूरी कोशिश करेंगे। घर का वातावरण अनुशासित रहेगा।

कर्क — आज कारोबार को लेकर अधिक तनाव न लें। उधार लेन-देन को लेकर थोड़ी समस्या होगी। अपनी क्षमता और योग्यता पर संदेह न करें। आलस्य में अपना समय बर्बाद न करें। प्रेम संबंधों को लेकर थोड़े गंभीर रहें।

सिंह — आज यदि घर बेचना चाह रहे हैं, तो आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना है। विरोधी आपकी आलोचना कर सकते हैं। कुछ लोग आपका मूड खराब करने का प्रयास करेंगे। उच्च शिक्षा को लेकर काफी मेहनत करेंगे।

कन्या — आज काम के प्रति एकाग्रता में वृद्धि होगी। आपकी समस्याओं का समाधान आपको मिल सकता है। आप काफी अच्छे मूड में रहेंगे। उच्च अधिकारी आपकी प्रशंसा कर सकते हैं। रिश्तेदारों से शुभ समाचार मिलने की संभावना है।

तुला — आज आपको अनावश्यक खर्च करने से बचना चाहिए। लोग आपकी बातों का गलत मतलब न निकालें इसका ध्यान रखें। कला जगत से जुड़े लोगों को बड़े मौके मिल सकते हैं। यदि सर्दी-खांसी से पीड़ित हैं, तो तुरंत उसका इलाज करवाएं।

वृश्चिक — आज साझेदारी वाले व्यापार में अच्छा लाभ हो सकता है। फिलहाल वर्तमान के कार्यों में ही ध्यान दें। भविष्य की योजना न बनाएं। विरोधियों के ऊपर आप भारी पड़ेंगे। आप रोमांचक कार्यों में रुचि ले सकते हैं। कारोबार की स्थिति में सुधार होगा।

धनु — आज नौकरी में अचानक स्थान परिवर्तन से परेशान हो सकते हैं। भूमि संबंधित मामलों में अड़चन आने की संभावना है। आदर्शवादी होने से आपको बचना चाहिए। लोग आपको धोखा दे सकते हैं। जीवनसाथी के साथ संबंध प्रभावित हो सकते हैं।

मकर — आज पुराने रोग से मुक्ति मिलने के अच्छे योग हैं। अपना खानपान अत्यंत संतुलित रखें। सभी काम सही समय पर पूर्ण हो जाएंगे। आपकी सलाह से लोगों को बहुत लाभ होगा। प्रेम संबंधों को परिवार से स्वीकृति मिल सकती है।

कुंभ — आज लोग आपकी बातों को ध्यान से सुनेंगे। स्वास्थ्य थोड़ा नरम सा हो सकता है। लंबित योजनाओं को क्रियान्वित करने में सरलता होगी। परिवार में थोड़ा काम की अधिकता रहेगी। पिताजी अथवा गुरुजनों के साथ किसी गंभीर मुद्दे पर चर्चा हो सकती है।

मीन — आज बनते हुए कार्यों में विघ्न आने की आशंका है। अध्यात्मिक चिंतन को आप समय देंगे। बुजुर्गों के व्यवहार से आप आहत हो सकते हैं। व्यापारिक यात्रा के लिए जाना पड़ सकता है। अनावश्यक खर्चों को नियंत्रित कर लें।

सुडोकू-140

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

	4	6						
		7	5					4
		9		2		8		
4						7		8
			3		7			
5		8						2
		4		6		3		
8		3			9	4		6
	1					9	8	

सुडोकू - 139 का हल

8	7	9	2	4	6	1	3	5
6	5	3	7	9	1	4	8	2
1	2	4	3	8	5	6	9	7
4	8	2	5	7	9	3	6	1
5	3	1	6	2	8	7	4	9
7	9	6	1	3	4	2	5	8
9	1	7	4	5	3	8	2	6
3	6	5	8	1	2	9	7	4
2	4	8	9	6	7	5	1	3

एक्सपीरियंस सेंटर शतरंज को अधिक आकर्षक, इंटरैक्टिव और ग्लोबल बनाने की दिशा में अगला कदम है। मुझे यह देखकर गर्व है कि टेक महिंद्रा खेल के विस्तार और अगली पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए टेक्नोलॉजी का कैसे प्रयोग कर रहा है।

विश्वनाथन आनंद

स्टेडियम

हल्द्वानी, शनिवार, 25 अक्टूबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

पंजाब एफसी ने पाब्लो से किया अनुबंध

मोहाली : पंजाब एफसी ने इस सप्ताहांत गोवा में शुरू होने वाले सुपर कप फुटबॉल टूर्नामेंट से पहले शुक्रवार को ब्राजील के अनुभवी सेंटर बैक पाब्लो रेनन डॉस सैंटोस को एक साल के अनुबंध पर टीम में शामिल किया। इस 33 वर्षीय खिलाड़ी को विश्व भर की कई फुटबॉल लीग में खेलने का व्यापक अनुभव है और उनकी मौजूदगी से पंजाब एफसी की टीम की रक्षा पंक्ति को मजबूती मिलेगी। पंजाब की टीम से जुड़ने के बारे में पाब्लो ने कहा कि पंजाब एफसी की टीम का इस सत्र में काफी व्यस्त कार्यक्रम है और मैं यहां सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने को तैयार हूं। मैं चुनौती के लिए तैयार हूं।

अली तरीन ने पीसीबी का कानूनी नोटिस फाड़ा

कराची : पाकिस्तान सुपर लीग (पीसीएल) की फ्रेंचाइजी मुल्तान सुल्तांस के मालिक अली तरीन ने रिकॉर्डेड वीडियो में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) द्वारा उन्हें भेजे कानूनी नोटिस को फाड़ दिया, जिसमें उनकी टीम का अनुबंध समाप्त करने की धमकी दी गई थी। अली तरीन और पीसीबी के बीच विवाद अब सार्वजनिक रूप से सामने आ गया है। गुरुवार को इसका खुलासा हुआ कि पीसीबी ने इस फ्रेंचाइजी को कानूनी नोटिस भेजा है। इसमें कहा गया है कि वह पीएसएल के संचालन के तरीके की आलोचना करने पर सार्वजनिक रूप से माफी मांगे तथा ऐसा नहीं करने पर उनका फ्रेंचाइजी अनुबंध रद्द कर दिया जाएगा।

जडेजा की मौजूदगी से मध्य प्रदेश के खिलाफ सौराष्ट्र मजबूत स्थिति में

रणजी ट्रॉफी

राजकोट, एजेंसी

सौराष्ट्र की टीम रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप बी के दूसरे दौर के मैच में शनिवार को जब मध्य प्रदेश के खिलाफ मैदान में उतरेगी तो शानदार लय में चल रहे अनुभवी हरफनमौला रविंद्र जडेजा की मौजूदगी से टीम का मनोबल काफी ऊंचा होगा। जडेजा की बाएं हाथ की स्पिन गेंदबाजी निरंजन शाह स्टेडियम की पिच पर सौराष्ट्र की गेंदबाजी को मजबूती देगी, जहां पिछले सप्ताह कर्नाटक के खिलाफ पहले दौर के मैच में स्पिनरों ने 31 विकेट चटकाए थे।

चेतेश्वर पुजारा के संन्यास के बाद सौराष्ट्र का मध्यक्रम पिछले मैच में कमजोर नजर आया, लेकिन जडेजा की मौजूदगी से टीम का आत्मविश्वास काफी बढ़ेगा। जडेजा शानदार लय में चल रहे हैं। उन्होंने इंग्लैंड में पांच मैचों की शृंखला में बल्लेबाजी से प्रभावित करने के बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अहमदाबाद में खेले गए पहले टेस्ट मैच में नाबाद 104 रन की पारी खेली। मध्य प्रदेश को उम्मीद होगी कि पंजाब के खिलाफ नाबाद 205 रन की पारी खेलने वाले कप्तान रजत पाटीदार के साथ वेंकटेश अय्यर और यश दुबे बल्ले से योगदान देना जारी रखेंगे। सौराष्ट्र चाहेगा कि हार्विक देसाई, प्रेरक मांकड़ और अनुभवी अर्पित वासवडा जैसे खिलाड़ी मध्य प्रदेश की गेंदबाजी के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करें। मध्यप्रदेश की उम्मीदें स्पिनर कुमार कार्तिकेय, शुभम शर्मा और सारांश जैन पर टिकी होंगी जिसने पंजाब के बल्लेबाजों को परेशान किया था।

रविंद्र जडेजा

ग्रुप के अन्य मैचों में कर्नाटक की टीम गोवा के खिलाफ जीत का खाता खोलने को जोर लगाएगी। कर्नाटक अपने पहले मैच में सौराष्ट्र के खिलाफ मामूली अंतर से बढ़त लेने से चूक गया था। कप्तान मयंक अग्रवाल, देवदत्त पडिक्कल, करुण नायर और आर स्मरण की मौजूदगी से कर्नाटक की टीम कागजों पर मजबूत दिख रही है लेकिन गोवा के पास भी ललित यादव, दर्शन मिसल और सुयश प्रभुदेसाई जैसे खिलाड़ी है जो इस टूर्नामेंट में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। ग्रुप बी के अन्य मैचों में पिछले साल के उपविजेता केरल के सामने पंजाब की चुनौती होगी जबकि चंडीगढ़ का समाना महाराष्ट्र से होगा।

हिमाचल के खिलाफ पूरे अंक हासिल करना चाहेगी दिल्ली

नई दिल्ली। आत्मविश्वास से लबरेज दिल्ली की टीम हिमाचल प्रदेश के खिलाफ पूरे अंक हासिल करने की कोशिश करेगी, लेकिन इस बात पर बहस जारी है कि मुख्य कोच सरनदीप सिंह शनिवार से शुरू हो रहे रणजी ट्रॉफी ग्रुप डी मैच के लिए प्रतिभाशाली प्रियांश आर्य को अंतिम एकादश में चुनेंगे या नहीं। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) में अजीबोगरीब चीजें होती रही हैं और भारत ए के मौजूदा क्रिकेटर को बेंच पर बैठाना उनकी शर्मनाक स्थिति में एक कड़ी हो सकती है क्योंकि इस खिलाड़ी ने ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ अपने अंतिम प्रतिस्पर्धी मैच में शतक जड़ा था। दिल्ली और हिमाचल दोनों ने अपने शुरुआती मुकाबले में तीन-तीन अंक हासिल किए थे। कोटला अक्टूबर में रणजी मैचों की मेजबानी कम ही करता है इसलिए पिच सपाट और धीमी रहने की उम्मीद है। उसी तरह रन बनने की उम्मीद है जैसे हैदराबाद में मेजबान टीम के मैच में सनत सांगवान और पदार्पण कर रहे आयुष दोसेजा ने दोहरे शतक लगाए थे। दिल्ली इस मैच में दावेदार के रूप में उतरेगी क्योंकि हिमाचल प्रदेश मजबूत प्रतिद्वंद्वी नहीं है।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के लिए सरफराज को भारत ए की जरूरत नहीं: शार्दुल

मुंबई। मुंबई के कप्तान शार्दुल ठाकुर ने कहा कि सरफराज खान को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने के लिए भारत ए के दौरे या शृंखला की जरूरत नहीं है, क्योंकि मध्यक्रम का यह बल्लेबाज घरेलू क्रिकेट में रन बनाकर भारतीय टेस्ट टीम में वापसी कर सकता है। भारत के लिए 2023-24 में इंग्लैंड के खिलाफ राजकोट टेस्ट में पदार्पण करने वाले सरफराज ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टेस्ट टीम का हिस्सा थे, लेकिन उसके बाद से उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा है। भारत के लिए छह टेस्ट खेल चुके 28 वर्षीय सरफराज को हाल ही में दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ भारत ए की शृंखला के लिए नजरअंदाज किया गया है। सरफराज ने अपना पिछला टेस्ट मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ मुंबई में खेला था। शार्दुल ने रणजी ट्रॉफी ग्रुप डी में छत्तीसगढ़ के खिलाफ घरेलू मैच की पूर्व संध्या पर कहा कि भारत ए टीम में ऐसे खिलाड़ियों पर ध्यान दिया जाता है जिन्हें वे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के लिए तैयार करना चाहते हैं। सरफराज को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने के लिए भारत ए के मैच की जरूरत नहीं है। अगर वह फिर से रन बनाने लगे, तो वह सीधे टेस्ट टीम में शामिल हो सकते हैं। मुंबई के रणजी सत्र के मैच में जम्मू कश्मीर के खिलाफ अच्छी शुरुआत को भुनाने में नाकाम रहे सरफराज़ का शार्दुल ने बचाव करते हुए कहा कि वह चोट के बाद वापसी कर रहे हैं, लेकिन इससे पहले, उन्होंने बुची बाबू ट्रॉफी में चोटिल होने से पहले दो-तीन शतक लगाए थे।

सरफराज खान

शाहबाज की वापसी, बारिश के खतरे के बीच बंगाल की नजरें दूसरी जीत पर

कोलकाता। स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर शाहबाज अहमद की वापसी से उत्साहित बंगाल शनिवार को रणजी ट्रॉफी ग्रुप सी मैच में गुजरात के खिलाफ दूसरी जीत दर्ज करने की कोशिश करेगा। हालांकि चौथे दिन बारिश का खतरा मंडरा रहा है। मौसम विभाग के अनुसार शुक्रवार को दक्षिण-पूर्वी बंगाल की खाड़ी के ऊपर बने निम्न दबाव मंगलवार तक चक्रवाती तूफान में बदल सकता है और कोलकाता में भारी बारिश का अनुमान है। स्पोर्ट्स हर्निया और बंगाल प्रो टी20 लीग के दौरान लगी कंधे की चोट से उबरने के बाद शाहबाज नवंबर 2024 के बाद पहली बार मैदान पर उतरेंगे। वह पिछली बार इंदौर में मध्य प्रदेश के खिलाफ खेले थे। उनके शामिल होने से टीम को संतुलन प्रदान करने की उम्मीद है जिससे बंगाल की बल्लेबाजी को जरूरी गहराई मिलेगी। शाहबाज ने मैच से पहले नेट्स पर लंबे समय तक बल्लेबाजी और गेंदबाजी की। गुजरात के खिलाफ मैच में युवा स्पिन ऑलराउंडर विशाल भाटी की जगह उन्हें अंतिम एकादश में शामिल किए जाने की संभावना है। मुख्य कोच लक्ष्मी रतन शुक्ला ने कहा कि शाहबाज की वापसी से टीम का संतुलन निश्चित रूप से मजबूत होगा। वह गुजरात के खिलाफ अच्छी भूमिका निभा पाएंगे। शाहबाज के आने से बंगाल के तेज गेंदबाजी आक्रमण को मजबूती मिलेगी जिसकी अगुवाई भारत के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी मोहम्मद शमी और आकाश दीप कर रहे हैं। शमी ने पिछले मैच में बंगाल को उत्तराखंड पर आठ विकेट से जीत दिलाई थी। उन्होंने मैच में सात विकेट लिए और आकाश, ईशान पोरेल और सूरज जायसवाल के साथ मिलकर एक मजबूत तेज गेंदबाजी चौकड़ी बनाई। हालांकि पहली पारी में शमी लय में नहीं थे, लेकिन दूसरी पारी में उन्होंने वापसी की और गेंद को स्विंग और रिवर्स स्विंग कराया जिससे बंगाल को छह अंक मिले।

ऑस्ट्रेलिया में संभवत: रोहित-कोहली का अंतिम मैच

गेंदबाजी की पहेली सुलझाकर वनडे सीरीज में क्लीन स्वीप से बचना चाहेगा भारत, लेकिन आंकड़े पक्ष में नहीं

- गंभीर को कप्तान शुभमन गिल और कोहली से बड़ी पारियों की दरकार

सिडनी, एजेंसी

भारत : शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, नितीश कुमार रेड्डी, मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), यशस्वी जयसवाल, कुलदीप यादव, प्रसिद्ध कृष्णा।

ऑस्ट्रेलिया : मिशेल मार्श (कप्तान), जेवियर बार्टलेट, एलेक्स केरी (विकेट कीपर), जोस इंग्लिस (विकेट कीपर), कूपर कोनोली, नाथन एलिस, जोश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जैक एडवर्ड्स, मिशेल ओवेन, जोश फिलिप, मैथ्यू रेनशॉ, मैथ्यू शॉर्ट, मिशेल स्टार्क, एडम ज़म्पा, मैट कुहनेमैन।

-मैच पूर्वाह्न 9 बजे।

कुलदीप यादव की वापसी पर रहेंगी नजरें

सिडनी। पर्थ और एडिलेड में हार झेलने के बाद भारत जब सिडनी में सम्मान बचाने उतरेगा तो बड़ा सवाल ये है कि भारत एकदाश में कोई बदलाव करता है या नहीं। हालांकि पर्थ में मिली हार के बाद भी एडिलेड में भारत ने बदलाव नहीं किया था, लेकिन संभव है कि तीसरे मैच में भारत की प्लेइंग इलेवन में बदलाव दिखे। वहीं, भारत ने दोनों मैचों में कुलदीप यादव का रुख नहीं किया है। इस बात को लेकर चर्चा है कि भारत को कुलदीप के रूप में आक्रामक विकल्प के साथ जाना चाहिए या फिर ऑस्ट्रेलियाई परिस्थितियों को देखते हुए बल्लेबाजी में गहराई सुनिश्चित करना ही बेहतर है। क्या भारत अपने तेज गेंदबाज़ी आक्रमण को भी धार देने की योजना बनाएगा और प्रसिद्ध कृष्णा को अंतिम वनडे के एकादश मे जगह मिलेगी।

स्टार बल्लेबाज विराट कोहली और उनके साथी रोहित शर्मा शनिवार को यहां जब तीसरे और अंतिम वनडे मैच में खेलने के लिए उतरेंगे तो भावनाओं का ज्वार चरम पर हो सकता है क्योंकि यह ऑस्ट्रेलिया की धरती पर इन दोनों का संभवतः अंतिम मैच होगा। रोहित ने दूसरे वनडे में 97 गेंदों पर 73 रन बनाकर कुछ राहत की सांस ली है, लेकिन कोहली दोनों मैच में खाता खोलने में असफल रहे।

यह वनडे क्रिकेट में पहला अवसर है जबकि वह लगातार जो मैच में खाता नहीं खोल पाए। इसने उनके प्रशंसकों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या यह अंत की शुरुआत है। रोहित पहली बार 2007-08 में वन डे शृंखला के लिए यहां आए थे जबकि कोहली का सीनियर टीम के साथ पहला दौरा 2011-12 में था जब उन्होंने एडिलेड में टेस्ट शतक लगाकर अपना प्रभाव छोड़ा था। अगले दो वर्षों में ऑस्ट्रेलिया में कोई वनडे शृंखला नहीं होने से यह सोचना असंभव है कि यह जोड़ी फिर भारत की तरफ से ऑस्ट्रेलिया में खेलेगी। ऑस्ट्रेलिया ने वर्तमान शृंखला के पहले दोनों मैच जीत कर सीरीज अपने नाम कर दी है, लेकिन कोहली और रोहित की मौजूदगी से तीसरा वनडे मैच क्रिकेट प्रेमियों के लिए महत्वपूर्ण बन गया है।

सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर मौजूद दर्शक इन दोनों से अच्छी पारी की उम्मीद करेंगे। यह मैच इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि गौतम गंभीर की कोचिंग वाली भारतीय टीम 0-3 से क्लीन स्वीप से बचना चाहती है, लेकिन आंकड़े भारतीय टीम के पक्ष में नहीं हैं। उसने यहां जो पिछले पांच वनडे मैच खेले हैं उनमें से उसे केवल एक मैच में जीत मिली है।

कप्तान शुभमन गिल और कोहली दोनों से बड़ी पारी दरकार है और गंभीर को अंतिम मैच में दोनों से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी। दो मैचों में पराजित होने वाली भारतीय टीम गेंदबाजी के अपने संसाधनों के साथ समझौता करने की कीमत पर बल्लेबाजी को मजबूत करने की रणनीति पर फिर से विचार करना चाहेगी क्योंकि कुलदीप यादव जैसे मैच विजेता खिलाड़ी को नजरअंदाज करना टीम के लिए अभी तक अच्छा साबित नहीं हुआ है। भारत ने अब तक स्पिन विभाग की जिम्मेदारी अक्षर पटेल और वाशिंगटन सुंदर पर डाली है जो अच्छी बल्लेबाजी भी कर सकते हैं, लेकिन यह दोनों गेंदबाजी में प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं और ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों को उन्हें खेलने में किसी तरह की परेशानी नहीं हुई है। भारत का वर्तमान टीम प्रबंधन ऑलराउंडर को प्राथमिकता देता रहा है लेकिन नीतीश रेड्डी जैसे बल्लेबाज को आठवें नंबर पर उतारना सही रणनीति नहीं लगती है। गेंदबाजी में भी वह प्रभाव छोड़ने में असफल रहे। हर्षित राणा के मामले में, दूसरे और तीसरे स्पैल में उनकी गति में आई उल्लेखनीय गिरावट इस बात का प्रमाण है कि वह अभी अंतरार्ष्ट्रीय क्रिकेट के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हैं। उनकी जगह पर प्रसिद्ध कृष्णा को अंतिम एकादश में शामिल किया जाना चाहिए। जहां तक ऑस्ट्रेलियाई टीम का सवाल है, तो उसने 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप के लिए तैयारी शुरू कर दी है। मैथ्यू शॉर्ट, मिशेल ओवेन और कूपर कोनोली जैसे खिलाड़ियों ने दबाव वाली परिस्थितियों में सही रणनीति तैयार करने और उस पर अमल करने के अपने कौशल का परिचय दिया है। ऑस्ट्रेलिया इस मैच के लिए मैट कुहनेमैन को अंतिम एकादश में शामिल कर सकता है जिन्होंने पहले मैच में अच्छी गेंदबाजी की थी।

भारत में होने वाले जूनियर हॉकी विश्व कप से हटा पाकिस्तान

नई दिल्ली, एजेंसी

पाकिस्तान ने नवंबर-दिसंबर में भारत में होने वाले जूनियर हॉकी विश्व कप से नाम वापस ले लिया है। अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने इसकी पुष्टि की। एफआईएच ने कहा कि 28 नवंबर से 28 दिसंबर तक चेन्नई और मदुरै में होने वाले टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान की जगह लेने वाली टीम की घोषणा जल्द ही की जाएगी।

एफआईएच ने कहा कि पाकिस्तान हॉकी महासंघ ने एफआईएच को सूचित किया कि उनकी टीम भारत के तमिलनाडु में होने वाले हॉकी पुरुष जूनियर विश्व कप में भाग नहीं लेगी। पाकिस्तान ने इस टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया था। इस प्रतियोगिता के लिए पाकिस्तान की जगह लेने वाली टीम की घोषणा जल्द होगी। पाकिस्तान को ग्रुप बी में भारत, चिली और स्विट्जरलैंड के साथ रखा गया है और यह देखना बाकी है कि कौन सी टीम उनकी जगह लेती है। यह भारत में होने वाला दूसरा टूर्नामेंट है, जिसमें पाकिस्तान ने भाग नहीं लेने का फैसला किया है। इससे पहले वह इस वर्ष 29 अगस्त से सात सितम्बर तक बिहार के राजगीर में खेले गए पुरुष एशिया कप से भी हट गया था। पहलगाम हमले और भारत द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के रूप में की कार्रवाई से दोनों देशों के बीच खेल संबंध प्रभावित हैं। भारत ने हाल ही में नई नीति की घोषणा की, जिसके तहत वह पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय खेल प्रतियोगिताओं में भाग नहीं लेगा, लेकिन बहु-राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में उसके साथ प्रतिस्पर्धा करना जारी रखेगा। एशिया कप टी-20 टूर्नामेंट में कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पाकिस्तानी कप्तान से हाथ मिलाने से मना कर दिया था।

- एफआईएच बोला- चेन्नई और मदुरै में होने वाले टूर्नामेंट के लिए नई टीम की घोषणा जल्द

हॉकी इंडिया को घटना की जानकारी नहीं

हॉकी इंडिया ने कहा कि उसे पाकिस्तान के हटने के बारे में कोई जानकारी नहीं है। हॉकी इंडिया के महासचिव भोलानाथ सिंह ने कहा, हमें एफआईएच से कोई सूचना नहीं मिली कि पाकिस्तान ने नाम वापस ले लिया है। मैंने डेढ़ महीने पहले पाकिस्तान हॉकी महासंघ के अधिकारियों से बात की थी और उन्होंने भागीदारी की पुष्टि की थी। इसके बाद क्या हुआ, मुझे जानकारी नहीं है। हमारा कर्तव्य मेज़बान होने के नाते सर्वश्रेष्ठ टूर्नामेंट आयोजित करना है और उम्मीद है कि भारत ख़िताब जीतेगा। पाकिस्तान के स्थान पर किसी टीम की घोषणा करना एफ़आईएच पर निर्भर है।

बारिश से श्रीलंका-पाकिस्तान मैच रद्द

कोलंबो, एजेंसी

श्रीलंका और पाकिस्तान के बीच शुक्रवार को आईसीसी महिला विश्व कप मैच बारिश से रद्द कर दिया गया। इस मैदान पर 11 में यह पांचवां मैच है जो बारिश से बिना किसी नतीजे के समाप्त हुआ है, जिससे टूर्नामेंट की योजना पर सवाल उठ रहे हैं।

बारिश रुकने के बाद टॉस हुआ और पाकिस्तान ने 4.2 ओवर में बिना विकेट गंवाए 18 रन बनाए थे। इसके बाद फिर बारिश आ गई। इससे पहले बारिश से टॉस में तीन घंटे से ज्यादा की देरी के बाद मैच 34-34 ओवर का हुआ था। इस समय पूर्वोत्तर मानसून इस क्षेत्र में दस्तक देता है, फिर भी आयोजक तय कार्यक्रम के अनुसार चले। रद्द हुए मैचों ने श्रीलंका की सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदों को प्रभावित किया क्योंकि मेजबान टीम एक जीत, तीन हार और बारिश से तीन रद्द मैचों से पांच अंक लेकर आठ टीमों की तालिका में पांचवें स्थान पर रही। पाकिस्तान ने सात मैचों में बिना किसी जीत के अभियान का अंत किया। उसं चार मैच में हार और तीन बेनतीजा रहे। टॉस में तीन घंटे से ज्यादा की देरी हुई क्योंकि तेज हवाओं और बार-बार पिच के निरीक्षण के बीच मैदानकर्मी कवर्स लेकर इधर-उधर भागते रहे। लेकिन अंपायरों को संतुष्ट करने में नाकाम रहे। खिलाड़ी बारिश रुकने की उम्मीद करते रहे लेकिन अधिकारियों को रात 8.10 बजे मैच रद्द करना पड़ा। इस ग्रुप मैच में सभी की निगाहें श्रीलंकाई कप्तान चामरी अटापट्टू पर थीं। यह इस खिलाड़ी का आखिरी वनडे विश्व कप माना जा रहा था। हालांकि अगर यह अंत था तो यह श्रीलंकाई खिलाड़ी भारी मन से मैदान से विदा होंगी। भारत से चल रहे तनाव से पाकिस्तान के सभी मैच यहां खेले जा रहे हैं। मैच रद्द करने से पहले दोनों मैदानी अंपायरों ने क्यूरेटर और चौथे अंपायर से बात की और फिर मैदान से चले गए।

लक्ष्य, दीक्षा, शाइना एशिया अंडर-17-15 के क्वार्टर फाइनल में

चेंगदू (चीन)। भारत की लक्ष्य राजेश, दीक्षा सुधाकर और शाइना मणिमुथु ने बैडमिंटन एशिया अंडर-17 और 15 चैंपियनशिप के लड़कियों के क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की की। दीक्षा ने चीनी ताइपे की पिन हुआन चियांग को हराकर अंडर-17 के अंतिम आठ में प्रवेश किया। लक्ष्य ने कोरिया की ली युन सेओ को हराकर अंडर-17 क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। शाइना ने अंडर-15 प्री-क्वार्टर फाइनल में दबदबा कायम करते हुए चीन की ली मान लिन को हराया। अदिति दीपक राज और बीवी पोन्नम्मा वृद्धि ने लड़कियों के युगल वर्ग में शुरुआती गेम गंवाने के बाद कोरिया की ली युन सेओ और पार्क यू जियोंग की जोड़ी को मात दी। चरण राम थिप्पाना और हरि कृष्ण वीरमरेड्डी ने लड़कों के युगल वर्ग में जापान के कोसुके शिनोहारा और हिरोतो नाकात्सुका पर प्रभावशाली जीत दर्ज की।

उत्साह | मंधाना और रावल की जोड़ी ने 23 पारियों में 1,799 रन बनाए

मंधाना गणना में माहिर, हमारे बीच सहज बातचीत : रावल

नवी मुंबई, एजेंसी

भारत की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और प्रतीका रावल को एक साथ आए हुए एक साल भी नहीं हुआ है, लेकिन उन्होंने शीर्ष क्रम में बेहद सफल जोड़ी बनाई है। इन दोनों ने गुरुवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ शतक जड़कर पहले विकेट के लिए 212 रन की रिकार्ड साझेदारी की जिससे भारत ने मैच डकवर्थ लुईस पद्धति से 53 रन से जीत कर महिला वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

पिछले वर्ष दिसंबर में जोड़ी बनाने के बाद से यह उनकी सातवीं तथा 2025 में पांचवीं शतकीय साझेदारी थी। मंधाना के 95 गेंदों में 105 रन और रावल के 134 गेंदों में 122 रन की बदौलत भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए तीन विकेट पर 340 रन का स्कोर बनाया जो इस विश्व कप में किसी भी टीम का सर्वोच्च स्कोर है।

इस जोड़ी ने 23 पारियों में 1,799 रन जोड़े हैं। रावल ने कहा कि उन दोनों के बीच अच्छी समझ है जिससे वह बड़ी साझेदारी निभाने में सफल रही हैं। रावल ने कहा कि हमारे बीच सहज बातचीत होती है। वह मुझे वह करने देती हैं जो मेरा मजबूत पक्ष है और मैं उसमें हस्तक्षेप नहीं करती जिसमें वह सर्वश्रेष्ठ हैं। जब हम बल्लेबाजी करते हैं तो पूरी बातचीत गणना पर आधारित होती है। हमें बड़ा स्कोर बनाने के लिए कितने रन बनाने होंगे। अगर हम लक्ष्य का पीछा कर रहे होते हैं तो हमारी बातचीत इस पर आधारित होती है ताकि हम आसानी से लक्ष्य का पीछा कर सकें। वह गणना करने में बहुत अच्छी है और वह जो भी मुझसे कहती है, मैं उसमें शामिल होना पसंद करती हूं। हम दोनों को सहजता के साथ आगे बढ़ना पसंद है। रावल ने जेमिमा रोड्रिग्स की अपने घरेलू मैदान पर 55 गेंदों पर नाबाद 76 रन की पारी पर कहा कि उसने वो रन बनाए जिनकी हमें ज़रूरत थी। तीन मैच हारने के बावजूद टीम के प्रयास में कमी नहीं थी। रावल ने कहा कि विकेटकीपर बल्लेबाज ऋचा घोष की उंगली की चोट गंभीर नहीं है।

क्रिकेट में अग्रणी बन सकता है भारत : डिवाइन

नवी मुंबई। न्यूजीलैंड की कप्तान सोफी डिवाइन ने भारत से मिली हार के बाद कहा कि महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) को कैलेंडर में जगह मिलने से भविष्य में भारत महिला क्रिकेट में अग्रणी देश बन सकता है। अपने पांचवें विश्व कप में न्यूजीलैंड की कप्तानी करने वाली डिवाइन रविवार को वनडे से संन्यास ले लेंगी, क्योंकि उनकी टीम गुरुवार को भारत से हार के साथ सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो गई। न्यूजीलैंड में घरेलू क्रिकेट में सुधार पर उन्होंने कहा कि हमें यथार्थवादी होना होगा कि ये चीजें रातोंरात नहीं होतीं। हम भारत की तरह नहीं हैं। हम सबसे निचले पायदान पर स्थित छोटा सा देश हैं, जिसकी आबादी पांच करोड़ है। भारत में जिस तरह से घरेलू क्रिकेट पर काम हो रहा है वह न्यूजीलैंड में हमारे काम करने के तरीके से भिन्न है।